यशायाह

यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक

1 यहूदा के सभी राजाओं उज्जियाह
योताम, आहाज़ और हिजिक्कियाह के
शासनकाल में यहूदा और यरूशलेम के बारे
में ये दर्शन यशायाह को मिले। 2 हे आकाश
और पृथ्वी सुनो! प्रभु यह कहते हैं“जिन
बच्चों को मैंने संभाला और परवरिश की,
वे ही अब मेरे खिलाफ़ हो गए हैं। 3 देखा
जाए तो जानवर - गधा और बैल अपने
मालिक को पहचानते और उनकी देखभाल
के लिए शुक्रगुज़ार होते हैं, लेकिन मेरे लोग
(इस्राएली) ऐसा नहीं करते । चाहे मैं उनके
लिए कुछ भी क्यों न करूँ, वे समझते ही
नहीं। 4 ओह, ये देश कितना बुरा है। वे
बुराई से लदे हुए हैं। वे भ्रष्ट और बुरे हैं,
ये लड़केबाले कैसे बिगड़े हुए हैं! उन्होंने
इस्राएल के पवित्र की कीमत नहीं जानी।
उन्होंने अपने आप को उनकी मदद से अलग
कर लिया है. 5 तुम लगातार सज़ा को क्यों
अपने लिये बुला रहे हो? क्या तुम हमेशा
ज़िद्दी बने रहोगे ? तुम्हारे सिर पर घाव हैं
और मन बीमार है। 6 सिर से पैर तक तुम
बीमार हो।सड़े घाव और चोटें ही चोटें हैं-
उस में न ही मरहम लगाया गया और न ही
पट्टी बान्धी गई। 7 तुम्हारा देश खण्डहर पड़ा
है। तुम्हारे शहर जलाए जा चुके हैं। तुम्हारे
देखते देखते विदेशी लोग तुम्हारे खेतों को
लूटते और जो कुछ दिखता है नाश कर
डालते हैं। 8 किसी अंगूर के बगीचे और
खेत में फसल काटे जाने के बाद जिस तरह
चौकीदार की कुटिया का हाल होता है, उसी
तरह, यरूशलेम बेकार ठहराया जा चुका है।
इसका हाल बिल्कुल ऐसा है जैसा घेरे हुए
शहर का होता है। 9 यदि परमेश्वर ने हम में
से कुछ को बचाकर न रखा होता, तो हम
सदोम और अमोरा की तरह पूरी तरह से
मिटा दिए जाते । 10 इस्राएल के अगुवो, प्रभु
की बातों पर कान लगाओ। हमारे परमेश्वर
के नियम -आज्ञाओं को ध्यान से सुनो। तुम
सदोम अमोरा के अगुवों की तरह जी रहे
हो। 11 मैं तुम्हारी कुर्बानियों से थक चुका
हूँ, प्रभु कहते हैं, मुझे और कुर्बानियों की
ज़रूरत नहीं है मैं उनकी चर्बी और खून से
खुश नहीं हूँ। 12 बेकार की बलियों को तुम मेरे
सामने क्यों लाते हो ? 13 जो धूप तुम मेरे लिये
जलाते हो, वह मेरी नाक में बदबू की तरह है।
सब्त, पूर्णमासी और नए चाँद के दिन और
दूसरे विशेष उपवास के दिन। 14 मैं तुम्हारे,
त्यौहारों और कुर्बानियों से नफ़रत करता हूँ।
मैं उन्हें देख नहीं सकता। 15 आज के बाद
जब कभी तुम मेरी तरफ़ हाथों को फैलाओगे
और बहुत प्रार्थना करोगे, मैं अपना चेहरा
मोड़ लूँगा क्योंकि अबोध और सीधे लोगों के
खून से तुम्हारे हाथ सने हैं। 16 अपने आप को
धो कर साफ करो, ताकि मैं तुम्हारे बुरे कामों
को न देखूँ। 17 भला करना सीखो। इन्साफ
की चाहत रखो। कुचले हुए लोगों की मदद
करो। अनाथ का न्याय चुकाओ। विधवा के
हक के लिये लड़ो। 18 प्रभु कहते हैं, आओ
हम बातचीत करें, तुम्हारे अपराधों के दाग
कितने ही गहरे क्यों न हों, मैं उन्हें हटा सकता
हूँ। बर्फ की तरह सफेद मैं तुम्हें बना सकता
हूँ। चाहे तुम्हारे ऊपर लाल धब्बे भी क्यों न

हों, मैं तुम्हें ऊन की तरह सफेद कर सकता हूँ। 19 यदि तुम मेरी बातें मानो और मुझे मौका दो कि मैं तुम्हारी मदद करूँ, तब तुम्हारे पास खाने के लिए भरपूर होगा। 20 लेकिन यदि तुम परमेश्वर की सुनने से इन्कार करोगे, तो तुम को तुम्हारे दुश्मन बर्बाद कर डालेंगे।
21 यरूशलेम जो सच्चाई पर चलता था, अभी दूसरे देवी देवताओं के पीछे चलने लगा है। एक समय था यरूशलेम में इन्साफ और सत्य पाया जाता था, अब उसमें हत्यारे हैं।
22 एक समय वह शुद्ध चाँदी की तरह था, लेकिन अभी बेकार चीज़ बन गया है। एक समय तुम शुद्ध थे, अभी जाली दाख मधु की तरह हो। 23 तुम अगुवे जिद्दी बन गए हो और चोरों के दोस्त हो । सभी घूस लेते हैं और विधवा -अनाथ की मदद नहीं करते हैं। 24 इसलिये इस्राएल के सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहते हैं "तुम मेरे दुश्मन हो और तुम को मैं सज़ा दूँगा। 25 मैं तुम्हारा विरोध करूँगा मैं तुम्हें पिघलाकर तुम्हारी गंदगी दूर करूँगा।
26 इसके बाद मैं तुम्हें ऐसे अच्छे जज और परामर्शदाता दूँगा, जैसे पहले हुआ करते थे। तब यरूशलेम एक बार फिर से इन्साफ का घर और विश्वासयोग्य शहर कहलाएगा।
27 इसलिए कि प्रभु सच्चे और ईमानदार हैं, यरूशलेम के जो लोग मन बदलेंगे, वे बचाए जाएँगे। 28 लेकिन सभी बलवा करने वाले बर्बाद हो जाएँगे, क्योंकि वे प्रभु की समीपता में नहीं आना चाहते हैं। 29 जिन बांजवृक्ष की तुम चाहत रखते थे, उन से शर्मिन्दा हो जाओगे। जिन बगीचों को तुमने चुना था, उन्हीं के कारण तुम घबरा जाओगे। 30 बिना पानी के देवदार या बगीचे की तरह तुम मुर्झा जाओगे। 31 तुम में जो ताकतवर है वह जले हुए भूसे की तरह गायब हो जाएगा। तुम्हारे बुरे काम एक चिंगारी की तरह हैं जो भूसे को आग से जला देंगे और उसे कोई भी बुझा न पाएगा।

2 यह दूसरा दर्शन है, जिसे आमोस के बेटे यशायाह ने देखा था। यह यहूदा और यरूशलेम के बारे में था। 2 आखिरी समय में यरूशलेम के मन्दिर की खास अहमियत होगी। दुनिया के कोने-कोने से लोग वहाँ जाकर उपासना करेंगे। 3 तमाम देश आकर कहेंगे, "चलो परमेश्वर के पहाड़ पर चलें। वहाँ पर हमें वह सही रास्ता दिखाएँगे, ताकि हम उनकी सुनकर करें। उन दिनों उनकी शिक्षा यरूशलेम से बाहर जाएगी। 4 प्रभु तमाम देशों के बीच होने वाले मतभेद को सुलझाएँगे। सभी देश अपनी तलवारों की पीट कर हल और भालों को हसिया बनाएँगे। युद्ध खतम हो जाएँगे। मिलिट्री की शिक्षा देना बन्द हो जाएगी। 5 आओ, इस्राएलियो, प्रभु की रोशनी में चलो।
6 प्रभु ने इस्राएल को इसलिए छोड़ दिया है क्योंकि उन्होंने दूसरे देशों से सन्धि कर ली है। ये लोग पूर्व के हैं और फिलिस्तियों की तरह जादू-टोना करते हैं। 7 इस्राएल के पास बहुत चाँदी-सोना, घोड़े और रथ हैं। देश मूर्तियों से भरा है। 8 ये लोग अपने हाथ की बनाई चीज़ो की पूजा करते हैं। 9 इसलिऐ हर एक नीचा किया जाएगा। प्रभु उनके अपराधों को नज़रअन्दाज नहीं करेंगे। 10 चट्टानों की गुफाओं में छिप जाओ। परमेश्वर के गुस्से और महिमा से छिप जाओ।
11 एक समय आएगा जब तुम्हारा घमण्ड तोड़ा जाएगा और केवल प्रभु ही सम्मान पाएँगे। 12 उस समय प्रभु घमण्डी को सज़ा देंगे और मिट्टी में मिला देंगे। 13 वह लबानोन के ऊँचे देवदारों को काट डालेंगे और बाशान के बांजवृक्ष भी। 14 वह ऊँचे पहाड़ों और पहाड़ियों को समतल कर डालेंगे। 15 वह हर एक ऊँचे बुर्ज और दीवार को तोड़

डालेंगे। 16 वह सामरिक जहाजों और सभी
छोटी नावों को बर्बाद करेंगे। 17 सब लोगों के
घमण्ड को वह तोड़ डालेंगे। उनका घमण्ड
तोड़ा डाला जाएगा। प्रभु की फिर से प्रतिष्ठा
होगी। 18 मूरतें हमेशा के लिए खतम हो
जाएँगी। 19 जब प्रभु इस पृथ्वी को हिलाने के
लिए उठेंगे, उनके शत्रु डर के कारण गुफाओं
में घुस जाएँगे। 20 वे लोग अपने सोने और
चाँदी की मूरतों को चमगादड़ और छछूंदरों
के सामने फेंक देंगे। 21 वे लोग रेंगते हुए
गड्ढों और चट्टानों में छुप जाएँगे। इस तरह वे
परमेश्वर की सज़ा से बचना चाहेंगे। 22 इन्सान
पर भरोसा रखना छोड़ दो। वे लोग सांस की
तरह हैं। वे किसी की मदद कैसे कर सकते
हैं?

3 प्रभु सर्वशक्तिमान, यरूशलेम और
यहूदा से सारे खाने की चीज़ों और
पानी की पूर्ति को रोकेंगे। 2 वह सभी देशों
के नेताओं को नष्ट करेंगे - उनके जज,
सिपाही, भविष्यद्वक्ता, भविष्य बताने वाले
सभी को। 3 फ़ौज के अफसर, माननीय
नागरिक सलाहकार, निपुण जादूगर और
जादू-टोने वाले। 4 इसके बाद वह बच्चों को
उनके ऊपर शासन करने के लिए ठहराएँगे।
सब जगह अराजकता फैल जाएगी। 5 लोग
एक दूसरे का फ़ायदा स्वार्थी कारणों से
उठाएँगे। पड़ोसी -पड़ोसी से लड़ाई करेगा।
नवजवान लोग अधिकरियों के खिलाफ़
बगावत करेंगे। 6 उन दिनों में एक व्यक्ति
अपने भाई से कहेगा, “इसलिए कि तुम्हारे
पास चोगा है, तुम हमारे अगुवा बन जाओ।
इस उजड़े देश के अधिकारी बन जाओ।”
7 “नही” वह उत्तर देगा। मेरे पास ज़्यादा
खाना-पीना है। मैं किसी तरह से उन बातों में
नहीं पड़ना चाहता। 8 यहूदा और यरूशलेम
खण्डहर की तरह पड़े रहेंगे। क्योंकि उन्होंने
प्रभु के खिलाफ़ बोला है और वे उनकी
बात सुनते नहीं है। उन्होंने प्रभु के दिल
को दुखाया है। 9 उनके चेहरे के हाव-भाव
दिखाते हैं कि उनका मन गलत करने के
कारण कचोटता है। सदोम के लोगों की
तरह वे खुल्लम खुल्ला अपराध करते हैं। उन्हें
तनिक भी लज्जा नहीं है। उनके लिए परिणाम
कितना भयंकर होगा! अपनी इस बर्बादी
के लिए वे खुद ज़िम्मेदार हैं। 10 लेकिन जो
लोग परमेश्वर के भय में जीते हैं, उनका भला
होगा। उनसे कहो,“तुम्हें अच्छा प्रतिफल
(बदला) मिलेगा। 11 लेकिन दुष्ट से कहो,
“तुम अवश्य बर्बाद होगे। तुम्हारे साथ जैसा
होना चाहिए, होगा। 12 मेरे लोगों पर बच्चे
दबाव बनाए रखते हैं और महिलाएँ उन
पर शासन करती हैं। मेरे लोगो, क्या तुम
देख नहीं सकते कि तुम्हारे शासक कितने
बेवकूफ हैं ? वे तुम्हें तुम्हें खूबसूरत रास्ते
से विनाश की ओर ले जाते हैं। 13 प्रभु
विराजमान हैं। वह एक अपने लोगों के
खिलाफ़ मुकदमा दायर करते हैं। 14 अगुवे
और राजकुमार सबसे पहले सज़ा पाएँगे।
उन्होंने दाख की बारी (इस्राएल) को नष्ट
किया है। तुमने गरीबों को लूटा है। असहाय
लोगों से अनाज लूट कर तुमने अपने भण्डारों
को भर लिया है। 15 मिट्टी की तरह मेरे
लोगों को पीसने की हिम्मत तुमने कैसे की
? 16 परमेश्वर यरूशलेम की महिलाओं को
सज़ा देंगे। ये महिलाएँ अपनी नाक में नथनी
पहनती हैं और पैरों में चमकते गहने पहनती
हैं। वे लोगों के बीच आँख मटकाते घूमती
रहती हैं। 17 परमेश्वर एक खाल की बीमारी
उनके बीच भेजेंगे, जो सिर का गहना होगी।
उनके सिर के सारे बाल गायब हो जाएँगे।
18 प्रभु उनकी खूबसूरती -गहनें , सिर का
गहना और चंद्रहार उतार डालेंगे। 19 कान की

बालियाँ, हाथ के कंगन और पारदर्शी घूँघट। 20 पगड़ियों, पौकरियों, पटुकों,कुशबू के
बर्तनों,गण्डों, 21 अंगूठियों, नथों, 22 सुन्दर
कपड़ों, कुर्तियों, चद्दरों, बटुओं, 23 दर्पणों,
मलमल के कपड़ों, बुन्दियों, दुपट्टों आदि
की खूबसूरती को बर्बाद कर देंगे। 24 तब
खुशबू की जगह बदबू और करधनी की
जगह रस्सी दिखेगी, खूबसूरत बालों की
जगह गंजापन, सुन्दर कपड़ों की टाट तथा
खूबसूरती की जगह दागे जाने के निशान
होंगे 25 तुम्हारे आदमी लोग तलवार से और
बहादुर लोग युद्ध में नाश हो जाएँगे 26 उनके
प्रवेश दरवाजे रोएंगे और वह उजाड़ होकर
ज़मीन पर बैठी रहेगी

4 उस दिन सात औरतें एक आदमी से
कहेंगी, “हम सभी तुम से शादी करेंगे।
हम खुद खाने, पहने का खर्चा उठाएँगे। हम
केवल तुम्हारे नाम से पहचानी जाएँ, ताकि
बूढ़ी महिलाएँ हमारा मखौल न उड़ाएँ।”
2 लेकिन आने वाले समयों में, प्रभु की
डाली-हरी भरी और सुन्दर होगी। ज़मीन की
उपज पर लोग घमण्ड कर सकेंगे। 3 वे सभी
जिनके नाम लिखे हुए हैं और यरूशलेम
के नाश के बाद बच गए हैं, प्रभु के लिए
अलग किए हुए लोग होंगे। 4 यरूशलेम की
महिलाओं की अशुद्धता को दूर करेंगे। वह
एक न्याय को जो आग की तरह है, यरूशलेम
के खूनी धब्बों को मिटा डालेंगे। 5 तब प्रभु
यरूशलेम के लिए और जो लोग इकट्ठा होते
हैं, उनके लिए छाया मुहैय्या कराएँगे। देश में
धुएँ और बादल की छतरी दिन में और रात
में आग का बादल छाया रहेगा। 6 वह दिन
को धूप से बचाने के लिए और आँधी- पानी
और झड़ी में एक शरण और आड़ होगा।

5 मैं जिससे प्रेम रखता हूँ उसकी दाखलता
के बारे में गीत गाऊँगा मेरे प्रिय के
पास दाखलता है और वह एक उपजाऊ
पहाड़ी पर है। 2 उसने ज़मीन को जोता, सारे
पत्थर निकाल फेंके और बढ़िया प्रकार के
अंगूर बोए। उसने बीच में एक गुम्मट बनाया
और निकट की चट्टानों में एक चक्की बनायी।
तब वह एक अच्छे अंगूर की फसल की
कामना करने लगा। लेकिन ये अंगूर जंगली
और खट्टे थे। 3 अब तुम यरूशलेम और
यहूदा के लोगो, तुमने सब कुछ सुना है,
तुम जज बन जाओ। 4 एक अच्छी फसल
के लिए मैं और क्या कर सकता था ?
मेरे बगीचे से मुझे जंगली अंगूर क्यों मिले,
जबकि मैं मीठे अंगूर की आशा कर रहा
था। 5 मैं अपने अंगूर के बगीचे की बारी
को तोड़ डालूँगा और जानवरों द्वारा बर्बाद
होने के लिए छोड़ दूँगा। 6 मैं उसे उजाड़
दूँगा। उसे न छाँटा जाएगा, न ही वहाँ गुड़ाई
होगी।उसमें झाड़ियाँ और काँटे उगेंगे। मैं
बादलों को आज्ञा दूँगा कि वे पानी न बरसाएँ।
7 इस्राएल प्रभु का अंगूर का बगीचा है
और घराना।यहूदा के लोग उसके मनपसन्द
पौधे। उन्होंने इन्साफ़ चाहा था, लेकिन
खून-खराबा देखने को मिला, धार्मिकता को
देखना चाहा था लेकिन रोना चिल्लाना ही
सुना। 8 हाय उन पर जो घर और खेत बढ़ाते
जाते हैं 9 लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने
तुम्हारे भविष्य को तय कर लिया है। मैंने
अपने कानों से उन्हें कहते सुना है, बहुत से
अच्छे परिवार नष्ट हो जाएँगे, मालिक मर
जाएँगे। 10 दस बीघे की अंगूर की खेती करने
के बावजूद दाखरस न मिल सकेगा। होमेर
भर बीज बोने के बाद सिर्फ एक ही एपा
अनाज मिल सकेगा। 11 तुम जो बहुत सवेरे
उठ कर पीना शुरू करते हो और देर रात
तक पीते रहते हो। 12 तुम अपनी सभाओं में
मधुर संगीत और शराब इस्तेमाल करते हो।

वीणा खंजड़ी, बांसुरी और दूसरे संगीत वाद्य बड़े उत्तम दर्जे के हैं। लेकिन तुम न ही प्रभु के बारे में कभी सोचते हो या उनके कामों पर ध्यान करते हो। 13 इसलिए मैं अपने लोगों को गुलामी में बहुत दूर ले जाऊँगा, क्योंकि उन्होंने मुझे न जाना है, न पहचाना। उनमें जो मशहूर हैं और आदरणीय, वे भूखे मरेंगे और साधारण लोग प्यासे। 14 इसलिये अधोलोक ने अपना मुँह पसारा है। यरुशलेम की शान, उसकी आनन्द मनाती भीड़ तथा दूसरे लोग उसी में उतर जाते हैं 15 उस दिन घमण्डी लोग मिट्टी में मिलाए जाएँगे वे लोग शर्मिन्दा होंगे। 16 लेकिन परमेश्वर अपने न्याय के कारण इज्ज़त पाएँगे। उनकी पवित्रता उनके व्यवहार में दिखाई देगी। 17 उन दिनों में मवेशियों के झुण्ड, मेम्ने तथा उनके बच्चे वहीं खण्डहरों में चरेंगे। 18 जो लोग अपने अपराधों को झूठ की रस्सियों से अपने पीछे घसीटते रहते हैं, वे ज़रूर बर्बाद होंगे। 19 इस्राएल के पवित्र की हँसी उड़ाते हुए वे कहते थे,"जल्दी, जल्दी कुछ कीजिए। आप जो कर सकते हैं करके दिखाईए। हम जानना चाहते हैं कि आपकी योजना क्या है।" 20 वे लोग भी नाश होंगे, जो कहते है बुराई अच्छी है और अच्छाई बुरी है, यह भी कि अंधेरा रोशनी हैं और रोशनी अन्धेरा है। या कड़वापन मीठा है। और मीठापन कड़वा है। 21 जो लोग सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं या चालक , वे भी नष्ट हो जाएँगे। 22 जहाँ तक शराब पीने की बात है, जो अपने आप को हीरो समझते हैं वे भी खतम हो जाएँगे। 23 रिश्वत लेकर वे न्याय नहीं करते, वे अपराधी को छोड़ देते है और बेगुनाह को सज़ा सुनाते हैं। 24 इसलिए वे सभी जलते भूसे के समान हो जाएँगे। उनकी जड़ें सड़ जाएँगी और फल मुरझा जाएँगे, क्योंकि उन्होंने शक्तिशाली प्रभु की अनसुनी की। उन्होंने परमेश्वर की बातों को तुच्छ समझा है। 25 इसलिए परमेश्वर का गुस्सा भड़क गया है। इसलिए उन्होंने उन लोगों को कुचलने के लिए अपना हाथ बढ़ाया है। पहाड़ियाँ काँप उठी हैं और उनके लोगो की सड़ती लाशें सड़कों पर कचरे की तरह फेंकी गई हैं। इसके बावजूद प्रभु का गुस्सा शान्त न हुआ। वह सज़ा देने के लिए तैयार हैं। 26 दूर के देशों को वह सीटी से इशारा करेंगे और वे यरूशलेम की तरफ दौड़े चले आएँगे। 27 वे न ही थकेंगे और न ही ठोकर खाएँगे। बिना रूके और सोए वे दौड़ते जाएँगे। कोई भी अपनी पेटी ढीली न करेगा, न किसी की चप्पल टूटेगी। 28 उनके तीर पैने होंगे और धनुष युद्ध के लिए तैयार । उनके घोड़ों के खुरों से चिंगारी निकलती है।, जब उनके रथों के पहिए हवा की तरह घूमते हैं। 29 शेर की तरह दहाड़ते हुए वे अपने शिकार पर टूट पड़ते हैं। वे मेरे लोगों को बन्दी बनाकर गुलामी में ले जाएँगे। वहाँ पर उन्हें कोई छुड़ा न सकेगा। 30 फिर शत्रु देश उन पर गुर्राएँगे, ठीक उसी तरह जिस तरह समुद्र गरजता है। इस्राएल के ऊपर अन्धेरे और दुख का बादल छाएगा। ये बादल, रोशनी को मिटा देंगे।

6 जिस साल उजिय्याह राजा का देहान्त हुआ, मैंने प्रभु को देखा। वह एक राजासन पर विराजमान थे। तभी मन्दिर उनके कपड़ों के घेरे से भर गया। 2 उनके चारों ओर शक्तिशाली सराफीम थे। हर एक के छै पंख थे। दो पंखो से वे अपने चेहरे को ढाँके हुए थे। दो से अपने पैरों को ढाँके हुए थे और दो से वे उड़ते थे। 3 वे एक गीत गा रहे थे, जिसके शब्द इस तरह थे, पवित्र, पवित्र, पवित्र परमेश्वर सामर्थी हैं। सारी पृथ्वी उनकी महिमा से भरी है। 4 इस

गीत से पूरा मन्दिर हिल गया और पूरी जगह
धुएँ से भर गई। 5 तब मैंने कहा,“अब तो
मेरा नाश तय है, क्योंकि मैं अपराधी हूँ और
अपराध करने वालों के बीच रहता हूँ फिर
भी मैंने सर्वशक्तिमान प्रभु को देख लिया है।”
6 तब एक सराफीम वेदी के ऊपर उड़ा और
उसने जलते हुए कोयले को चिमटे से उठाया।
7 उसने इस को मेरे ओठों से छुआ और
कहा,“देखो, इस कोयले से तुम्हारे ओठ छुए
गए हैं। अब जो आरोप तुम पर था वह दूर
किया गया है।” 8 तब मैंने प्रभु को यह कहते
सुना, “अपने लोगों के पास सन्देश भेजने के
लिए मैं किस को भेजूँ। हमारा यह काम कौन
करेगा ?” तब मैं बोल उठा,“प्रभु मुझे भेजिए,
मैं जाऊँगा। 9 तब प्रभु बोले, “ठीक है तुम
जाओ। तुम मेरे लोगो से कहना, कि वे लोग
मेरी बातों को सुनेंगे, लेकिन समझेंगे नहीं।
वे लोग मेरे कामों को देखेंगे, लेकिन उसका
मतलब नहीं समझेंगे। 10 इन लोगों के मनों
को कठोर कर दो। उनके कानों को बन्द कर
दो और उनकी आँखों को भी। तब वे अपनी
आँखों से देख न सकेंगे, कानों से सुन न पाएँगे
वे न ही अपने मनों से समझ पाएँगे, ताकि वे
ठीक(स्वस्थ) हो सकें। 11 तब मैं बोल उठा,
“प्रभु, मुझे यह काम कब तक करना है?”
वह बोले कि जब तक उनके शहर बर्बाद न
हो जाएँ और वहाँ एक व्यक्ति भी न बचे। जब
तक उनके घर नष्ट न हो जाएँ और पूरा देश
खण्डहर न हो जाए। 12 तुम तब खामोश मत
होना, जब तक प्रभु सब को दूर देशों तक न
पहुँचा दें और पूरा इस्राएल खाली न हो जाए।
13 चाहे कुछ लोग ही बचें, फिर से उन पर
हमला होगा और जलाया जाएगा। इस्राएल
एक खूँटे की तरह रह जाएगा। जिस तरह से
एक पेड़ काट डाला जाता है और उसका ठूँठ
रह जाता है।

7 आहाज राजा के समय में, जो कि योताम
का बेटा और उजिय्याह का पोता था,
आराम के राजा रेसीन और इस्राएल के राजा
पेकाह ने जो रमल्याह का बेटा था, यरूशलेम
पर हमला किया। फिर भी शहर बच गया
और उस पर कब्ज़ा न हुआ। 2 राजमहल
में समाचार पहुँचा था, ‘आराम, इस्राएल से
मिलकर हमारे खिलाफ़ आया है,‘ इसलिए
लोग घबराए और डरे, जिस तरह तूफान में
पेड़ों की हालत होती है। 3 तब परमेश्वर ने
यशायाह से कहा, “तुम अपने बेटे शर-यशब
के साथ धोबियों के खेत की सड़क से
ऊपर वाले पोखरे की नाली के सिरे पर
धोबी घाट के रास्ते पर जाकरअहाज से
मिलो। 4 उससे कहना कि वह चिन्ता न करे।
उससे यह भी कहना कि वह अराम के
राजा रेसीन और रमल्याह के बेटे पेकह के
गुस्से की परवाह न करे। 5 यह बात सच
है कि अराम और इस्राएल के राजा एक
होकर आ रहे हैं।” 6 उनका कहना है, “हम
यहूदा पर आक्रमण करेंगे और वहाँ के लोगों
को भयभीत कर देंगे। तब हम यरूशलेम में
दाखिल होंगे और तबेल के बेटे को यहूदा
का राजा बना देंगे।” 7 सर्वशक्तिमान प्रभु यह
कहते हैं; यह आक्रमण कभी न हो सकेगा,
8 क्योंकि अराम अपनी राजधानी दमिश्क
से ज़्यादा ताकतवर नहीं है। और दमिश्क
अपने राजा रेज़िन से अधिक शक्तिशाली
नहीं है। जहाँ तक इस्राएल का प्रश्न है, वह
पैंसठ साल में कुचला और बर्बाद कर दिया
जाएगा। 9 इस्राएल अपनी राजधानी सामरिया
से ज़्यादा ताकतवर नहीं है और पेकह राजा
जो कि रमल्याह का बेटा है, उससे अधिक
शक्तिशाली सामरिया नहीं है। 10 कुछ समय
ही बीता था, प्रभु ने यह संदेश आहाज राजा
को भेजा, 11 “आहाज मुझ से एक निशान

माँगो कि अपने वायदे के अनुसार मैं तुम्हारे
दुश्मनों को कुचल डालूँगा। तुम चाहे कितनी
ही कठिन बात माँगो, तुम्हारी इच्छा पूरी
की जाएगी। 12 लेकिन राजा ने इन्कार करते
हुए कहा, “नहीं, मैं सृष्टिकर्ता की परीक्षा
न करूँगा।” 13 तब यशायाह बोला,“दाऊद
के शाही परिवार सुनो। तुम मेरे धीरज को
परखते -परखते थके नहीं। तुमने परमेश्वर
के साथ भी ऐसा बर्ताव किया है। 14 ठीक
है, प्रभु स्वयं चिन्ह को चुनेंगे। देखो, एक
कुँवारी गर्भवती होगी और वह एक बेटे
को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल
रखेगी। 15 जब तक बच्चा इतना बड़ा हो जाए
कि दही और शहद खाने लगे, वह सही
गलत में अन्तर कर सकेगा। 16 लेकिन इसके
पहले कि वह सही गलत में अंतर समझ
सके, इस्राएल और अराम के राजा, जिनसे
तुम डरते हो, मर चुके होंगे। 17 परमेश्वर की
कठोर सज़ा तुम पर, परिवार पर और देश
पर आएगी। तुम ऐसे आतंक का सामना
करोगे, जैसा सुलेमान के राज्य के इस्राएल
-यहूदा के बँटवारे के समय से नहीं हुआ था।
असीरिया का शक्तिशाली राजा अपनी फौज
के साथ तुम्हारे खिलाफ़ आएगा। 18 उस दिन
प्रभु ऊपरी मिस्र की फौज और असीरिया
की फौज को इशारा करेंगे कि वे आएँ ।
मक्खियों की तरह वे आकर तुम्हें घेर लेंगे।
उनके डंक मारने और जान लेने की तरह
वे करेंगे। वे सारी उपजाऊ ज़मीन पर बैठ
जाएँगी। वे मरूस्थल, कँटीली जगह और
गुफाओं में भी ठहर जाएँगी। 19 और वे सब
की सब आकर इस देश के पहाड़ी नालों में
व चट्टानों की दरारों में, और सब कटीली
झाड़ियों में तथा पानी की सभी जगहों पर
बैठ जाएँगी। 20 उसी दिन याहवे समुन्दर के
पार वाले इलाकों के भाड़े के उस्तरे अर्थात
असीरिया के राजा के द्वारा सिर और पैरों
के बाल साफ करेंगे और उस से दाढ़ी भी
बनवाई जाएगी। 21 जब वे लूट-पाट करना
बन्द कर देंगे, तो एक किसान के पास एक
गाय और दो भेड़ें भी बड़ी सम्पत्ति समझी
जाएँगी। 22 थोड़े बहुत लोग जो बचेंगे, दही
और जंगली शहद खाकर जिएँगे, क्योंकि
यही चीजें उस समय मिल सकेंगी। 23 उस
समय की महँगी हरी-भरी दाख बारियाँ सूखी
कटीली ज़मीन में बदल जाएँगी। 24 पूरा देश
बंजर हो जाएगा जहाँ जंगली जानवर बसेंगे।
25 कोई भी उपजाऊ पहाड़ी क्षेत्र में नहीं
जाएगा, जहाँ एक समय में बगीचे थे, उस
जगह को काँटे -झाड़ियाँ ढँक लेंगी। मवेशी,
भेड़ और बकरियाँ वहाँ पर चरा करेंगी।

8 फिर प्रभु ने कहा: “एक बड़ी पटिया
लेकर लिखो, महेर्शालाल्हाशबज़ के
लिये।” 2 मैं ईमानदार आदमियों को अर्थात
ऊरिय्याह पुरोहित और जेबेरेक्याह के बेटे
जकर्याह को इस बात का गवाह करुँगा।
मेरी पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया। 3 तब
प्रभु की ओर से मुझे अपने बेटे का नाम
महेर्शालाल्हाशबज़ रखने का आदेश मिला।
4 क्योंकि इसके पहले कि बच्चा मुँह से माँ
और बाप को पुकारे, दमिश्क और शोमरोन
दोनों ही की दौलत लूट कर असीरिया का
राजा अपने देश को भेज देगा। 5 फिर प्रभु का
संदेश मेरे पास आया, 6 “ लोग शीलोह के
शान्त बहने वाले सोते को बेकार समझते
हैं और रेसीन तथा रमल्याह के बेटे के संग
एक मन होकर खुश होते हैं, 7 इसलिये प्रभु
उन पर उस शक्तिशाली और गहरे समुद्र
को अर्थात असीरिया के राजा को उसकी
सारी शान के साथ लौटा ले आएँगे। वह
उनके सभी नालों को भर देंगे और सभी
तटों से छलक कर बहेगा। 8 वह यहूदा के

खिलाफ़ भी आएगा और बढ़ते-बढ़ते गले
तक आ जाएगा। हे इम्मानुएल, तुम्हारा पूरा
देश उसके विस्तार से ढँप जाएगा।" 9 हे
लोगो, शोर मचाओ तो मचाओ, तुम बर्बाद
ही होने वाले हो। इस दुनिया के दूर- दूर
के लोगो, कान लगाकर सुनो। चाहे तुम
अपनी- अपनी कमर कसो, फिर भी तुम्हारे
टकड़े- टुकड़े किए जाएँगे। 10 तुम्हारी सारी
कोशिश नाकामयाब हो जाएगी। चाहे तुम
कुछ भी कहो, तुम्हारा कहा हुआ बेमायने
होगा, क्योंकि प्रभु हमारे साथ हैं। 11 प्रभु ने
ज़ोर देकर मुझे इनका सा जीवन जीने को
मना किया, 12 और कहा,"जिस बात को वे
लोग बगावत कहें, उसे तुम न कहना और
जिस बात से वे डरें, तुम न डरना। 13 सेनाओं
के प्रभु ही को पवित्र जानना,उन्हीं से डरना।
14 वह सुरक्षित जगह की तरह होगा,लेकिन
इस्त्राएल के दोनों घरानों के लिए ठोकर का
पत्थर और ठोकर की चट्टान और यरुशलेम
के लोगों के लिए जाल होगा। 15 तमाम लोग
फंसेंगे, गिरेंगे और ठोकर खाएँगे और पकड़े
जाएँगे। 16 चेतावनी का खत बन्द करके मेरी
शिक्षा पर मोहर कर दो। 17 प्रभु, जो अपने
चेहरे को याकूब के घराने से छिपाए हैं,
उन्हीं से मुझे उम्मीद है। 18 देखो, मैं और
जो सन्तान मुझे प्रभु ने दी है, सिय्योन पहाड़
पर रहने वाले प्रभु की तरफ़ से इस्राएलियों
के लिए निशान हैं। 19 जब कभी लोग तुम से
कहें कि तुम ओझाओं और टोन्हों से मदद
लो, तब तुम उन से कहना कि अपने प्रभु ही
से हमें पूछना चाहिये।हम जीवितों के लिए
मुर्दों से क्यों पूछने जाएँ? 20 प्रभु और उनके
आदेशों पर ही ध्यान करना। यदि वे लोग
उन बातों के मुताबिक न बोलें, तो उनके लिए
सवेरा न होगा। 21 वे इस देश में दुखित और
भूखे होंगे तब वे गुस्से में आकर आकाश
की ओर अपना चेहरा उठाएँगे और प्रभु को
भला- बुरा कहेंगे। 22 तब वे पृथ्वी की ओर
निगाह करेंगे, लेकिन उनके लिए अंधियारा
और सकेती ही होगी और वे गहरे अन्धकार
में ढकेल दिये जाएँगे।

9 मुसीबत भरा अन्धेरा खतम हो जाएगा।
पहले उन्होंने जबूलून और नप्ताली के
देशों की बेइज़्ज़ती की थी, लेकिन आखिर के
दिनों में ताल की ओर यरदन के पार के देशों
के लोगों को महिमा देंगे। 2 जो लोग अन्धेरे
में चल रहे थे, उन्होंने बड़ी रोशनी देखी।
जो लोग घोर अन्धेरे से भरे मौत के देश में
रह रहे थे, उन पर रोशनी चमकी। 3 आपने
देश को बढ़ाया। आपने उन्हें बहुत खुशी
दी। वे आपके सामने कटनी का सा आनन्द
करते हैं और इतना मगन होते हैं, जैसे कि
लूट का माल मिल गया हो। 4 क्योंकि आपने
उसकी गर्दन पर रखे भारी बोझ और उसके
बहँगे के पास, उस पर अन्धेर करने वाले
की लाठी, आदि सभी को ऐसा तोड़ डाला
है, जैसा मिद्यानियों के समय में किया था।
5 क्योंकि युद्ध में लड़ने वाले सिपाहियों के
जूते और खून में सने कपड़े, सब आग से जल
जाएँगे। 6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक
पैदा हुआ और हमें एक बेटा दिया गया
है। अधिकार की ज़िम्मेदारी उसकी होगी।
उसका नाम अद्‌भुत योजना बनाने वाला,
शक्तिशाली प्रभु, अनन्तकाल का पिता
और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
7 उसका अधिकार हमेशा बढ़ता जाएगा।
उसकी शान्ति हमेशा बढ़ती जाएगी, इसलिए
वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय
से लेकर सदा के लिए न्याय, ईमानदारी
और सच्चाई के द्वारा मज़बूती से संभाले रहेगा
8 याकूब के खिलाफ़ प्रभु एलान करते हैं,

“यह तो इस्राएल पर गुज़रने वाली घटना है।
9 एप्रैमी और सामरी लोग यह जानते हैं कि,
वे घमण्ड और मन की सख्ती से कहते हैं:
ईंटें गिर चुकी हैं, 10 लेकिन तराशे हुए पत्थरों
से बाँध काम फिर से किया जाएगा। गूलर
के पेड़ तो कट गए हैं, लेकिन उनकी जगह
हम देवदार से काम चला लेंगे।” 11 इसलिए
याहवे विरोध करने वालों को रेसीन की ओर
से उनके भी खिलाफ़ उकसाएँगे और उनके
दुश्मनों को भी - 12 अर्थात पूर्व में अरामियों
और पश्चिम में पलिश्तियों को उभारेंगे और
वे मुँह फाड़कर इस्राएल को हड़प जाएँगे।
इसके बावजूद भी उनका गुस्सा शान्त न
हुआ। यहाँ तक कि अभी तक उनका गुस्सा
बना हुआ है। 13 फिर भी लोग सुधारने वाले
प्रभु की ओर मुड़ते नहीं हैं, न ही सेनाओं के
प्रभु को चाहते हैं। 14 इसलिए प्रभु इस्राएल से
सिर और पूँछ यानि कि खजूर की डाली और
सरकण्डे को एक ही दिन में काट डालेंगे।
15 पुरनिया और सम्मानीय पुरूष सिर है और
जो नबी झूठी बातें सिखाता है, वह पूँछ है।
16 क्योंकि जो इन लोगों का मार्गदर्शन करते
हैं, वे इन्हें गुमराह कर देते हैं। 17 इसलिए
प्रभु इनके जवानों से खुश नहीं होगे, न ही
वह इनके अनाथों और इनकी विधवाओं पर
तरस खाएँगे। इसका कारण यह है कि हर
एक जन दुष्ट है। हर एक के मुँह से बेवकूफी
की बात निकलती है। यह सब होने के
बावजूद उनका गुस्सा समाप्त नहीं हुआ और
अभी भी बना हुआ है, 18 क्योंकि बुराई आग
की तरह धधकती है, वह ऊँटकटारों और
काँटों को भस्म करती जाती है। यहाँ तक
कि वह घने जंगल की झाड़ियों को भी जला
डालती है और वह धुएँ में चकरा- चकराकर
ऊपर की ओर उठती है। 19 सेनाओं के प्रभु
के गुस्से के कारण इस देश को जलाया जा
चुका है।ये लोग आग की लकड़ी की तरह
हैं। इन लोगों का आपसी बर्ताव तरस और
रहम का नहीं है। 20 दाहिनी ओर से खाना
छीनकर खाने के बावजूद भी उनकी भूख
मिटती नहीं है। उनमें से हर एक जन अपनी
बाँहों का गोश्त खाता है। 21 मनश्शे एप्रैम
को और एप्रैम मनश्शे को खाता है। ये दोनों
मिलकर यहूदा के खिलाफ़ हैं। इतना होने के
बाद भी प्रभु का गुस्सा ठण्डा नहीं हुआ।

10 हाय उन पर जो बेइन्साफी
करते,और उन पर जो उत्पात
करने का आदेश दे देते हैं। 2 ताकि वे गरीबों
को न्याय न दें और मेरी प्रजा के दीन
लोगों का हक मारें, कि वे विधवाओं को
लूटें और अनाथों का माल अपना कर लें।
3 तुम सज़ा के दिन और मुसीबत के दिन
जो दूर से आएँगे, क्या करोगे? मदद पाने
के लिए किस के पास भाग कर जाओगे?
4 तुम अपने विभव को कहाँ रखोगे? वे
केवल गुलामों के पैरों के पास गिर जाएँगे
और मरे हुओं के नीचे दबे पड़े रहेंगे।इतने
पर भी उनका गुस्सा शान्त न हुआ और
उनका हाथ अभी तक बढ़ा हुआ है।
5 असीरिया पर हाय, जो मेरे गुस्से का लठ
और मेरे हाथ का सोटा है! वह मेरा क्रोध
है। 6 मैं उसको एक बुरे लोगों के खिलाफ़
भेजूँगा और जिन लोगों पर मेरा गुस्सा
भड़का है उनके विरुद्ध उसको आदेश दूँगा
कि छीन छान करे और लूट ले ले, और
उनको सड़कों के कीचड़ की तरह लताड़े।
7 लेकिन उसकी एसी मनसा न होगी , न
उसके मन में एसा विचार है; क्योंकि उसके
मन में यही है, कि मैं बहुत से देशों का अन्त
और नाश कर डालूँ। 8 क्योंकि वह कहता
है, क्या मेरे सभी गवर्नर राजा के समान
नहीं हैं? 9 क्या कलनो कर्कमीश की तरह

नहीं है? क्या हमात अर्पद के और शोमरोन
दमिश्क के समान नहीं है? 10 जिस तरह
मेरा हाथ मूरतों से भरे उन राज्यों पर पहुँचा
था, जिनकी मूरतें यरूशलेम और शोमरोन
की मूरतों से बढ़कर थीं और जिस तरह मैंने
शोमरोन और उसकी मूरतों के साथ बर्ताव
किया, 11 क्या उसी तरह मैं यरुशलेम से
और उसकी मूरतों से न करूँ? 12 इसलिये
जब प्रभु सिय्योन पहाड़ पर और यरुशलेम
में अपना सब काम कर चुकेंगे, तब मैं
असीरिया के राजा के घमण्ड से भरी आँखों
का पलटा दूँगा। 13 उसका कहना यह है,
अपनी ही ताकत और अक्लमन्दी से मैंने
यह काम किया है, क्योंकि मैं चालाक हूँ:
मैंने देश-देश की सरहदों को बदल दिया,
और उनकी रखी दौलत को लूट लिया।
मैंने बहादुर की तरह गद्दी पर बैठनेवालों
को उतार डाला। 14 देश-देश के लोगों की
धन-दौलत, चिड़ियों के घोंसलों की तरह
मेरे हाथ लगी। जिस तरह से कोई छोड़े
हुए अण्डों को बटोरता है, वैसे ही मैंने
सारी दुनिया को बटोर लिया है; और कोई
पँख फड़फड़ाने या चोंच खोलने या चीं-चीं
करनेवाला नहीं था। 15 क्या कुल्हाड़ी
उसके खिलाफ़ जो उसे काटता है, डींग मार
सकती है, या आरी उसके विरुद्ध जो उसे
खींचता है, बड़ाई करेगी? क्या सोंटा अपने
चलाने वाले को चला सकता है या छड़ी
उसे उठा सकती है, जो लकड़ी नहीं है?
16 इस कारण प्रभु अर्थात सेनाओं के प्रभु
उस राजा के स्वस्थ सैनिकों को कमज़ोर
कर देंगे और उसके ऐश्वर्य के नीचे आग
की तरह जलन होगी। 17 इस्राएल की रोशनी
आग की तरह होगी और इस्राएल के पवित्र
ज्वाला ठहरेंगे और वह उसके झाड़-झंखार
को एक ही दिन में भस्म करेगा। 18 जिस
तरह बीमार आदमी की हालत हो जाती है,
वैसे ही वह उसके जंगल और फल देने वाले
बगीचे की खूबसूरती पूरी तरह से बर्बाद
कर देंगे। 19 उस जंगल के पेड़ इतने कम रह
जाएँगे कि बच्चा भी उनको गिनकर लिख
देगा। 20 उन दिनों में इस्राएल के बचे हुए
लोग और याकूब के भागे हुए लोग अपने
मारनेवाले पर फिर कभी विश्वास न रखेंगे।
लेकिन प्रभु जो इस्राएल के पवित्र हैं, उन्हीं
पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे। 21 याकूब
में से बचे हुए लोग पराक्रमी परमेश्वर की
ओर मुड़ जाएँगे। 22 क्योंकि हे इस्राएल,
चाहे तुम्हारे लोग बालू के किनकों की
तरह अनगिनित हों, फिर भी उनमें से बचे
लोग ही लौट पाएँगे। इन्साफ की वजह से
बर्बादी पूरी तय है। 23 क्योंकि प्रभु सेनाओं
के याहवे ने पूरे देश को बर्बाद करने का
इरादा कर लिया है। 24 इसलिए उनका
कहना यह है कि सिय्योन में रहनेवाली मेरी
प्रजा को असीरिया से नहीं डरना चाहिए,
चाहे वे सोंटे से उसे मारें और मिस्र की तरह
छड़ी उठाएँ। 25 क्योंकि अब थोड़ी ही देर में
मेरी जलन और गुस्सा उनको बर्बाद करके
शान्त हो जाएगा। 26 सेनाओं के प्रभु उसके
विरुद्ध कोड़ा उठाकर उसे ऐसा मारेंगे, जैसा
उन्होंने ओरेब नाम चट्टान पर मिद्यानियों को
मारा था; और जैसा उन्होंने मिस्रियों के
विरुद्ध लाठी बढ़ाई थी, वैसा हीउसकी ओर
बढ़ाएँगे। 27 उस वक्त उसका बोझ तुम्हारे
कँधे पर से और उसका जूआ तुम्हारी गर्दन
पर से उठा लिया जाएगा और अभिषेक
की वजह से वह जूआ तोड़ डाला जाएगा।
28 वह अय्यात में आया है और मिग्रोन में से
होकर आगे बढ़ गया है। मिकमाश में उसने
अपना सामान रखा है। 29 वे घाटी से पार
हो गए, उन्होंने गेबा में रात बिताई; रामा

थरथरा गया है, शाऊल का गिबा भाग चुका
है। 30 हे गल्लीम की बेटी चिल्लाओ!, हे
लेशा के लोगो ध्यान से सुनो! हाय बेचारा
अनातओत! 31 मदमेना मारा -मारा फिरेगा,
गेबीम के रहनेवाले भागने के लिए अपना-
अपना सामान इकट्ठा कर रहे हैं। 32 आज
ही के दिन वह नोब में टिकेगा; तब वह
सिय्योन पहाड़ पर यरुशलेम की पहाड़ी पर
हाथ उठाकर धमकाएगा। 33 देखो, प्रभु
देशों को भयानक तरीके से छाँट डालेंगे
और ऊँचे-ऊँचे पेड़ काट डाले जाएँगे और
जो ऊँचे हैं वे नीचे किए जाएँगे। 34 वह
घने जंगल को लोहे से काट डालेंगे और
लबानोन एक प्रतापी के द्वारा नाश किया
जाएगा।

11 तब यिशै के ठूँठ में से एक अंकुर
फूट निकलेगा, हाँ उसकी जड़ में
से एक शाखा निकलकर फलदाई होगी।
2 तब याहवे का आत्मा, बुद्धि और समझ
का आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा
वरन ज्ञान और याहवे के डर का आत्मा
उस पर छाया रहेगा। 3 वह याहवे का भय
मानने में खुश होगा। वह न तो मुँह देखा
न्याय करेगा और न कानों से सुनकर अपना
फैसला सुनाएगा, 4 लेकिन वह गरीबों का
न्याय ईमानदारी और सच्चाई से और दुनिया
के सताए हुओं का न्याय खराई से करेगा।
वह पृथ्वी को मुँह के सोंटे से मारेगा। वह
दुष्ट को अपने मुँह की फूँक से मिटा डालेगा।
5 उसका पटुका धार्मिकता, और कमरबन्द
सच्चाई होगी। 6 तब भेड़िया भेड़ के बच्चे
के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के
बच्चे के साथ बैठा करेगा और बछड़ा और
जवान शेर और पाला पोसा हुआ बैल तीनों
इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी
अगुआई करेगा। 7 गाय और रीछनी मिलकर
चरेंगी, उनके बच्चे एक साथ बैठेंगे। शेर
बैल की तरह भूसा खाएगा। 8 दूध पीने
वाला बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा।
दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में
अपने हाथ डालेगा। 9 मेरे सभी पवित्र पहाड़
पर न कोई दुख देगा, न ही नुक्सान करेगा,
क्योंकि दुनिया परमेश्वर के ज्ञान से एसी भर
जाएगी, जैसा पानी समुद्र में भरा रहता है।
10 उस समय यिशै की जड़ देश-देश के लोगों
के लिए एक झन्डा होगी; सभी राज्यों के
लोग उसे ढूँढेंगे,औए उसका विश्रामस्थान
तेजोमय होगा। 11 उस समय प्रभु अपना हाथ
दूसरी बार बढ़ाकर बचे हुओं को, जो उसकी
प्रजा के रह गए हैं, असीरिया से, मिस्र से,
पत्रोस से, कूश से, एलाम से, शिनार से,
हमात से,और समुद्र के द्वीपों से खरीदकर
छुड़ाएँगे। 12 वह दूसरे देशों के लोगों के लिए
झन्डा खड़ा करके इस्राएल के सभी निकाले
हुओं को, और यहूदा के सभी बिखरे हुओं
को संसार की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेंगे।
13 एप्रैम फिर से डाह न करेगा और यहूदा
को परेशान करनेवाले काट डाले जाएँगे।
14 लेकिन वे पश्चिम की ओर से पलिश्तियों
के कंधे पर झपट्टा मारेंगे, और मिलकर
पूर्वियों को लूटेंगे, वे एदोम और मोआब पर
हाथ बढ़ाएँगे, और अम्मोनी उनके वश में
हो जाएँगे। 15 और याहवे मिस्र के समुद्र की
खाड़ी को सुखा डालेंगे, और महानद पर
अपना हाथ बढ़ाकर तेज लू से ऐसा सुखाएँगे
कि वह सात धार हो जाएगा, और लोग जूता
पहनकर भी पार हो जाएँगे। 16 और उनकी
प्रजा के बचे हुए लोगों के लिए असीरिया से
ऐसा राजमार्ग होगा जैसा मिस्र देश से चले
आने के वक्त इस्राएल के लिए हुआ था।

12 उस दिन तुम गीत गाओगे "प्रभु की
बडाई हो। वह मुझ से गुस्सा थे

लेकिन अभी वह मुझे शक्ति देते है। 2 देखो
परमेश्वर मुझे बचाने के लिए आए हैं। मैं
उन्ही पर भरोसा रखूँगा और डरूँगा नहीं
प्रभु परमेश्वर मेरी ताकत और गीत हैं। वही
मेरे लिए मुक्ति हैं। 3 मुक्ति के झरने से तुम
खुशी के साथ पिओगे। 4 उस अद्‌भुत दिन
में तुम गाओगेः "प्रभु का धन्यवाद उनको
आदर मिले, उन्होंने दुनिया में क्या -क्या
किया है, लोग जाने वह कितने शक्तिशाली
है। 5 परमेश्वर ने अजीब काम किए हैं, उनकी
बड़ाई सारी दुनिया में करो। 6 यरूशलेम के
सभी लोग खुशी से नारा लगाएँ। इस्राएल के
पवित्र जो तुम्हारे बीच में हैं, महान हैं।

13 अमोस के बेटे यशायाह को
बेबिलोन को बर्बादी का समाचार
दिया गया। 2 जबकि दुश्मन हमला कर
रहा है उस समय झण्डा लहरा रहा है। हे
इस्राएल उनको हिम्मत दो। उनके सामने
हाथों को हिलाओ, जब वे बेबिलोन के
विरोध में मार्च करते हुए मजबूत महलों को
जो ताकतवर लोगों के हैं, नष्ट करते जाते
हैं। 3 इन फ़ौजों को मैंने यह काम दिया है।
जब मेरी महिमा होगी, तब वे खुश होंगे।
वही मेरे गुस्से को शान्त करेंगे। 4 पहाड़ों पर
होने वाले शोर को सुनो। जैसे सेना बढ़ती
जाती है उसकी आवाज़ सुनते जाओ। यह
बहुत से देशों की आवाज और गूँज है।
प्रभु उन्हें यहाँ लाए हैं, ताकि एक बड़ी
फौज बना सकें। 5 वे दूर देशों से आए हैं।
वे परमेश्वर के हथियार हैं। वे अपने साथ
प्रभु के क्रोध को लिए हुए हैं और वे सब
को बर्बाद कर डालेंगे। 6 डर कर चिल्लाओ,
क्योंकि प्रभु का समय आ चुका है, वह
समय जब वह नष्ट करेंगे। 7 हर एक बाजू
डर से पंगु हो गया है। कठोर मन वाले भी
डरे हुए हैं और उनका दिल पिघल गया है।
8 डर से उन्हें कपकपी हो रही है इस तरह
जैसे एक गर्भवती महिला को बच्चे के जन्म
के समय होती है। जब कि जलते हुए शहर
की लपटें एक दूसरे के चेहरे पर दिखती हैं,
वे एक दूसरे की तरफ़ असहाय हालत में
देखते हैं। 9 देखो प्रभु का दिन आने वाला
है, उनके भयंकर और तेज गुस्से का दिन।
पूरा देश और अपराधी खतम कर दिए
जाएँगे। 10 उनके ऊपर का आकाश काला
हो जाएगा। सूरज -चाँद और तारों की रोशनी
जाती रहेगी। 11 मैं प्रभु, दुनिया को उसके
गलत कामों और बुराई के लिए दण्ड दूँगा।
घमण्डी के घमण्ड और ताकतवर के फूलने
को नाश करूँगा। 12 मेरे काम के अन्त
में थोड़े ही जीवित रह जाएँगे। सोने और
ओपीर की तरह लोगों की भी कमी होगी।
13 मैं आकाश को हिलाऊँगा और पृथ्वी
अपनी जगह से हट जाएगी। मैं सर्वशक्तिमान
परमेश्वर अपने क्रोध को दिखाऊँगा। 14 जब
तक थक न जाएँ सभी दौड़ते रहेंगे। वे लोग
ऐसे हिरन की तरह हैं जिसे शिकारी दौड़ाते
हैं, ऐसी भेड़ों की तरह जो बिना चरवाहे से
भटकी हुई हैं। 15 जो भी पकड़ा जाएगा, उसे
तलवार से मारा जाएगा। 16 उनकी आँखों
के सामने उनके छोटे बच्चों को फेंक दिया
जाएगा। उनके घर तोड़ डाले जायेंगे, उनकी
पत्नियों का बलात्कार किया जाएगा। 17 मैं
मादी लोगों को बेबिलोनियों के विरूद्ध
उकसाऊँगा ।उन्हें सोने और चाँदी से
न खरीदा जा सकेगा। 18 आक्रमणकारी
फौज नवजवानों को तीर से मार डालेगी।
असहाय शिशुओं और बच्चों पर कोई दया न
दिखाएगा। 19 जिस तरह सदोम-अमोराह को
परमेश्वर ने नाश किया था, ठीक उसी तरह
बेबिलोन संस्कृति तहस-नहस हो जाएगी।
20 इसके बाद बेबिलोन फिर कभी उठ न

सकेगा। पीढ़ी के बाद पीढ़ी आती जाएगी, लेकिन वहाँ फिर कभी कोई न रहेगा खानाबदोश वाले लोग भी वहाँ टिकना न चाहेंगे। चरवाहे वहाँ पर एक रात भी भेड़ों को न रखना चाहेंगे। 21 रेगिस्तान के जंगली जानवर इस खण्डहर वाले देश में फिरेंगे। घरों में चिल्लाने वाले जानवर बसेंगे। शुतुरमुर्ग इन वीरान जगहों पर रहेंगे । जंगली बकरे वहाँ आकर नाचेंगे। 22 किले में लकड़बग्घे चिल्लाएँगे और गीदड़ अपनी खो बनाएँगे। बेबिलोन कुछ ही दिनों का है। बहुत जल्दी यह नाश होगा।

14 लेकिन याकूब के वंश पर प्रभु की कृपा बनी रहेगी। एक बार फिर इस्राएली उनके लिए विशेष होंगे। वह उन्हें वापस लाकर उनकी ज़मीन पर बसा देंगे। तमाम देशों से लोग आकर उनसे मिल जाएँगे और इस्राएल का हिस्सा बन जाएँगे। 2 दुनिया के तमाम देश इस्राएलियों की मदद करेंगे, कि वे वापस अपने देश आ सकें। जो लोग वापस आएँगे और वहाँ रहना चाहेंगे, उनकी सेवा करेंगे। जिन्होंने इस्राएल को पकड़ा, वे भी पकड़े जाएँगे और इस्राएल अपने शत्रुओं पर राज्य करेगा। 3 उस दिन जब प्रभु अपने लोगों को दुख, गुलामी और जंजीर से मुक्त करेंगे, 4 तुम बेबिलोन के राजा की हँसी उड़ाओगे। तुम कहोगे,'शक्तिशाली व्यक्ति नाश किया गया है।' हाँ, तुम्हारे सुनहले मन्दिरों से भरा शहर कैसे बर्बाद हो गया। 5 परमेश्वर ने तुम्हारी दुष्ट शक्ति को कुचला है और बुरे शासन को खतम किया है। 6 तुमने क्रोध में लोगों को निरन्तर सताया है। तुम यह सब तुम बिना लगाम लगाए करते रहे रहो। 7 अन्त में अब शान्ति है।अब गीत गाया जा सकता है। 8 यहाँ तक कि जंगल में साइप्रस और लबानोन के देवदार भी खुशी से गीत गाएँगे। तुम्हारी ताकत तोड़ी गई है। यहाँ कोई काटने को नहीं आएगा। 9 "मरे हुओं की जगह में तुम्हारे आने पर बड़ी खुशी होगी। वे महान राजा और बड़े लोग जो मर चुके हैं, वे भी देखेंगे। 10 एक ही आवाज से वे चिल्लाते हैं, अब तुम उतने ही कमजोर हो, जितने हम हैं। 11 तुम्हारी ताकत खतम हुई। वे तुम्हारे साथ दफन हो गए। सारी मधुर आवाज (संगीत) अभी नहीं सुनाई देती है। अब तुम्हारी चादर और कम्बल में कीड़े लग चुके हैं। 12 चमकने वाले सितारे तुम कैसे आकाश से गिराए गए, तुम जो सुबह के सितारे के बेटे हो। तुम पृथ्वी पर गिराए गए हो, तुम तो इस विश्व के देशों को नाश करते थे। 13 तुम कहा करते थे, मैं आकाश तक उठूँगा, और परमेश्वर के राजासन से ऊँचा राजासन बनाऊँगा। मैं दूर उत्तर में पहाड़ो के ईश्वरों के ऊपर प्रधान होऊँगा। 14 सबसे ऊँचाई पर मैं पहुँचूँगा और परमेश्वर के समान हो जाऊँगा। 15 लेकिन तुम नीचे किए जाओगे, मृतकों की जगह तक जो सबसे नीचे है। 16 वहाँ पर हर एक तुम को देख कर कहेगा, क्या यह वही है जिसने दुनिया के साम्राज्यों को हिला कर रख दिया था। 17 क्या यह वही है जिसने दुनिया को बर्बाद किया और सुनसान बना दिया? क्या यही वह राजा है जिसने विश्व के बड़े शहरों को बर्बाद किया और कैदियों पर दया नहीं दिखाई? 18 देशों के राजा अपनी -अपनी कब्रो में पड़े हैं। 19 लेकिन कब्र से निकाल फेंका जाएगा, जैसे कि बेकार डाली हों। जिस तरह एक लाश रौंदी जाती है, तुम भी ढेर सारी कब्रों में उनके साथ डाल दिए जाओगे जो युद्ध में मारे गए थे। तुम्हें गड्ढे में डाल दिया जाएगा। 20 तुमको अच्छी तरह से दफ़नाया भी नही जाएगा, क्योंकि तुमने अपने देश को खण्डहर कर डाला है और अपने लोगों को

मौत के घाट उतारा है। कुकर्मियों के वंश
का नाम मिट जाएगा। 21 उनके बापदादों के
आनैतिक कामों के लिये उनके बेटों को मार
डालने की तैयारी करो, ताकि ऐसा न हो कि
वे फिर से कभी पृथ्वी के अधिकारी बन
जाएँ और बहुत से शहर बसाएँ। 22 सेनाओं के
प्रभु का कहना यह है कि वह उनके खिलाफ़
उठकर बाबेल का नाम तक मिटा डालेंगे
और बेटों-पोतों को काट डालूँगा,यह प्रभु
कहते हैं। 23 मैं उसको सेही की मान्द और
पानी झीलें कर दूँगा, और मैं उसे सत्यानाश
की झाड़ू से झाड़ डालूँगा, यह सेनाओं के प्रभु
कह रहे हैं। 24 सेनाओं के प्रभु ने यह प्रण कर
लिया है, इसमें कोई शक भी नहीं है, जैसा
मैंने इरादा कर लिया है, वैस ही होगा। जैसी
मेरी योजना है, वैसा ही होनेवाला है, 25 वह
यह कि मैं असीरिया को उसके अपने देश में
ही तोड़ दूँगा। मेरे ही पहाड़ों पर उसे कुचल
डालूँगा, तब उसका जूआ उनकी गर्दनों पर
से और उसका बोझ उनके कन्धों पर से
उतर जाएगा। 26 यही योजना सारी दुनिया
के लिए ठहराई है और यह वही हाथ है,
जो सभी देशों से बड़ा हुआ है। 27 क्योंकि
सेनाओं के प्रभु ने यह युक्ति की है और उसे
कोई टाल नहीं सकता, उनका हाथ बढ़ाया
गया है और उसे रोका नहीं जा सकता।
28 जिस साल में आहाज़ राजा परलोक
सिधार गया,उसी साल यह भविष्यवाणी हुई:
29 हे सारे पलिश्तीन तुम इसलिए खुशी न
मनाओ, कि तुम्हारे मारनेवाले की लाठी
टूट चुकी है, क्योंकि साँओ की जड़ से एक
काला नाग निकलेगा, और उसका फल एक
उड़नेवाला और तेज ज़हर वाला अग्निसर्प
होगा। 30 तब गरीबों के जेठे खाएँगे और
बिना डर बैठ सकेंगे, परन्तु मैं तुम्हारे वंश
को भूख से मार डालूँगा, और तुम्हारे बचे
हुए लोग घात किए जाएँगे। 31 हे फाटक, तुम
हाय, हाय करो; हे नगर तुम चिल्लाओ;हे
पलिश्तीन तुम पूरी तरह से पिघल जाओ!
क्योंकि उत्तर से धुँआ उठेगा और उसकी
फौज में से कोई पीछे न रहेगा। 32 तब दूसरे
देश के दूतों को क्या उत्तर दिया जा सकेगा?
यह कि याहवे प्रभु ने सिय्योन की नेव डाली
है, और उनकी प्रजा के दीन लोग उस में
ठिकाना पा सकेंगे।

15 मोआब देश के खिलाफ़ बातें:
मोआब देश का आर नगर एक ही
दिन में खतम हो गया। कीर नगर भी एक ही
रात में वीरान हो गया है। 2 बैल और दीबोन
ऊँची जगहों पर चढ़ गए हैं। नबो और मेदबा
के लिए मोआब हाय-हाय करता है। उन सभी
के सिर के बाल और दाड़ी निकाली जा चुकी
है। 3 जो लोग सड़कों पर हैं, वे टाट लपेटे
हुए हैं। छतों और चैराहों पर लोग विलाप
कर रहे हैं। 4 हेशबोन और एलाले ज़ोर-ज़ोर
से आवाज कर रहे हैं। उनकी आवाज यहाँ
तक सुनाई पड़ती है। इसलिए मोआब के
हथियारबन्द चिल्ला रहे हैं। उनके मन में
उदासी भी है। 5 मेरा मन मोआब के लिए
दोहाई देता है। उसके अमीर लोग सोअर और
एग्लत -शलीशिय्या तक भाग जाते है। देखो
लूहीत की चढ़ाई पर वे रोते हुए चढ़ते हैं।
होरोनैम के रास्ते में वे बर्बाद हो जाने का
शोर कर रहे हैं। 6 निम्रीम का पानी सूख चुका
है और घास भी। वहाँ कुछ नमी नहीं रही।
7 इसलिए जो दौलत उन्होंने इकट्ठा कर ली
है, उसे वे घाटी के पार ले जा रहे हैं, जहाँ
मजनू पेड़ हैं। 8 इसलिए लोग जो मोआब की
सीमा पर है, हल्ला कर रहे हैं। वह आवाज
एगलैम और बेरेलीम में भी सुनाई। 9 क्योंकि
दीमोन का सोता खून से भरा हुआ हैं। फिर
भी दीमोन पर मैं और ज़्यादा पीड़ा भेजूँगा।

मैं बचे हुए मोआबियों और वहाँ से भागे हुए
लोगों के खिलाफ़ शेर भेजूँगा।
16 जंगल की ओर के सेला नगर से
सिय्योन की बेटी के पहाड़ देश
के हाकिम के लिए भेड़ों के बच्चों को
भेजा। 2 मोआब की बेटियाँ अर्नोन घाट पर
उजाड़े हुए घोंसले के पक्षी और उनके भटके
बच्चों की तरह हैं। 3 सलाह मशविरा करो,
इन्साफ करो। दोपहर की अपनी छाया को
रात की तरह करो। जिन्हें घर से निकाला
गया है। उन्हें छिपा लो। जो लोग मारे-मारे
फिर रहे हैं, उन्हें पकड़वाना मत। 4 मेरे
निकाले हुए लोग तुम्हारे बीच में रहें। मोआब
को बर्बाद करने वालों से बचाओ। अब
कुचलने वाला नहीं है। अब लूट-पाट न होगी
क्योंकि बर्बादी लाने वाले खतम हो चुके
हैं। 5 तब एक तख्त बनाया जाएगा। जिसका
मकसद दया होगा। उस तख्त पर दाऊद
के तम्बू में एक न्यायकर्ता सच्चाई के साथ
बैठेगा। वह सही गलत देख कर इन्साफ
करेगा। वह सही करने के लिए तैयार रहेगा।
6 मोआब के घमण्ड के बारे में लोगों को
मालूम हो चुका है लेकिन उसका घमण्ड
करना बेकार है। 7 एक दिन मोआब दुख
मनाएगा। दूसरे लोग भी उसके लिए शोक
मनाएँगे कीर हरेशेत के बगीचे की टिकियों
के लिए वे बहुत निराश होकर लम्बी-लम्बी
साँसे लेगे। 8 क्योंकि हेशबोन के खेत और
सिबमा की दाख लताएँ मुर्झा गयीं। देश- देश
के अधिकारियों ने उनकी बढ़िया- बढ़िया
लताओं को काट- काट कर गिरा दिया है।
वे याजेर तक पहुँचने के साथ जंगल तक
पहुँच गयीं और ताल के उस पार दूर तक
पहुँच गयीं। 9 मैं याजेर के साथ सिबमा की
दाखलताओं के लिए रोऊँगा। हे हेशबोन और
एलाले अपने आँसुओं से मैं तुम्हारी सिंचाई
करूँगा। क्योंकि गर्मी के मौसम में फलों और
अनाज की कटनी के समय की ललकार की
आवाज आ रही है। 10 फल देने वाले बगीचों
में से खुशी जाती रही। खुशी के गाने आवाज़
सुनाई नहीं देगी। अंगूर के कुण्ड में अंगूर
कोई नहीं कुचलेगा। क्योंकि उनकी खुशी को
मैं खतम करूँगा। 11 इसलिए मेरा मन मोआब
के कारण और मेरा दिल कीरहैरेस के कारण
वीणा की सी आवाज़ करता है। 12 और जब
मोआब ऊँचे स्थान पर मुँह दिखाते -दिखाते
थक जाए,और प्रार्थना करने के लिए अपने
पवित्र स्थान से आए, तो उसे कुछ फायदा
न होगा। 13 यही वह बात है जो प्रभु ने इस से
पहले मोआब के बारे में कही थी। 14 लेकिन
अब प्रभु ने यह कहा है कि मजदूर के
सालों के समान तीन साल के अन्दर मोआब
की शान और उसकी भीड़-भाड़ सब बेकार
ठहरेंगे;और कुछ जन जो बचेंगे, उनकी कोई
ताकत न रहेगी।
17 दमिश्क के बारे में बहुत खतरनाक
सच्चाई। देखो, दमिश्क का नामों-
निशां मिट जाएगा। 2 अरोएर के नगर सुनसान
हो जाएँगे. वे जानवरों के झुण्डों की चरागाह
बन जाएँगे, जानवर उन में बैठेंगे और उनको
कोई भगाएगा नहीं। 3 एप्रैम के गढ़वाले नगर,
और दमिश्क का राज्य और बचे हुए अरामी,
तीनों आने वाले समय में न रहेंगे; और जो
हालत इस्राएलियों के विभव की हुई वही
उनकी होगी, यह सेनाओं के प्रभु कहते हैं।
4 उस समय याकूब का विभव कम हो जाएगा
उसका मोटापा कम हो जाएगा। 5 जिस तरह
से लवनेवाला अनाज को काटकर बालों
को अपने हाथों में समेटकर या रपाईम नाम
तराई में कोई सिला बीनता है। 6 फिर भी
जैसे जलपाई पेड़ के झाड़ते समय कुछ फल
रह जाते हैं,अर्थात फुनगी पर दो तीन फल,

और फलवन्त डालियों में कहीं- कहीं चार
फल छूट जाते हैं, वैसे ही उनमें सिला बिनाई
होगी, इस्राएल के प्रभु का यही कहना है।
7 उन दिनों में इन्सान अपने बनाने वाले पर
नज़र डालेगा, और उसकी आँखें इस्राएल
के पवित्र की ओर लगी रहेंगी। 8 वह अपनी
बनाई हुई वेदियों पर ध्यान न करेगा, और
न अपनी बनाई गई अशेरा नामक मूरतों या
सूरज की प्रतिमाओं की ओर देखेगा। 9 उस
समय उनके गढ़वाले नगर घने जंगल और
उनके निर्जन स्थान पहाड़ों की चोटियों की
तरह होंगे जो इस्राएलियों के डर से छोड़ दिए
गए थे, और वे उजाड़ पड़े रहेंगे। 10 क्योंकि
तुम अपने मुक्तिदाता परमेश्वर को भूल गए
हो और अपनी मज़बूत चट्टान को भूल गए
हो। इसलिए चाहे तुम दिल को खुश कर
देनेवाले पौधे लगाओ और विदेशी कलम
लगाओ, 11 चाहे रोपने के दिन तुम उनके
चारों ओर तुम चारों ओर बाड़ा बान्धो और
सुबह उनमें फूल खिलने लगें फिर भी पीड़ा
और असहनीय दुख के समय उसका फल
बर्बाद हो जाएगा। 12 हाय, हाय! देश, देश
के बहुत से लोगों का कैसा नाद हो रहा
है, वे समुद्र की लहरों की तरह गरजते हैं!
राज्य- राज्य के लोगों का कैसा गर्जन हो
रहा है, वे तेज धारा के समान नाद करते हैं.
13 राज्य- राज्य के लोग बाढ़ की तरह बहुत
से पानी की तरह आवाज़ करते हैं, परन्तु
वह उन्हें घुड़केंगे, और वे दूर भाग जाएँगे।
वे ऐसे उड़ाए जाएँगे, जैसे पहाड़ों पर की भूसी
हवा से, और धूल बवण्डर से घुमाकर उड़ाई
जाती है। 14 शाम को देखो तो घबराहट है
और प्रात:काल से पहले वे गायब हो गए
हैं. हमको बर्बाद करनेवालों का हिस्सा और
हमारे लूटनेवाले की यही हालत होगी।

18 हाय, पंखों की फड़फड़ाहट से भरे
हुए देश, तुम जो कूश की नदियों
के पार हो; 2 और समुद्र पर दूतों को नरकट
की नावों में बैठाकर पानी के रास्ते से यह
कहकर भेजता है, हे फुर्तीले दूतो, 'उस जाति
के पास जाओ, जिसके लोग ताकतवर और
खूबसूरत हैं, जो शुरु से अब तक डरावने हैं,
जो नापने और रौंदने वाले भी हैं, और जिनका
देश नदियों से बँटा हुआ है। 3 हे दुनिया
के सब निवासियो, जब झन्डा पहाड़ों पर
खड़ा किया जाए, उसे देखना, जब नरसिंगा
फूँका जाए, तब सुनना! 4 क्योंकि प्रभु ने
मुझ से यह कहा, धूप की तेज गर्मी या
कटनी के समय के ओसवाले बादल की
तरह मैं शान्त होकर देखूँगा। 5 क्योंकि अंगूर
तोड़ने के समय से पहले जब फूल फूल
चुके और अंगूर के गुच्छे पकने लगे, तब
वह टहनियों को हंसुओं से काट डालेगा,
और फैली हुई डालियों को तोड़- तोड़कर
फेंक देगा। 6 वे पहाड़ोंके मांसाहारी पक्षियों
और जंगल के जानवरों के लिए इकट्ठे पड़े
रहेंगे और मांसाहारी पक्षी उन्हें नोचते-नोचते
गर्मी का मौसम बिताएँगे और हर तरह के
जंगली जानवर उनको खाते- खाते सर्दी का
मौसम गुज़ारेंगे। 7 उस समय जिस देश के
लोग ताकतवर और खूबसूरत हैं और जो
शुरू से डरावने होते आए हैं। वे नापने और
रौंदनेवाले हैं। उनका देश नदियों से बाँटा गया
है। उन लोगों से सेनाओं के प्रभु के नाम की
जगह सिय्योन पहाड़ पर सेनाओं के प्रभु के
पास भेंट पहुँचाई जाएगी।

19 मिस्र के सम्बन्ध में खतरनाक
नबूवत; देखो प्रभु, तेजी से उड़ने
वाले बादल पर बैठकर मिस्र आ रहे हैं।
उनके यहाँ आने पर मिस्र की मूरतें घबरा

जाएँगी और मन निराश हो जाएगा। 2 मिस्रियों
को मैं एक दूसरे के खिलाफ़ करूँगा। वे
लोग आपस में ही लड़ मरेंगे। भाई-भाई से
और पड़ोसी, पड़ोसी से लड़ेंगे। नगर -नगर
और राज्य -राज्य युद्ध करेंगे। 3 मिस्रियों की
समझ बिगड़ जाएगी। उनकी योजनाओं को
मैं कामयाब न होने दूँगा। वे लोग टोन्हों
और ओझों के पास सलाह मशविरा के लिए
जाएँगे। 4 लेकिन मिस्रियों को मैं एक निर्दयी
शासक के अधीन कर डालूँगा। उसके पास
दया न होगी। यह संदेश प्रभु परमेश्वर का है।
5 समुन्दर का पानी सूख जाएगा और महानदी
सूख जाएगी। 6 नालों में से बदबू आएगी।
मिस्र की नहरों का पानी सूख जाएगा। वहाँ के
नरकट और जल बेंत झुलस जाएँगे। 7 नील
नदी के तटों और कछारों पर जो कुछ बोया
जाएगा। कुछ भी न बचेगा। 8 नील नदी में
मछली पकड़ने के लिए जो लोग बंसी या
जाल डालते हैं, उनके हाथ कुछ न लगेगा।
9 सन से मलमल बनाने वाले तथा सफेद
सूती कपड़े के बुनकर निराश हो जाएँगे।
10 मिस्र के खम्भे बर्बाद किए जाएँगे। सारे
मजदूरों का दिल बैठ जाएगा। 11 सोअन
के बड़े अधिकारी बेवकूफ हैं। फिरौन के
अक्लमन्द, समझ जाने वाले सलाहकारों की
सलाह भी काम न आई। फिर तुम फिरौन से
कैसे कहोगे कि "मैं बुद्धिमान का बेटा हूँ और
पुराने राजाओं के वंश का हूँ? 12 अभी तुम्हारे
बुद्धिमान लोग कहाँ गए ? वे मालूम करके
बताएँ कि सेनाओं के परमेश्वर प्रभु ने मिस्र के
खिलाफ़ क्या इरादा किया है। 13 सोअन के
बड़े अधिकारियों ने बिना सोच समझ काम
किए हैं। नोप(मेम्फिस) के अधिकारी धोखा
खा चुके हैं। जिन पर मिस्र के गोत्रों के प्रधान
लोगों का भरोसा था, उन्होंने मिस्र को भ्रम में
डाल दिया है। 14 प्रभु ने उन्हें भ्रमित किया।
उन्होंने मिस्र को उसके सब कामों में उस
शराबी की तरह कर दिया है, जो उल्टी करता
जाता है और डोलता जाता है। 15 मिस्र के
लिए ऐसा कोई काम न रह जाएगा जो उसके
सिर या पूँछ, अर्थात प्रधान या साधारण से हो
सके। 16 उस दिन मिस्री लोग महिलाओं की
तरह हो जाएँगे और सेनाओं के याहवे के हाथ
बढ़ाए जाने के कारण डर से काँपेंगे,क्योंकि
प्रभु का हाथ उन पर आने को है। 17 यहूदा
का देश मिस्र के लिए आतंक का कारण
बनेगा और जो कोई सेनाओं के याहवे की
उनके तय किए गए इरादे के बारे में सुनेगा,
वह थरथरा जाएगा। 18 उस समय मिस्र देश
में पाँच नगर होंगे, जिसके लोग कनान की
जुबान बोलेंगे और याहवे की शपथ खाएँगे।
उनमें से एक का नाम नाशनगर रखा जाएगा।
19 उस समय मिस्र देश में याहवे के लिए
एक बड़ी वेदी होगी और उसकी सरहद के
पास याहवे के लिए एक खंबा खड़ा होगा।
20 वह मिस्र देश में सेनाओं के याहवे के
लिए निशान और गवाह होगा। जब वे अंधेर
करने वाले के कारण याहवे को पुकारेंगे,तब
वह उनके पास एक बचानेवाला और रक्षक
भेजेंगे और उन्हें आजादी देंगे। 21 तब याहवे
अपने आप को मिस्रियों पर प्रगट करेंगे।उस
समय मिस्री याहवे को जानेंगे और मेलबलि
तथा अन्नबलि चढ़ाकर उनकी आराधना
करेंगे। वे प्रभु के लिए मन्नत मानकर उसे पूरा
भी करेंगे 22 और याहवे मिस्रियों को मारेंगे,
वही मारेंगे और वही उन्हें अच्छा भी करेंगे
और वे याहवे प्रभु की ओर मुड़ेंगे, और वह
उनकी दोहाई सुनकर उन्हें स्वस्थ भी करेंगे।
23 उस समय मिस्र से असीरिया जाने का एक
राजमार्ग होगा, और असीरिया मिस्र में आएँगे
और मिस्री लोग असीरिया को जाएँगे,और
मिस्री असीरियन के साथ मिलकर आराधना

करेंगे। 24 उन दिनों में इस्राएल, असीरिया
और मिस्र तीनों मिलकर सारी दुनिया के लिए
आशीष का ज़रिया बनेंगे। 25 क्योंकि सेनाओं
के प्रभु उनको यह कहकर आशीष देंगे,
धन्य हो मेरी प्रजा मिस्र और मेरा रचा हुआ
असीरिया, और मेरा अपना हिस्सा इस्राएल।

20 जिस साल असीरिया के राजा
सर्गोन ने अपना सेनापति भेजा और
अश्दोद में आकर उससे लड़ाई करके
अश्दोद पर कब्जा लिया, 2 उसी साल
प्रभु ने आमोस के बेटे यशायाह के ज़रिये
कहा,"अपनी कमर से टाट हटाओ और
जूतियाँ उतार डालो।" उसने वैसा किया। वह
नंगा और नंगे पांव यहाँ वहाँ घूमता रहा 3 प्रभु
ने कहा, "जिस तरह मेरा दास यशायाह तीन
साल तक मिस्र और इथियोपिया के लिए
एक निशान की तरह बिना कपड़े और नंगे
पैर घूमता रहा, 4 उसी तरह असीरिया का
राजा मिस्र के कैदियों तथा इथियोपिया के
कैदियों, क्या जवान, क्या बूढ़े सभी को नंगे
बदन और नंगे पैर, गुलामी में ले जाएगा।
यह बात मिस्र के लिए बड़े शर्म की बात
होगी। 5 तब इथियोपिया और मिस्र जिन से
उन्हें बड़ी उम्मीद थी, घबराहट और शर्म से
मर जाएँगे। 6 इसलिए उस दिन समुन्दर के
इस तट के रहने वाले , कहेंगे,"देखो, यह है
हमारी आशा। असीरिया के राजा से बचाव
के लिए मदद हमें कहाँ से मिलेगी और हम
कैसे बच सकेंगे ?"

21 समुद्री तट के उज़ाड और सूखे
स्थान के बारे में नबूवत। जिस तरह
रेगिस्तान में तेज आँधी चलती है, वैसे ही
यह सूखे प्रदेश अर्थात डरावने देश से चली
आती है। 2 मैंने एक डरावना सपना देखा, वह
यह कि धोखेबाज धोखा देता ही रहता है।
हे एलाम, हमला कर दो। हे मादै घेर लो!
डसके कारण लोगों को जो पीड़ा हुई है, वह
सब मैं रोक देता हूँ। 3 इसीलिए मेरी कमर में
दर्द है। जैसे बच्चे के जन्म के समय माँ को
दर्द होता है, वैसा दर्द मुझे भी हो रहा है।
घबराहट की वजह से न ही मैं देख पा रहा हूँ।
और न ही सुन पा रहा हूँ। 4 मेरा मन घबराहट
और डर से भर गया है। जिस शाम की मैं
उम्मीद कर रहा था, उससे मुझे अब डर लग
रहा है। 5 वे मेज़ लगाकर कपड़े बिछाकर,
खाते-पीते हैं। हे प्रधानो, उठो और ढालों
पर तेल रगड़ो।" 6 प्रभु का कहना है,"जाओ
और पहरेदार को ठहराओ। जो कुछ वह
देखता है, आकर बताए। 7 जब वह दो दो
की कतार में घुड़सवारों को, तथा गदहों
और ऊँटों को देखें, उन पर वह तब नज़र
रखें।" 8 तब पहरेदार शेर की तरह दहाड़
उठा, "हे प्रभु मैं हर दिन बुर्ज़ पर खड़ा रहा
और रात में रखवाली करी। 9 अब देखो,
यहाँ सवारों का दल अर्थात दो - दो की
लाईन में घुड़सवारों का दल आ रहा है।
तब एक जन ने कहा,"गिर पड़ा, बेबिलोन
गिर पड़ा। उसके देवताओं की सभी मूर्तियाँ
पृथ्वी पर चकनाचूर कर दी गयी हैं। 10 हे
मरे दाएँ हुए और खलिहान के अनाज, जो
कुछ इस्त्राएल के परमेश्वर ने कहा है, उसे
मैंने बता दिया है। 11 खतरनाक संदेश दूमा
के लिए है। सेईर में से मुझे कोई बुला रहा
है, "हे रखववाले रात का समाचार क्या है?"
12 रखवाले ने सवाल किया, "सुबह और रात
होती है। यदि, तुम पूछना चाहते हो तो पूछो,
फिर लौट कर आना।" 13 अरब के खिलाफ
खतरनाक बातें। ददानी के बटोहियो, तुम्हारी
रात अरब के जंगल में बीतेगी। 14 तेमा देश के
निवासियों, "प्यासे के पास पानी लाये। जो
लोग रोटी लेकर भाग जाते हैं, उनसे मिलने
जाओ। 15 वे लोग नंगी तलवारों, ताने हुए

धनुष और भयंकर युद्ध से भाग खड़े हुए है।
16 प्रभु ने मुझ से कहा है, “मजदूर के सालों के
अनुसार एक ही साल में केदार की सारी शान
मिटायी जाएगी। 17 केदार के निपुण धनुष
चलाने वालों की गिनती कम हो जाएगी।
क्योंकि यह इस्त्राएल के परमेश्वर का कहना
है।”

22 यरूशलेम के बारे में मुझको यह
संदेश मिलाः “क्या हो रहा है ? सभी
लोग छत पर क्यों जा रहे हैं? 2 पूरे शहर में
हाहाकार मचा हुआ है मैं इस शहर में क्या
देख रहा हूँ। अकाल और बीमारी से होने
वाली मौत के कारण शव पड़े हुए हैं। 3 तुम्हारे
सारे अगुवे भाग रहे हैं । बिना प्रतिरोध जताए
वे समर्पण कर रहे हैं। जो लोग छिप कर
भागना चाह रहे थे, वे भी पकड़ लिए गए।
4 रोने के लिए मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे
शान्ति देने की कोशिश मत करो। जब मेरे
लोग नाश हो रहे हैं, उनके लिए मैं रोऊँगा।
5 ओह! कुचल डालने वाली मुसीबतों का
वह दिन हाहाकार और आतंक का समय
जो प्रभु दर्शन की घाटी में होगा। यरूशलेम
की दीवारें टूट चुकी हैं और मौत की कराह
पहाड़ी क्षेत्र से आ रही है। 6 एलोमाइट्स
तीर चलाने वाले लोग हैं। कीर के लोग
ढाल पकड़ना जानते हैं। 7 वे लोग तुम्हारी
खूबसूरत घाटियों को भर देते हैं और तुम्हारे
फाटकों के बाहर भीड़ लगाते हैं। 8 यहूदा
अब सुरक्षा के दायरे में नहीं रहा। हथियार
खरीदने के लिए तुम हथियार घर की तलाश
में हो। 9 यरूशलेम की शहरपनाह की तुम
जाँच करते हो ताकि जहाँ मरम्मत की ज़रूरत
है, वह की जा सके। तुम निचले तालाब
में पानी इकट्ठा करते हो। 10 घरों की जाँच
पड़ताल के बाद उन्हें तोड़ देने की ताक
में रहते हो, ताकि तुम्हें पत्थर मिल जाए।
11 शहर की दीवारों के बीच तुम पुराने कुण्ड
के पानी के लिए एक जगह बनाना चाहते
हो। लेकिन तुम्हारा अथक परिश्रम बेकार
रहेगा, क्योंकि तुमने परमेश्वर से कोई मदद
नहीं माँगी। उन्होंने तो इसकी योजना बहुत
पहले से बनाई थी। 12 प्रभु जो शक्तिशाली हैं,
उन्होंने चाहा है कि तुम विलाप करो। यह भी
कि तुम अपने बलवईपन के कारण अपने
सिर के बाल उतारो और अपना दुख जाहिर
करने के लिए टाट ओढ़ लो। 13 लेकिन इसके
बावजूद, तुम नाचते रहे, खेलते रहे। तुमने
पशु बलि चढ़ाई, जश्न किया और शराब
पीकर यह कहा“चलो, खाएँ, पिएँ और ऐश
करें, किसने जाना कल हम जिएँगे भी या
नही।” 14 परमेश्वर सर्वशक्तिमान ने मुझ से
कहा है, “जब तक मर न जाओ इस गुनाह की
सज़ा से बच नहीं सकते। 15 इसके अलावा,
प्रभु का संदेश मुझे यह मिला है कि शेबना
नाम के उस भण्डारी के पास जो राजघराने
के काम पर ठहराया गया है, जाकर यह
कहो, यहाँ तुम क्या कर रहे हो? 16 तुम
अपने आप को क्या समझते हो ? तुम चट्टान
पर अपने लिए एक मकबरा बना रहे हो ?
17 प्रभु तुम को पकड़ कर हाँकने वाले हैं।
तुम जो ताकतवर हो, गुलामी में जाओगे।
18 एक गेंद की तरह वह तुम्हें बहुत दूर निर्जल
जगह पर पहुँचा देंगे। तुम लोग वहाँ पर
मर जाओगे और शान वाले रथ बेकार पड़े
रहेंगे। तुम अपने सृष्टिकर्ता के लिए लज्जा का
कारण ठहरोगे। 19 हाँ, मैं तुम्हारी जगह से
बाहर निकाल दूँगा। तुम्हारे ऊँचे पद से तुम्हें
उतार डालूँगा। 20 तब मैं हिल्कियाह के बेटे
एल्याकीम को बुलाऊँगा ताकि वह तुम्हारी
जगह ले। 21 वह तुम्हारी शाही पोशाक, पद
और अधिकार को ले लेगा। वह यरूशलेम
और यहूदा के लोगों के लिए पिता ठहरेगा।

22 दाऊद के परिवार की चाभी मैं उसे दूँगा।
शाही महल में यह सबसे बड़ा औहदा है। वह
दरवाज़े खोलेगा, कोई बन्द न कर सकेगा।
वह जब बन्द करेगा, कोई खोल न पाएगा।
23 मेरे नाम की खातिर वह मेरे लिए सम्मान
लाएगा । मैं एक तम्बू के डंडे की तरह उसे
स्थिर करूँगा। 24 उसके पिता के घराने की
सारी शान, वंश और सन्तान, सब छोटे- छोटे
बर्तन, क्या कटोरे क्या सुराहियाँ, सब उस
पर टाँगी जाएँगी। 25 सर्वशक्तिमान प्रभु का
कहना है, जब ऐसा होगा, तब मैं डंडे को
उखाड़ डालूँगा। वह पृथ्वी पर आ गिरेगा।
जिस चीज़ को वह संभाले होगा वह सब गिर
पड़ेग। यह मैं प्रभु कहता हूँ।

23 सोर के सम्बन्ध में मुझे यह संदेश
मिला, “तर्शीश के जहाजो, तुम रो,
क्योंकि वह उजड़ गया। वहाँ न कोई मकान
है, न ही बन्दरगाह।यह बात कुप्रुस देश ने
उनको दिखाई 2 खामोशी में विलाप करो।
तुम लोग जो तट पर रहते हो या सिदोन
के निवासी हो, तुम्हारे व्यापारियों ने समुद्र
पार किया। 3 गहरे पानी में से होकर वे
तुम्हें मिस्र से लाए और नील नदी के तट
की फसल तुम्हारे लिए लाए। दुनिया में
तुम एक मशहूर व्यापारी थे। 4 लेकिन अब
तुम सिदोन, जो समुद्र पर किले की तरह
थे, शर्मिन्दा होगे। समुद्र कहता है मेरे पास
सन्तान नहीं है।” 5 जब मिस्र के बारे में
सुना जाएगा, तब बड़ा दुख मनाया जाएगा।
6 तर्शीश को भाग जाओ। तुम सभी जो समुद्र
के किनारे रहते हो, विलाप करो। 7 क्या यह
तुम्हारी खुशी से भरा स्थान है, जो बहुत
पुराने समय से था और जिसके पाँव उसे दूर
बसने के लिये ले जाते थे? 8 सोर के ऊपर
यह तबाही कौन लाया है, जो कि साम्राज्य
को बनाने वाला है और एक बड़ा व्यापारी
है? 9 प्रभु सर्वशक्तिमान ने तुम्हारे घमण्ड को
तोड़ने और बड़ा समझे जाने वाले लोगों की
बेइज़्ज़ती करने के लिए ऐसा किया 10 तर्शीश
की बेटी उफनती नील नदी की तरह फैल
जाओ, अब किसी तरह की कोई सीमा नहीं
11 समुद्र के ऊपर प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाया
है। वह पृथ्वी के सभी देशों को हिलाते
हैं। फिनीशिया के खिलाफ़ उन्होंने बोला है
और उसकी ताकत को कम कर दिया है।
12 वह कहता है, “हे सिदोन , फिर कभी
खुश मत होना, एक समय तुम खूबसूरत शहर
थे लेकिन अब कभी भी शक्तिशाली न बन
सकोगे। यदि तुम भाग भी जाओ, तुम्हें शान्ति
न मिलेगी। 13 बेबिलोन की ओर निगाह करो
- वहाँ के लोग जा चुके हैं। असीरियाई लोगों
ने बेबिलोन को जंगली जानवरों को सौंप
दिया है। इसकी दीवारों के चारों ओर उन्होंने
एक घेरा डाल रखा है। इसके महलों को
तोड़ डाला है। और इसे घूरा बना डाला है।
14 तर्शीश के जहाजो विलाप करो, क्योंकि
तुम्हारा बन्दरगाह बर्बाद किया जा चुका है।
15 राजा की सत्तर साल की उम्र की तरह सूर
को भुला दिया जाएगा। इसके बाद शहर में
फिर से जीवन आ जाएगा। और एक वेश्या
की तरह मीठा गीत गाएगा। 16 अपने प्रेमियों
से बहुत समय तक अनुपस्थित, वह एक
वीणा लेगा। वह सड़कों पर घूमते-घूमते गीत
गाएगा, ताकि उसे फिर से याद किया जाए।
17 हाँ सत्तर साल बाद प्रभु सोर को जागृत
करेंगे। लेकिन कुछ बदलाव नहीं होगा। वह
अपने पुराने गलत कामों में लग जाएगा।
18 उसके व्यापार की प्राप्ति और उसके
छिनाले की कमाई याहवे के लिए पवित्र की
जाएगी। वह भण्डार में नहीं रखी जाएगी ,न
ही उसे इकट्ठा किया जाएगा, क्योंकि उसके
व्यापार की प्राप्ति उन्हीं के काम आएगी

जो याहवे के सामने रहा करेंगे, कि उनको बहुतायत से खाना और चमकीला कपड़ा मिले।

24 देखो प्रभु इस पृथ्वी को बर्बाद करने वाले हैं और यह पृथ्वी बिल्कुल वीरान होने वाली है। वह लोगों को सारी दुनिया में बिखेर देंगे। 2 पुरोहित और साधारण लोग (आम आदमी) नौकर और मालिक, घर में काम करने वाली नौकरानियाँ खरीदने वाले, बेचनेवाले, उधार देने वाले, उधार लेने वाले, बैंकर्स और प्राणी कोई भी बच नहीं पाएगा। 3 सारी पृथ्वी पूरी तरह खाली हो जाएगी और लूट ली जाएगी, यह बात परमेश्वर कह चुके हैं। 4 पृथ्वी सूख गई है, फसल मुर्झा गई है। आकाश से बारिश नहीं हो रही है। 5 पृथ्वी पर अपराध के कारण बुरा असर पड़ा है, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के बताए रास्ते को तोड़-मरोड़ दिया। उन्होंने परमेश्वर की युगानुयुग की वाचा को तोड़ा है। 6 इसलिए इस पृथ्वी और इस पर रहने वालों पर सज़ा आई है। सब कुछ विरान हो चुका है। आग के कारण वीरान हो चुका है। कुछ ही हैं ,जो ज़िन्दा बचे हैं। 7 ज़िन्दगी की सभी खुशियाँ जा चुकी होंगी। अंगूर नहीं लगेंगे और दाखरस भी न रहेगा। खुशी मनाने वाले रोएँगे -धोंएँगे। 8 खंजड़ियों की आवाज़ समाप्त हो जाएगी। जश्न मनाने की आवाज़ नहीं सुनाई देगी। वीणा की मधुर आवाज न रहेगी। 9 दाखरस और गीतों की खुशी खतम हो गई है। दाखमधु मुँह में कड़वा हो जाएगा। 10 शहर में कोलाहल है। हर घर को चोरी-डकैती से बचाने के लिए ताला लगाया गया है। 11 सड़कों पर भीड़ लगी हुई है, और दाखमधु की माँग कर रही है। आनन्द जा चुका है। किसी को प्रसन्नता नहीं है। 12 शहर वीरान हो चुका है। इसके फाटक टूट चुके हैं। 13 सारी दुनिया का यही हाल है यह बिल्कुल इस तरह है जैसे कि जैतून पेड़ पर या अंगूर लता फसल के बाद छोड़ दिए गए हों। 14 लेकिन बचे हुए लोग खुशी से गीत गाते हैं। पश्चिम के लोग प्रभु की महानता की बड़ाई करेंगे। 15 पूर्व में प्रभु की बड़ाई करेंगे। समुद्र के तट पर प्रभु के नाम का धन्यवाद करो, जो इस्राएल के परमेश्वर हैं। 16 दुनिया के कोने कोने से हमें ऐसे गीत गाने की आवाज सुनाई देती है, जो सच्चे परमेश्वर के लिए है। लेकिन मेरा दिल बहुत दुखी है। मैं निराश हूँ क्योंकि बुराई बहुत बढ़ चुकी है। सब धोखेबाज़ी है। 17 हे पृथ्वी के लोगो तुम्हारे लिए आतंक और जाल होगा। 18 जो लोग भाग खड़े होंगे, वे फँस जाएँगे और जो जाल से निकल जाएँगे, वे फ़न्दे में फँसेंगे। 19 पृथ्वी टूट चुकी है और बर्बाद हो गई है। सब खतम हो गया है, बेकार हो गया है। 20 एक शराबी की तरह पृथ्वी लड़खड़ा रही है। तूफान में एक लहलहाने वाले तम्बू की तरह हो रही है। इसके अपराध गिनती में इतने हो गए हैं, इसलिए अब इसके गिरने के बाद उठना मुश्किल है। 21 उस दिन परमेश्वर बलवई फिरिश्तों और इस दुनिया के घमण्डी शासकों को दण्ड देगें। 22 उनको पकड़कर जेल में डाला जाएगा। 23 इसके बाद सिय्योन पहाड़ पर सर्व शक्तिमान परमेश्वर विराजमान हो जाएँगे। वह यरूशलेम से राज्य करेंगे। महिमा ऐसी होगी कि उसकी तुलना सूरज-चाँद की रोशनी से नहीं कर सकते हैं।

25 हे प्रभु, मैं आपको इज़्ज़त दूँगा और स्तुति करूँगा, क्योंकि आप ही मेरे परमेश्वर हैं। आप आश्चर्य के काम करते हैं। इन सब बातों के बारे में आपने पहले ही, योजना बनाई थी और अब वे बातें पूरी हो रही हैं। 2 बड़े -बड़े शहरों को आपने

मिट्टी के ढेर में बदल डाला। मजबूत दीवारों
वाले शहर खण्डहर बन गए हैं। खूबसूरत
महल गायब हो चुके हैं। 3 इसलिए ताकतवर
देश आपकी बड़ाई करें। तूफान में आप ही
संभाल सकते हैं। एक ज़रूरतमन्द इन्सान के
लिए बरसात और तपन में आप ही पनाह
की जगह हैं। 4 लेकिन गरीबों के लिए आप
तूफान में शरणस्थान और गर्मी के समय में
छाया हैं 5 जैसे पानी को गर्मी सुखा देती
है या मरूस्थल की भीषण गर्मी, लेकिन
आपने दूसरों देशों के दहाड़ने को रोक दिया।
बादलों की छाया से आपने देश को ढाँप
दिया। इस तरह से निर्दयी लोगों के घमण्डी
गीतों को रोक दिया गया। 6 यरूशलेम में
प्रभु सर्वशक्तिमान सारी दुनिया के लोगों
के लिए एक भोज करेंगे। यह अच्छा और
स्वादिष्ट होगा। इसमें दाखमधु और मांस
भी होगा। 7 उस दिन वह पृथ्वी पर जो उदासी
और मौत का साया है, उस को हटा देंगे।
8 तब हमेशा के लिए मौत को निगल लिया
जाएगा। शक्तिशाली प्रभु सभी आँसुओं को
पोछ डालेंगे। इनके लोगों की हँसी और
शर्मिन्दगी हटायी जाएगी। यह बात प्रभु कह
चुके हैं। 9 उस दिन लोग एलान करेंगे, यही
हमारे परमेश्वर हैं। हमने उन पर भरोसा किया
है और इन्होंने हमें बचाया। यह वह परमेश्वर
हैं जिन्होंने हमें बचाया। उस आज़ादी के
लिए हम उन्हें धन्यवाद दें। 10 परमेश्वर का
भलाई का हाथ हम पर बना रहेगा। जिस
तरह से घास-फूस को रौंदा जाता है, वही
हालत मोआब की होगी। 11 और वह उसमें
अपने हाथ इस तरह से फैलाएगा,जैसे तैरने
वाला अपने हाथ फैलाता है। लेकिन याहवे
उसकी चालाकी और घमण्ड दोनों ही को
तोड़ डालेंगे। 12 और वह तुम्हारे न जीते जा
सकने वाले किलों को झुकाकर नीचा करेंगे,
यहाँ तक कि ज़मीन पर पटककर मिट्टी में
मिला देंगे।

26 उस समय यहूदा के सभी लोग यह
गीत गाएँगे, कि हमारा शहर मजबूत
है। हम परमेश्वर के बचाव की ढाल से
सुरक्षित हैं। 2 जो लोग सही चाल चलन के
हैं उनके लिए दरवाजों को खोल दो, विश्वास
योग्य लोगों को भीतर आने दो। 3 जो लोग
आप पर भरोसा रखते हैं उनको आप पूरी
शान्ति देते हैं अर्थात जिनका ध्यान आप
पर लगा हुआ है। 4 प्रभु पर सदैव भरोसा
रखो, क्योंकि वह हमेशा की चट्टान हैं। 5 वह
घमण्डी को नीचा कर देते हैं और अहंकारी
को मिट्टी में मिला देते हैं। उनकी दीवारें ढह
जाती हैं। 6 वे गरीब और शोषित के पैरों
से कुचले जाते हैं। 7 लेकिन जिनका चरित्र
सही है उनके लिए आप न्यायी परमेश्वर हैं।
उनके आगे-आगे रास्ते को ठीक करते जाते
हैं। 8 प्रभु आपकी बातों को मानने में हमें
अच्छा लगता है। हम चाहते हैं कि हमारे
द्वारा आपके नाम की बड़ाई हो। 9 मैं पूरी रात
आपको चाहता रहा, मैं पूरी लगन से ऐसा
करता रहा। जब आप इस दुनिया का इन्साफ
करने आएँगे तब लोग बुराई से मुँह मोड़ेंगे
और सही करेंगे। 10 दुष्ट के लिए आपकी
भलाई उसको भला नहीं बनाती है। वे बुरा
करना जारी रखते हैं और आपकी शान पर
ध्यान नहीं देते हैं। 11 जब आप धमकी देते हैं,
वे नहीं सुनते। वे आपकी उठी हुई मुट्ठी को
नहीं देखते। आप उन्हें दिखाईये कि अपने
लोगों को बचाने में उनकी बहुत दिलचस्पी
है। शायद वे तब शर्मिन्दा होंगे। आग आपके
दुश्मनों को भस्म कर डालेगी। 12 प्रभु आप
हमें शान्ति देंगे। आज हमारे पास जो कुछ
भी है वह आप ही के कारण है। 13 हमारे
प्रभु परमेश्वर, दूसरों ने हम पर राज्य किया

है, लेकिन हम आपकी आराधना ही करते
हैं। 14 हम जिनकी आराधना पहले करते थे,
वे मर चुके हैं। वे कभी वापस नहीं आएँगे।
आपने उन पर हमला करके बर्बाद कर
दिया। 15 प्रभु हम आपकी बड़ाई करते हैं।
आपने हमारे देश को महान बनाया है। हमारी
सीमाओं को बढ़ाया भी है। 16 दुख में प्रभु
हमने आपको खोजा। हम आपके अनुशासन
के बोझ से दबे हैं। 17 हम ऐसी महिला की
तरह हैं जो बच्चे को जन्म देने वाली है ,और
दर्द की वजह से चिल्ला उठती है। 18 हम भी
पीड़ा में कराह रहे हैं, लेकिन इन दुखों से कुछ
फायदा नहीं है। दुनिया को बचाने के लिए
हमने कुछ भी नहीं किया है। संख्या बढ़ाने
के लिए कोई भी पैदा नहीं हुआ है। 19 लेकिन
इसके बावजूद हमें मालूम है कि जो प्रभु के
हैं, वे जीवित रहेंगे। उनकी देह फिर से जी
उठेंगी। जो लोग ज़मीन में दफ़नाए गए हैं
वे फिर से जीकर खुशी से गाएँगे। क्योंकि
परमेश्वर के जीवन का प्रकाश उनके लोगों
पर ओस की तरह होगा और पृथ्वी मुर्दों को
लौटा देगी 20 अपने घर जाकर, मेरे लोगो,
घर के दरवाजे बन्द करो। जब तक तुम्हारे
दुश्मनों के खिलाफ़ परमेश्वर का गुस्सा शान्त
न हो जाए, छिपे रहो। 21 देखो संसार के लोगों
के अपराधों के लिए सज़ा देने प्रभु आने वाले
हैं। जिन लोगों की हत्या की गई थी, पृथ्वी
उन्हें और छिपा न सकेगी। वे लोग बाहर
लाए जाएँगे, ताकि सभी को देख सकें।

27 उस दिन परमेश्वर अपनी तेज और
फुर्तीली तलवार से लिव्यातान
नामक तेजी से चलने वाले साँप को दण्ड
देंगे। यह साँप हिश- हिश करने वाला, रेंगने
वाला समुद्र का अजगर है जिसका वध
किया जाएगा। 2 उस समय हम मनमोहक
दाखलता के बारे में गाएँगे। 3 मैं उसकी
देखभाल करूँगा और सभालूँगा। हर दिन
मैं इसे पानी दूँगा। रात दिन शत्रुओं से रक्षा
करता रहूँगा, ताकि कोई उन्हें नुक्सान न
कर पाए। 4 इस्राएल के विरोध मेरा गुस्सा
शान्त हो जाएगा। यदि मुझे काँटे आदि
उसे तकलीफ देते दिखेंगे तो मैं उन्हें जला
डालूँगा। 5 ये शत्रु आत्म समर्पण करेंगे, शान्ति
और सुरक्षा चाहेंगे तो वे बच सकेंगे। 6 समय
आने वाला है जब मेरे लोग जड़ पकड़ेंगे।
इस्राएल फलेगा, फूलेगा और फल से पृथ्वी
को भर देगा। 7 क्या परमेश्वर ने इस्राएल
को वैसे ही दण्ड दिया जैसे उसके शत्रुओं
को दिया था? नहीं ! क्योंकि उन्होंने उनका
सर्वनाश किया। 8 लेकिन इस्राएल को थोड़ी
देर के लिए दण्ड दिया। उसे देश से निकाल
दिया, जैसे कि पूर्व से तूफानी हवा आकर
उड़ा ले जाती है। 9 परमेश्वर ने ऐसा इस्राएल
को शुद्ध करने के लिए किया। जब वह यह
सब समाप्त करेंगे। तब सभी देवी देवताओं
की वेदियाँ धूल में मिलाई जाएँगी। तब
अशेरा का कोई खंबा न होगा, जिस पर धूप
जलाया जाए। 10 इस्राएल के मजबूत शहर
खामोश हो जाएँगे। वे खाली हो जाएँगे। घर
यों ही छोड़ दिए जाएँगे। सड़क घास से
ढक जाएगी। मवेशी वहाँ चरेंगे और जुगाली
करेंगे। 11 लोग पेड़ों की सूखी डालियों की
तरह हैं। ऐसी जिन्हें तोड़ कर बर्तन के
नीचे की आँच के लिए इस्तेमाल करते हैं।
इस्राएल एक मूर्ख और बेवकूफ राष्ट्र है
क्योंकि इसके लोग परमेश्वर को छोड़ चुके
हैं। इसलिए जिन्होंने इन को बनाया है, वह
किसी तरह की दया न दिखाएँगे। 12 लेकिन
फिर भी एक ऐसा समय आएगा, प्रभु अनाज
के दानों की तरह एक -एक करके उठाएँगे।
वह उनको फरात नदी से लेकर मिस्र के
नाले तक लाएँगे। 13 उस समय तुरही फूंकी

जाएगी। बहुत से लोग जो निकाले जाने के
कारण असीरिया और मिस्र में रहते होंगे,
आकर यरूशलेम में पहाड़ पर आराधना
करेंगे।

28 सामरिया अवश्य नाश होगा, जो
कि इस्राएल के पियक्कड़ों के लिए
घमण्ड का कारण है। यह घनी घाटी में
है, लेकिन इसकी खूबसूरती अचानक चली
जाएगी। 2 प्रभु इसके विरोध में शक्तिशाली
असीरिया को भेजेंगे। घनघोर बारिश और
ओलाबारी की तरह वे इन लोगों पर बरस
पड़ेंगे और भूमि पर पटक डालेंगे। 3 इस्राएल
के पियक्कड़ों को सामरिया पर गर्व है, अपने
दुश्मनों के पैर के नीचे कुचला जाएगा। 4 यह
उपजाऊ घाटी में है लेकिन इसकी चकाचौंध
कर देने वाली खूबसूरती पल भर में खतम
हो जाएगी। जिस तरह कच्चे अंजीर के फल
तोड़ लिए जाते हैं, उसी तरह सामरिया को भी
समय से पहले उजाड़ दिया जाएगा। 5 तब
अन्त में प्रभु सर्वसामर्थी स्वयं इस्राएल के
महिमामय मुकुट होंगे। वह बचे लोगों के लिए
महिमा और घमण्ड का कारण होंगे। 6 वहाँ
के जजों को वह ईमानदारी से न्याय करने
की प्रेरणा देंगे। अपने लड़ने वालों को जो
दरवाजे के पास खड़े रहते हैं,वह हिम्मत देंगे।
7 अब हालांकि इस्राएल को शराबी मार्गदर्शन
देते हैं, पुरोहित और भविष्यद्वक्ता शराब
और बियर के नशे से लड़खड़ाते हैं, अपनी
जिम्मेदारियों को निभाने में वे असफल रहते
हैं। 8 उनकी मेजें वमन(उलटी) से भरी हुई
हैं। 9 वे कहते हैं, परमेश्वर हमारे बारे में क्या
सोचते हैं? इस तरह से वह हमसे बातें क्यों
करते हैं ? क्या हम न बोल पाने वाले छोटे
बच्चों की तरह हैं ? 10 वह हमें बार-बार कहते
हैं,कि हमें क्या करना है। 11 इसलिए कि लोग
सुनते नहीं, परमेश्वर विदेशी आक्रमण करने
वालों की भाषा में बोलेंगे। 12 परमेश्वर के
लोगों को उनकी भूमि (देश) में शान्ति और
चैन मिलता,लेकिन उन्होंने आज्ञा न मानी।
13 इसलिए परमेश्वर एक ही संदेश बार-बार
देंगे। इसके बावजूद इस संदेश से ठोकर
खाएँगे। उन्हें चोट लगेगी, वे फँस जाएँगे और
पकड़े जाएँगे। 14 हँसी उड़ाने वाले शासको,
यरुशलेमवासी प्रजा के गवर्नरो, प्रभु की
बातें सुनो! 15 तुमने कहा है कि हमने मौत
से वाचा बाँधी और अधोलोक से प्रतिज्ञा
कराई है; इसलिए मुसीबत जब बाढ़ की
तरह आए, तब हमारे पास न आएगी; क्योंकि
हमने झूठ की शरण ली और धोखे की
आड़ में छिपे हुए हैं। हमने झूठ और धोखे
से एक मजबूत सुरक्षा पहरा बना रखा है।
16 इसलिए सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं,"देखो
मैंने सिय्योन में एन नेंव का पत्थर रखा है,
यह एक जाँचा हुआ पत्थर, कोने का कीमती
और बहुत मज़बूत नेव के योग्य पत्थर: और
जो व्यक्ति ईमान रखेगा वह उतावली न
करेगा। 17 इन्साफ को नापने की डोरी और
ईमानदारी के जीवन को साहुल से तुम अपनी
दीवार को परख सकते हो। तुमने झूठ से दूरी
बनाई है, इसलिए एक ओले का तूफान इसे
गिरा देगा। इसलिए कि यह धोखाधड़ी से
बना है, शत्रु एक बाढ़ की तरह आकर इसे
ढाह देगा। 18 मौत से बचने के लिए तुमने
जो सौदा किया था, उसे मैं तोड़ डालूँगा।
19 हर सुबह और रात में यह सहलाब आएगा,
जिससे तुम बहा लिए जाओगे। 20 तुम्हारे लिए
कोई शरणस्थान नहीं है - जो बिस्तर तुमने
अपने लिए बनाया है वह लेटने के लिए
काफी नहीं है। कम्बल इतने छोटे हैं कि
उन से देह ढकती भी नहीं हैं। 21 गुस्से में
प्रभु अचानक आएँगे, जैसे उन्होंने परिज़्ज़ीम
पहाड़ और गिबोन की घाटी में अपना गुस्सा

दिखाया था, वैसा ही अब वह फिर दिखाएँगे,
जिससे कि वह अपना अनोखा काम करें
22 इसलिए और ठट्ठा मत करो, नहीं तो तुम्हें
और ज़्यादा सज़ा मिलेगी। प्रभु परमेश्वर मुझ
से कह चुके हैं कि उन्होंने तुम्हें नाश करने
की ठान ली है। 23 मैं गिड़गिड़ाता हूँ मेरी सुन
लो। 24 क्या एक किसान सदा जुताई करता
है और बोआई नहीं करता। क्या वह हमेशा
ज़मीन तैयार करता है और बीज नहीं बोता।
25 क्या वह अन्त में सतह चौरस करके उसमें
सोआ नहीं बोता और उस पर जीरा नहीं
छितराता तथा रेघारियों में गेहूँ और जौ को
उनकी जगह में और बाजरे को उसकी जगह
में नहीं बोता. 26 परमेश्वर ने किसान को समझ
दी है कि क्या करे। 27 सब तरह की फसल
के लिए वह एक ही तरीका इस्तेमाल नहीं
करता लेकिन सोआ छड़ी से तथा जीरा
सोंटे से झाड़ा जाता है। 28 खराब अनाज को
आसानी से कुचला जाता है, लेकिन हमेशा
नहीं, क्योंकि ऐसा करने से गाड़ी के पहिए
और घोड़े उसे कुचल कर बर्बाद कर डालेंगे।
29 यह भी परमेश्वर ठहराते हैं। वह अजीब
योजना बनाने वाले और बहुत बुद्धिमान हैं।

29 दाऊद के शहर अरीएल का सर्वनाश
ज़रूर होगा। हर साल तुम तमाम
बलिदान चढ़ाते हो। 2 लेकिन तुम्हारे ऊपर
ढेर सारी मुसीबतें लाऊँगा और बड़ा
रोना-धोना होगा। क्योंकि यरूशलेम का हाल
वही होगा जो उसके नाम एरियल का अर्थ है
,जो है- एक वेदी जो खून से ढकी है। 3 मैं
यरूशलेम को घेर कर तुम्हारा शत्रु बनूँगा।
। 4 तुम्हारी आवाज़ एक पृथ्वी पर से जहाँ
तुम दफ़नाए गए थे फुसफुसाएगी। 5 लेकिन
अचानक तुम्हारे निर्दयी शत्रु भूसे की तरह
हवा से उड़ा दिए जाएँगे। 6 एक पल में प्रभु
उनके खिलाफ़ गर्जन, भूकम्प, बड़ी आवाज़,
तूफान और जला देने वाली आग की तरह
आएँगे। 7 जितने भी देश यरूशलेम के विरोध
में आएँगे वे सभी नाश होंगे जो लोग उसकी
दीवार को तोड़ना चाहेंगे, वे एक दर्शन की
तरह लोप हो जाएँगे। 8 एक भूखा आदमी
खाना खाने का स्वप्न देखता है, लेकिन भूखा
ही रहता है। एक प्यास इन्सान पीने का
स्वप्न देखता है, लेकिन सुबह तक प्यासा ही
रहता है। इसी तरह तुम्हारे दुश्मन यरूशलेम
पर जीत का स्वप्न देखेंगे, लेकिन कोई
फायदा नहीं। 9 क्या तुम्हें आश्चर्य होता है?
क्या तुम्हें विश्वास नहीं हैं ? यदि ऐसा है
तो जाओ अन्धे रहो। तुम मूर्ख हो, लेकिन
शराब की वजह से नहीं। तुम मदिरा के कारण
नहीं लड़खड़ाते हो। 10 परमेश्वर ने तुम्हारे
ऊपर गहरी नींद उण्डेल दी है। उन्होंने तुम्हारे
भविष्यद्वक्ताओं और नबियों की आँखें बन्द
कर दी हैं। 11 ये भविष्य की बातें तुम्हारे
लिए बन्द किताब की तरह हैं। जब तुम पढ़ने
वालों को देते हो, वे कहेंगे, हम इसे पढ़ नहीं
सकते क्योंकि इसमें मोहर लगी है। 12 जो पढ़
नहीं सकता हो, उससे यह कहा जाए कि इसे
पढ़ो, वह कहेगा, मुझे पढ़ना ही नहीं आता,
कैसे पढ़ूँ? 13 इसलिए प्रभु कहते हैं- ये लोग
दावा करते हैं कि वे मेरे हैं। अपने ओठों
से वे मेरा आदर करते है, लेकिन उनका
मन मुझ से दूर है। उनकी उपासना मेरे लिए
कोई अर्थ नहीं रखती है। 14 इसलिए मैं उन
कपटियों के बीच अद्‌भुत काम करूँगा। मैं
दिखाऊँगा। कि इन्सानी बुद्धिमानी बेवकूफी
है और यहाँ तक कि सबसे बुद्धिमान लोगों
के पास भी समझ की कमी है। 15 जो लोग
प्रभु से अपनी योजनाओं को छिपा कर रखते
हैं जो प्रभु को मालूम नहीं होने देते कि वे
क्या करते हैं। तुम कहते हो, “प्रभु को यह
ज्ञान नहीं कि क्या हो रहा है।” 16 तुम सब

कुछ उलट फेर कर देते हो। क्या कुम्हार
मिट्टी के समान हो सकता है? 17 क्या कुछ
ही दिनों में लेबनोन उपजाऊ खेत नहीं बनेगा
और उपजाऊ खेत को जंगल नहीं समझा
जाएगा? 18 उस दिन बहरे लोग उन बातों को
सुनेंगे, जो किताब से पढ़ी जाएँगी। अँधे लोग
अन्धेरे की उदासी में से देखने पाएँगे। 19 दीन
लोग ताजी खुशी से जो प्रभु देते हैं भर जाएँगे।
जो लोग गरीब हैं वे प्रभु में आनन्दित होंगे।
20 जो लोग डराते और धमकाते हैं, वे नहीं
रहेंगे और जो बुरी योजना बनाते हैं, मार डाले
जाएँगे। 21 जो लोग निरपराधी को अपराधी
झूठ-मूठ में ठहराते हैं अचानक चल बसेंगे।
जो लोग न्याय बिगाड़ने के लिए चालबाज़ी
करते हैं और निरपराध को नाश करने के
लिए झूठ बोलते हैं, न रहेंगे। 22 इसलिए
प्रभु जिन्होंने अब्राहम को छुड़ाया था कहते
हैं, आज से मेरे लोगो को शर्मिन्दा न होना
पड़ेगा। 23 क्योंकि वे जब अपने तमाम बच्चों
और संसारिक आशीषों को देखेंगे, तब मेरे
नाम को पवित्र जानेंगे। वे इस्राएल के परमेश्वर
के सामने स्तब्ध हो जाएँगे। 24 उस समय
गलती करने वाले सच्चाई पर भरोसा करेंगे।
जो लोग हमेशा शिकायत करते हैं, सीखेंगे।

30 मेरे खिलाफ़ बगावत करने वाले
बच्चों के लिये बर्बादी है, यह प्रभु
कहते हैं। उनका कहना है कि तुम ऐसी
योजना बनाते हो, जो मेरी इच्छा के विरोध
में है। तुम ऐसी योजनाओं को बनाते हो,
जो मेरी आत्मा से नहीं हैं। इस तरह तुम
अपराधों का ढेर लगाते हो। 2 तुम बिना
मुझ से सलाह लिए मिस्र से मदद लेने गए।
सुरक्षा के लिए तुम वहाँ के राजा के पास
गए। 3 लेकिन उस पर भरोसा करने से तुम
लज्जित ही होगे। 4 क्योंकि हालांकि उसकी
ताकत सोअर और हानेस तक है, 5 लेकिन
वह तुम्हारी सहायता बिल्कुल न करेगा।
6 मिस्र के भयंकर जंगल में जानवरों को
धीरे-धीरे चलते देखो। गधों और ऊँटों के
ऊपर खज़ाना रखा हुआ है, ताकि मिस्र की
मदद हो सके। जंगल में से होकर वे गुज़रते
है, जहाँ जहरीले साँप और शेर हैं। ऐसा सब
कुछ है और मिस्र तुम्हें वापस कुछ नहीं
देगा। 7 मिस्र की प्रतिज्ञाएँ बेकार हैं। मैं उसे
हानि न पहुँचाने वाला अजगर कहता हूँ।
8 मिस्र के बारे में जाकर यह शब्द लिखो।
तब वे इस्राएल के अविश्वास के बारे में
अन्त तक गवाह ठहरेंगे। 9 इसलिए कि ये
लोग ज़िद्दी हैं जो परमेश्वर के निर्देशों की
परवाह नहीं करते हैं। 10 वे नबियों से कहते
हैं, "चुप हो जाओ, हमें तुम्हारी रिपोर्ट की
ज़रूरत नहीं है, वे कहते हैं, "हमें सच्चाई मत
बताओ, हमें अच्छी-अच्छी बातें बताओ।
हम से झूठ बोलो। 11 यह सब उदासी छोड़ो,
हमें ज़रूरत से अधिक इस्राएल के पवित्र के
बारे में न बताओ। हम उनकी सुनते -सुनते
थक चुके हैं। 12 इस्राएल के पवित्र क्या
कहते हैं, सुनो, "इसलिए कि मेरी बातों को
तुम तुच्छ समझते हो और शोषण और झूठ
का जीवन जीते हो। 13 विपत्ति अचानक ही
तुम्हारे ऊपर आ जाएगी। यह एक फूल जाने
वाली दीवार की तरह है, जो गिर जाएगी।
14 तुम लोग कुम्हार के बर्तन की तरह गिर
कर टुकड़े-टुकड़े हो जाओगे। इतना कि एक
टुकड़ा इतना बड़ा भी न होगा कि उस से
जलता कोयला उठाया जा सकेगा या कुँए
का पानी ले जाया सके। 15 सर्वशक्तिमान
इस्राएल के परमेश्वर कहते हैं, "मेरे पास
वापस आने और मेरा इन्तज़ार करने से तुम
बच सकोगे। खामोश रहने और भरोसा रखने
में ही तुम्हारी बहादुरी है। लेकिन तुम कुछ भी
हासिल न कर पाए। 16 तुम कह रहे थे, "हमें

मिस्र मदद देगा। हमें उन से तेजी से दौड़ने वाले घोड़े मिलेंगे, जिन्हें हम युद्ध में इस्तेमाल करेंगे। लेकिन तेजी से तुम्हारा पीछा किया जाएगा। 17 उनमें से एक जन एक हज़ार का पीछा करेगा। उनके पाँच लोग तुम सभी को भगा देंगे। तुम एक दूर के पहाड़ की चोटी पर अकेले पड़ जाओगे। 18 लेकिन प्रभु अभी भी तुम्हारा इन्तज़ार करते हैं, कि तुम उनके पास आओ, ताकि वह अपना प्रेम और अपनी करूणा तुम्हें दिखा सकें। उन पर भरोसा किया जा सकता है। जो लोग उनसे मदद पाने के लिए तत्पर रहते हैं वे समझदार हैं। 19 हे सिय्योन के लोगो, जो यरूशलेम में रहते हो, अब फिर तुम रोओगे नहीं। यदि तुम उनसे मदद माँगोगे तो वह तुम्हारी ओर कृपालु होंगे। तुम्हारी चिल्लाहट की ओर वह ज़रूर ध्यान देंगे। 20 हालाँकि प्रभु ने तुम्हें खाने के बदले मुसीबत और पानी के बदले पीड़ा दी, वह फिर भी तुम्हें सिखाने के लिए तुम्हारे साथ रहेंगे। अपने शिक्षक को तुम अपनी आँखों से देख सकोगे। 21 तुम एक आवाज़ भी सुनोगे, "रास्ता यही है, इसी पर चले चलो।" 22 तब तुम अपनी सारी चाँदी-सोने की मूरतों को नाश कर डालोगे। तुम घिनौने चिथड़ों की तरह उन्हें फेंक दोगे। तुम उनसे कहोगे " हमसे दूर हो जाओ"। 23 तब प्रभु फसल के समय तुम्हें बरसात देंगे। तुम्हें अच्छी फसल मिलेगी और मवेशियों के लिए तमाम हरा चारा भी। 24 बैल और गधे जो धुनाई में काम आते हैं, अच्छा अनाज खाते हैं और अनाज का भूसा हवा से उड़ा दिया। 25 उस दिन जब तुम्हारे शत्रु कत्ल किए जाएँगे उस हर एक पहाड़ से पानी के झरने से बहने लगेंगे। 26 चाँद सूरज की तरह चमकेगा और सूरज की रोशनी सात गुना बढ़ जाएगी। यह वह समय होगा। जब प्रभु अपने लोगों के दिए गए घावों को अच्छा करेंगे। 27 देखो, प्रभु बहुत दूर से आ रहे हैं। वह बहुत गुस्सा हैं। वह गहरे धुएँ से घिरे हुए हैं। उनके ओठों पर क्रोध है। उनके शब्दों में जलाने वाली आग है। 28 उनके दुश्मनों पर उनका गुस्सा बाढ़ की तरह है, जो उन सभी को खतम कर डालता है। वह घमण्डी देशों को फटकेंगे। वह उन्हें पकड़ कर बर्बादी की जगह ले जाएँगे। 29 लेकिन प्रभु के लोग खुशी का गीत गाएँगे। उस तरह के गीत जो त्यौहार के समय गाए जाते हैं। जब यरूशलेम की यात्रा पर जाते यात्री लोगों को बांसुरी बजानेवाला अगुवाई करता है, तब तुम आनन्द से भर जाओगे। 30 और प्रभु अपनी ज़ोरदार आवाज में बोलेंगे। गुस्से में आकर उनका सामर्थी हाथ उनके शत्रुओं के खिलाफ़ आएगा। वह लपटों, बादलों और गर्जन के साथ ऐसा करेंगे। ओलों की बरसात भी इस मुसीबत के साथ आएगी। 31 प्रभु की एक आवाज़ से असीरिया के लोग तितर-बितर हो जाएँगे। अपनी छड़ी से वह उन्हें मारेंगे। 32 जैसे ही वह छड़ी चलाते हैं, तभी उनके लोग खंजड़ी और वीणा के संगीत से खुशी मनाएँगे। 33 जलाए जाने का स्थान तोफेत बहुत समय से असीरिया के राजा के लिए तैयार है। इसे लकड़ियों से काफी ऊँचा बनाया गया है। ज्वालामुखी की तरह प्रभु की सांस से इसे जलाया जाएगा।

31 उनका क्या होगा, जो मदद पाने के लिए मिस्र देश जाते, तथा घोड़ों पर भरोसा रखते हैं. वे रथों की बड़ी गिनती और तथा घुड़सवारों की ताकत पर भरोसा करते हैं. ये लोग न ही इस्राएल के पवित्र की ओर निगाह करते और न ही याहवे परमेश्वर को चाहते हैं। 2 फिर भी वह बुद्धिमान हैं और भारी मुसीबत ले आएँगे वह अपनी कही हुई

बात से पीछे न लौटेंगे, परन्तु बुरा काम करने
वालों के घराने तथा अधर्मियों के सहयोगियों
के विरोध में उठेंगे। 3 मिस्री लोग इन्सान
ही हैं परमेश्वर नहीं। उनके घोड़े मांस ही
हैं, आत्मा नहीं।इसलिये याहवे अपना हाथ
उठाएँगे, और सहायता करने वाले ठोकर
खाएँगे और सहायता पाने वाले गिरेंगे। वे
सभी एक साथ बर्बाद हो जाएँगे। 4 क्योंकि
याहवे ने मुझसे कहा,"जिस तरह से शेर या
जवान शेर अपने शिकार पर गुर्राते समय
उनके चरवाहों के दल के बुलाए जाने पर
भी उनकी तलवार से न तो डरता और न
ही उनके शोर से परेशान होता है, उसी तरह
सेनाओं के याहवे सिय्योन पहाड़ और उसकी
चोटी पर युद्ध करने उतरेंगे। 5 आकाश में
उड़ान भरने वाले पक्षियों की तरह परमेश्वर
यरुशलेम को संभालेंगे। वह उसकी रक्षा
करके उसे छुड़ा लेंगे। वह लांघ कर उसे
मुक्ति देंगे। 6 हे इस्राएलियो, जिनके विरुद्ध
तुमने भारी विद्रोह किया, उन्हीं की ओर
लौट आओ। 7 सोने -चाँदी की जिन मूर्तियों
को बनाकर तुमने अपराध किया, उस दिन
हर एक जन उन्हें अपने में से निकाल कर
फेंक देगा। 8 तब असीरिया उस तलवार से
मारा जाएगा, जो इन्सान की नहीं। इसलिए
वह उस तलवार से बचेगा नहीं और उसके
जवानों से बेगारी करवाई जाएगी। 9 आतंक
से उसका किला समाप्त हो जाएगा।युद्ध
का झण्डा देखकर उसके प्रधान डर जाएँगे।
यह उसी याहवे की वाणी है, जिनकी आग
सिय्योन में और जिनकी भट्टी यरुशलेम में है।

32 देखो, एक राजा ईमानदारी और
सच्चाई से शासन करेगा,तथा
शासक इन्साफ़ से राज्य करेंगे। 2 उनमें से
हर एक आँधी से छिपने और तूफान से बचने
की जगह के समान होंगे। निर्जल प्रदेश में
पानी का बहाव या तपी ज़मीन में एक बड़ी
चट्टान की आड़ होगी। 3 तब देखने वालों की
आँखें धुँधली न होंगी और सुनने वालों के
कान सुनते रहेंगे। 4 उतावली करने वालों के
मन सच्चाई को समझ पाएँगे, तथा हकलाने
वालों की जीभ तेजी से और साफ बोलेगी।
5 भविष्य में न ही बेवकूफ महान कहलाएगा
न ही दुर्जन, विशाल हृदय वाला। 6 मूर्ख,
मूर्खता की बातें करता है और उसका मन
बुराई ही कीओर झुकता है,ताकि अनुचित
करे और याहवे के विरोध में झूठी बातों
को बोले। भूखे को खाना न खिलाए और
प्यासे को पानी न पिलाए। 7 दुर्जन के हथियार
बुराई के होते हैं। वह बुरी योजनाएँ बनाता
है कि पीड़ित की झूठी बुराई करके उसे
नाश करे, चाहे वह गरीब उचित बातें ही
क्यों न बोलता हो। 8 लेकिन सज्जन तो
विशाल मन से योजनाएँ निकालता है। वह
उन्हीं के द्वारा कामयाब भी होता है। 9 हे
महिलाओ, तुम जो चैन से हो, मेरी सुनो,
हे निश्चिन्त बेटियो, मेरी कही बातों पर
ध्यान दो। 10 हे बेखबर रहने वाली बेटियो,
एक साल और कुछ ही दिनों में तुम परेशान
हो जाओगी, क्योंकि अंगूर की फसल जाती
रहेगी और कुछ बटोरा भी न जा सकेगा। 11 हे
महिलाओ, तुम जो चैन से हो, थरथराओ और
हे निश्चिन्त पुत्रियो, घबरा जाओ। कपड़े
उतारो और नंगी होकर अपनी कमर में टाट
लपेटो। 12 हरे भरे खेतों और फल देने वाली
अंगूर की बेलों के लिए, 13 मेरे लोगों की
ज़मीन में काँटों और झाड़ियों के लिए, वरन
सभी खुशी से भरे घरों, तथा खुशी नगरों
के लिए छाती पीटो, 14 क्योंकि महल त्यागा
जाएगा, आबाद नगर सुनसान हो जाएगा।
पहाड़ी और पहरेदार का बुर्ज़ दोनों हमेशा
के लिए गुफा, जंगली गदहों का विहार तथा

जानवरों का चरने का स्थान तब तक बने
रहेंगे, 15 जब तक हम पर ऊपर से आत्मा
न उण्डेला जाए,और जंगल उपजाऊ ज़मीन
न बन जाए और उपजाऊ ज़मीन जंगल न
कहलाने लगे। 16 तब वह जंगल न्याय का
वास होगा, तथा उपजाऊ ज़मीन में धार्मिकता
निवास करेगी। 17 धार्मिकता का फल शान्ति
होगी तथा उसका परिणाम सदा का चैन और
सुरक्षा। 18 तब मेरे लोग शान्ति सदनों, वरन
सुरक्षित घरों तथा शान्तिपूर्ण आराम-स्थलों
में वास करेंगे। 19 वन की बर्बादी के समय
ओले गिरेंगे और नगर पूरी तरह बर्बाद हो
जाएगा। 20 क्या ही आशीषित हो तुम जो सभी
तालाबों के पास बीज बोते, और बैलों गदहों
को आज़ादी से चराते हो।

33 हे बर्बाद करने वाले, तुम जो बर्बाद
नहीं किए गए और हे धोखेबाज़
जिसके साथ दूसरों ने धोखेबाज़ी नहीं की,
तुम पर हाय। तुम जैसे ही बर्बादी करना
रोकोगे, तुम भी बर्बाद कर दिए जाओगे।
तुम जैसे ही विश्वासघात कर चुकोगे, दूसरे
लोग तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।
2 हे याहवे, हम पर दया करें, हमारी आस
आप पर ही है। हर सुबह आप हमारी
ताकत तथा परेशानी में हमारी मुक्ति बनिये।
3 हुल्लड़ सुनते ही देश देश के लोग भाग
खड़े हुए।आपके उठते ही, देश- देश के लोग
तितर-बितर हो गए। 4 जैसे इल्ली खा लेती
है, उसी तरह तुम्हारी लूट खाई जाएगी। उस
पर लोग टिड्डी की तरह टूट पड़ेंगे। 5 याहवे
सबसे महान हैं, वह ऊँचे पर विराजमान हैं।
उन्होंने सिय्योन को इन्साफ और धार्मिकता
से भर डाला है। 6 वह तुम्हारे पूरे जीवन
की नींव होंगे, तथा मुक्ति, बुद्धि और ज्ञान
का खज़ाना होंगे। याहवे का डर उनकी
दौलत होगा। 7 देखो, उनके बलवान सड़कों
पर चिल्ला रहे हैं। मेल के संदेशवाहक
फूट-फूटकर रो रहे हैं। 8 राजमार्ग सुनसान है ,
कोई मुसाफिर नहीं रहा। वाचा तोड़ दी गई है,
नगरों को तुच्छ जाना गया है, किसी इन्सान
के लिए आदर नहीं बचा है। 9 ज़मीन रोते-रोते
झुलस चुकी है लेबनोन शर्माकर मुर्झा गया
है,शारोन रेगिस्तान की तरह हो गया है।
बाशान और कर्मेल का हरापन जाता रहा
है। 10 याहवे कहते हैं, " अब मैं उठूँगा और
अपनी ताकत दिखाऊँगा, मैं सबसे महान
ठहरूँगा। 11 तुम्हारे गर्भ में भूसा ही है, तुम
खूँटी उत्पन्न करोगे। मेरी साँस तुम्हें आग
की तरह भस्म करेगी। 12 देश-देश के लोग
भस्म होकर चूना बन जाएँगे। वे आग में
झोंके जाने वाली कँटीली झाड़ी की तरह
हो जाएँगे। 13 “तुम जो दूर हो,सुनो कि मैंने
क्या किया है, पास वालो,मेरी शक्ति को
जान लो।” 14 सिय्योन में अपराधी डरे हुए
हैं। अनुचित जीवन जीवन जीने वालों को
थरथराहट ने दबोच लिया है: " हममें से
कौन भस्म करने वाली आग के सामने ठहर
सकता है? कौन अनन्त आग के सामने
ज़िन्दा रह पाएगा?” 15 वही जो उचित जीवन
जीता है और जीभ का सही इस्तेमाल करता
है। जो अन्धेर के मुनाफे से नफ़रत करता
है,घूस का इन्कार करता है।वह जो हत्या
की बातें सुनने से कान फेर लेता है और बुराई
देखने से अपनी आँखें बन्द कर लेता है।
16 वह ऊँचे स्थानों पर रहने पाएगा, अटल
चट्टान उसका शरणस्थान होगी।उसे खाना-
पानी मिलेगा । 17 तुम्हारी आँखें राजा की
खूबसूरती देखेंगी, वे एक बड़े देश पर निगाह
करेंगी। 18 वह आतंक ही तुम्हारे विचारों
का केन्द्र होगा:” कहाँ रहा गिननेवाला?
और तौलनेवाला ? और बुर्जों की गिनती
करनेवाला? 19 आने वाले समय में तुम क्रूर

लोगों को न देखोगे, जिनकी बोली और भाषा
में लड़खड़ाहट और हकलाहट है। 20 हमारे
ठहराए हुए त्यौहारों के नगर सिय्योन पर
निगाह डालें। तुम अपनी आँखों से यरुशलेम
को देखोगे। वह सुरक्षित निवास और ऐसा
तम्बू होगा, जिसे कभी गिराया न जाएगा न
ही कोई खूँटा उखाड़ा जाएगा, न ही कभी
कोई रस्सी कभी तोड़ी जाएगी। 21 वहाँ वह
महाप्रतापी अर्थात याहवे हमारे लिए नदियों
और चौड़ी नहरों का ऐसा स्थान होंगे, जिस
पर कोई नाव न तो चप्पू से चलेगी, न
कोई बड़ा जहाज पार होगा, 22 क्योंकि हमारे
याहवे इन्साफ़ करनेवाले, नियम- आज्ञाएँ
देनेवाले और शासक हैं। वही हमें आज़ादी
देंगे। 23 तुम्हारे रस्से ढीले हो गए। वे अपने
मस्तूल के आधार को संभाल न पाए और
न ही पाल को फैला सके।तब छीनी हुई लूट
बाँटी जाएगी, लंगड़े भी उसे पाएँगे। 24 कोई
निवासी यह नहीं कह पाएगा कि वह बीमार
है। जो लोग वहाँ रहने लगेंगे उनके अपराध
माफ किए जाएँगे।

34 हे देश- देश के लोगो, पास आकर
सुनो और ध्यान से सुनो। इस दुनिया
में जो कुछ है और पैदा होता है, सभी सुनें।
2 याहवे का गुस्सा सभी देशों और उनकी
फौजों पर भड़क चुका है। उन्होंने उन सभी
को बर्बाद होने के लिए छोड़ दिया है।
3 इसलिए उसके मारे हुए फेंक दिए जाएँगे,
उनकी लाशों से बदबू आएगी तथा उनके खून
से पहाड़ डूब जाएँगे 4 आकाश के सभी तारे
कमज़ोर हो जाएँगे आकाश लपेटा जाएगा।
जैसे अंगूर के पत्ते मुर्झा जाते हैं, या अंजीर
के पत्ते झड़ जाते हैं, उसी तरह सारे तारे
जाते रहेंगे। 5 क्योंकि मेरी तलवार आकाश
में तृप्त हो चुकी है। देखो, वह इन्साफ
करने के लिए एदोम और उन लोगों पर
जिनका नाश करने के लिए मैंने इरादा कर
लिया है, उन पर आ पड़ेगी। 6 याहवे की
तलवार खून से भर चुकी हैऔर चर्बी से
चिकनी हो चुकी है, हाँ मेमनों और बकरों
के खून से तथा मेढ़ों के गुर्दों की चर्बी से।
याहवे के लिए बोस्त्रा में एक कुर्बानी और
एदोम देश में एक बड़ी मार-काट है। 7 उनके
साथ जंगली सांड़ और बछड़े तथा बैल काटे
जाएँगे। इस तरह उनकी ज़मीन खून से सन
जाएगी और वहाँ की मिट्टी चर्बी से चिकनी
हो जाएगी। 8 क्योंकि सिय्योन के लिए याहवे
ने बदले का दिन और बदला चुकाने का
दिन ठहराया है। 9 उसकी नदियाँ राल में
तथा उसकी मिट्टी गन्धक में बदल जाएगी।
10 रात-दिन वह जलती रहेगी, उसका धुआँ
हमेशा उठता रहेगा। वह युग-युग तक उजाड़
पड़ा रहेगा, उसमें से होकर कोई न चलेगा।
11 लेकिन हवासील और साही उसमें होंगे,
तथा उल्लू और कौवे उसमें बसेंगे।वह उस
पर उजाड़ की रेखा खींचेगा तथा खालीपन
का साहुल तानेगा। 12 उसके अमीरों में ऐसा
कोई नहीं, जिसका एलान वे राजा के रूप
में कर सकेंऔर वहाँ के सभी शासक तुच्छ
ठहराए जाएँगे। 13 उसके बुर्जों में काँटे तथा
गढ़वाले नगरों में बिच्छू पौधे और भटकटैया
उग आएँगे। वह गीदड़ों का अड्डा व शुतुर्मुर्गों
का आशियाना बनेगा। 14 जंगल के जानवर
भेड़ियों के साथ बसेंगे। रोंए वाले बकरे भी
एक दूसरे को पुकारेंगे। हाँ, वह निशाचरी
बस जाएगी और खुद के लिए घर पाएगी।
15 वहाँ मादा उल्लू घोंसला बनाकर अण्डे
देगी और उनको अपनी सुरक्षा में लेकर
बच्चे जनेगी। हाँ, वहाँ चील अपने-अपने
जोड़े के साथ इकट्ठी होगी 16 याहवे की
किताब में खोजबीन करो, इनमें से एक भी
छूटेगा नहीं, कोई अपने जोड़े से अलग नहीं

रहने पाएगी॥ क्योंकि यह आदेश उन्हीं के
मुँह से निकला है और उनके आत्मा ने उसे
इकट्ठा किया है। 17 उन्हीं ने उसके लिए चिट्ठी
डाली है और अपने हाथ से डोरी डालकर
उनके लिए बाँट दिया है। वह हमेशा के लिए
उनका ही बना रहेगा और वे पीढ़ी से पीढ़ी
तक उसमें बसे रहेंगे।

35 जंगल और सूखे प्रदेश खुश होंगे
और रेगिस्तान मगन होकर फूले
फलेगा। 2 उसमें बहुत सी कलियाँ निकलेंगी।
वह आनन्द के ऊँचे शब्दों से खुशी मनाएगा।
उसको लेबनोन की महिमा और कर्मेल
अर्थात शारोन का विभव दिया जाएगा।
वे याहवे की शान और हमारे परमेश्वर
के ऐश्वर्य को देखेंगे। 3 कमज़ोर हाथों को
मज़बूत करो और थरथराते हुए घुटनों को
स्थिर करो। 4 जो लोग घबरा रहे हैं, उन से
कहो," देखो, हिम्मत रखो, तुम्हारे परमेश्वर
बदला लेने वाले हैं। वह तुम्हें आज़ाद
करने आएँगे।" 5 उस समय अन्धे देखेंगे,
बहरे सुनने लगेंगे। 6 उस वक्त लँगड़ा हिरन
की तरह चौकड़ियाँ भरेगा, गूँगा इन्सान
परमेश्वर की बड़ाई करेगा, क्योंकि जंगल
में पानी के सोते तथा अराबा में पानी धाराएँ
फूट निकलेंगी। 7 सूखी ज़मीन तालाब और
प्यासी भूमि पानी का सोता बन जाएगी।
जिस जगह सियार घूमते फिरते हैं, उसमें
घास, नरकट और सरकण्डे होंगे। 8 वहाँ
एक सड़क,अर्थात एक राजमार्ग होगा और
उसे "पवित्र मार्ग" कहा जाएगा। उस पर
अशुद्ध जन चल न सकेगा। यह उन्हीं के लिए
होगा,जो उस रास्ते पर चलते हैं। बेवकूफ़
उस पर पैर तक न रख सकेगा। 9 वहाँ न शेर
होगा, न ही कोई दूसरा खतरनाक जानवर। ये
सब वहाँ नहीं होंगे, लेकिन मुक्ति पाए हुए ही
उस पर चलेंगे। 10 याहवे के आज़ाद किए हुए
लौटकर स्तुति करते हुए सिय्योन में आएँगे,
उनका ताज हमेशा- हमेशा की खुशी होगी।
वे खुशी मनाएँगे, उनका शोक और विलाप
समाप्त हो जाएगा।

36 हिजकिय्याह राजा के शासन के
समय चौदहवें साल में ऐसा हुआ
कि असीरिया के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के
सभी गढ़वाले नगरों पर हमला करके उसे
हथिया लिया। 2 और असीरिया के राजा ने
रबशाके को एक बड़ी फौज देकर लाकीश से
यरुशलेम को हिजकिय्याह राजा के खिलाफ़
भेजा। और वह जलाशय की ऊपरी नहर
के पास धोबियों के मैदान के रास्ते पर
जाकर खड़ा हो गया। 3 तब हिजकिय्याह
का बेटा एल्याकीम जो राजघराने का काम
देखता था, शेब्ना मन्त्री तथा आसाप का
बेटा योआह जो इतिहास लिखने वाला था,
ये तीनों उसके पास बाहर निकल आए।
4 तब रबशाके उनसे कहा,"हिजकिय्याह से
कहो,कि महाराजाधिराज असीरिया के राजा
का कहना है, कि किस पर भरोसा रखा
जा रहा है"? 5 मेरा कहना है," क्या मुँह
से बड़े बोल बोलना शक्ति को दिखाता
है, अब तुमने किस के बल पर मुझ से
बलवा किया है?" 6 सुनो, तुम तो मिस्र
पर जो कुचले नरकट की तरह भरोसा रखे
हुए हो। जो कोई उस पर तकिया करे,वह
उसके हाथ में चुभकर छेद कर डालेगा।
जो भी मिस्र पर भरोसा रखता है, मिस्र
का राजा उसके साथ ऐसा ही करता है।
7 लेकिन अगर तुम मुझ से कहो, कि हम
अपने परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो
क्या यह वही परमेश्वर नहीं, जिनके ऊँचे
और पवित्र स्थानों को हिजकिय्याह ने नष्ट
करके यहूदा और यरुशलेम से कहा है,कि
वे उस वेदी के सामने पूजा अर्चना करें?

8 इसलिए अब आओ, मेरे मालिक असीरिया
के राजा के साथ यह समझौता कर लो, कि
यदि तुम अपनी तरफ से सवार चढ़ा सके
तो मैं तुम्हें दो हज़ार घोड़े दूँगा। 9 फिर तुम
रथों और सवारों के लिए मिस्र पर तकिया
करके मेरे मालिक के अधिकारियों में से छोटे
से छोटे कर्मचारी को परास्त कर सकोगे?
10 तो मैं क्या याहवे के कहे बिना इस देश
को बर्बाद करने आया हूँ? याहवे ने मुझे
आदेश दिया है कि मैं हमला करके इस
देश को बर्बाद कर डालूँ। 11 तब एल्याकीम,
शेब्ना और योआह ने रबशाके से कहा,
" तुम हम से अरामी ज़ुबान में बातें करो,
क्योंकि हम उसे समझते हैं। जब शहरपनाह
पर बैठे लोग न रहे हों, तब हमसे यहूदी
भाषा में बातचीत करना।" 12 रबशाके बोला,
" क्या मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी और
तुम से ही यह बातें करने के लिए भेजा है,
और उन लोगों से नहीं जो शहरपनाह पर
बैठे हैं और जिन्हें तुम्हारे साथ मल- मूत्र
का सेवन करना पड़ेगा?" 13 तब रबशाके
खड़ा होकर यहूदी भाषा में कहने लगा, "
असीरिया के राजा की सुनो! 14 राजा का
कहना है: हिजकिय्याह तुम्हें उल्लू न बना
सके, क्योंकि वह तुम्हें बचा न पाएगा; 15 न
ही हिजकिय्याह तुमको यह कहकर याहवे
का भरोसा दिलाने पाए कि ज़रूर ही याहवे
हमको बचाएँगे, यह नगर असीरिया के हाथ
में न जा सकेगा। 16 हिजकिय्याह को बकने
दो, क्योंकि असीरिया का राजा यह कहता
है: मेरे साथ मेल कर लो और यहाँ से चले
जाओ। तब तुम हर एक जन अपनी अंगूर
लता और अंजीर के पेड़ से से तब तक फल
न खा सकेगा और अपने कुण्ड का पानी
न पी सकेगा, 17 जब तक मैं आकर तुम्हें
एक देश में न ले आऊँ, जो तुम्हारे देश की
तरह है,अर्थात, अनाज और दाखमधु का देश
और रोटी और दाख के बगीचों का देश है।
18 यह कहकर हिजकिय्याह तुम्हें बहका न
सके, कि याहवे हमें छुड़ाएँगे। क्या दूसरे
देशों के देवताओं में से किसी ने अपने देश
को असीरिया के राजा के हाथ से बचाया
है? 19 हमात और अर्पाद के देवता कहाँ
गए? सपरवैम के देवता कहाँ रहे? क्या वे
सामरिया को मेरे हाथ से बचा सके? 20 इन
देशों के सब देवताओं में से ऐसा कौन है
जिसने अपने मुल्क को मेरे हाथ से बचाया
हो? फिर क्या याहवे यरुशलेम को मेरे हाथ
से बचा सकेंगे? 21 लेकिन उन्होंने खामोश
रहकर उसके जवाब में कुछ भी न कहा,
क्योंकि यह राजा का आदेश था, कोई जवाब
न दिया जाए। 22 तब हिल्किय्याह के बेटे
एल्याकीम ने जो राजघराने का इन्तज़ाम
करता था और शेब्ना मन्त्री तथा आसाप के
बेटे योआह ने जो इतिहास का लिखने वाला
था, हिजकिय्याह के पास कपड़े फाड़े हुए
जाकर रबशाके की बातें बता डालीं।

37 जब राजा हिजकिय्याह को यह बात
मालूम हुई, तब उसने अपने कपड़े
फाड़े और टाट ओढ़कर याहवे के भवन में
गया। 2 तब उसने राजघराने के प्रबन्धक
एल्याकीम और शेब्ना मन्त्री तथा पुरोहितों
के पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे,
आमोस के बेटे यशायाह नबी के पास भेजा।
3 उन्होंने उस से कहा, "हिजकिय्याह का
कहना यह है, ' आज का दिन मुसीबतों,
बेइज़्ज़ती और तिरस्कार का है; बच्चे पैदा
करने की ताकत जाती रही है। 4 यह हो
सकता है कि तुम्हारे परमेश्वर ने रबशाके
की बातें सुन ली हैं, जिसे उसके मालिक
असीरिया के राजा ने ज़िन्दा परमेश्वर की
बुराई करने के लिए भेजा था, तथा जिन बातों

को याहवे परमेश्वर ने सुना है, उनके लिए उसे डाँटे।इसलिए तुम बाकी लोगों के लिए बिनती करो।" 5 इसलिए राजा हिजकिय्याह के कर्मचारी यशायाह के पास आए, 6 और यशायाह उनसे बोला, " अपने मालिक से कहो कि उन बातों की वजह से जो तुमने सुनी हैं, जिनके द्वारा असीरिया के राजा के कर्मचारियों ने मेरा अपमान किया है, मत डरना। 7 देखो, मैं उसके अन्दर ऐसी भावना पनपने दूँगा , जिससे वह एक अफवाह सुनकर अपने देश वापस लौट जाए। मैं उसे उसके मुल्क ही में मरवा डालूँगा। 8 रबशाके को मालूम हुआ, कि असीरिया का राजा लाकीश जा चुका है।तब उसने लौटकर राजा को लिब्ना के खिलाफ़ जंग करते पाया। 9 जब इसने कूश के राजा तिर्हाका के बारे सुना कि वह मेरे विरुद्ध लड़ने के लिए निकल चुका है, उसने हिजकिय्याह के पास संदेशवाहक भेजे कि वे कहें, 10 तुम्हारा परमेश्वर जिस पर तुम तकिया करते हो, यह कहकर तुम्हें न बरगलाए, कि यरुशलेम असीरिया के राजा के हाथ में न पड़ेगा। 11 देखो, तुम सुन चुके हो, कि असीरिया के राजा ने सभी देशों के साथ क्या किया है, फिर तुम क्या बच सकते हो? 12 जब मेरे पूर्वजों ने गोज़ान और हारान और रेसेप में रहनेवाली जातियों और तलस्सार में रहने वाले एदेनी लोगों को नाश किया, तो क्या उनके देवताओं ने उनको बचाया? 13 हमात का राजा, अर्पाद का राजा, सपरवैम नगर का राजा, और हेना तथा इव्वा के राजा, ये सभी कहाँ गए?" 14 तब हिजकिय्याह ने दूतों की दी गई चिट्ठी को पढ़ा,और याहवे के घर जाकर उसे फैला दिया। 15 और याहवे से प्रार्थना की, 16 "हे सेनाओं के याहवे, इस्राएल के परमेश्वर, आप करूबों के ऊपर विराजमान हैं। आप इस दुनिया के सभी राज्यों के ऊपर हैं। आपही ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। 17 हे याहवे, सुनिए उन शब्दों को जो सन्हेरीब ने आपके खिलाफ़ कहे और आँख खोल कर देखिए। 18 हे याहवे, असीरिया के राजाओं ने सभी देशों और उनकी पृथ्वी को उजाड़ा है, 19 उनके देवताओं को आग में झोंका है, क्योंकि वे ईश्वर न थे, लेकिन इन्सान के हाथों के बनाए हुए थे। इसीलिए ये नाश हुए। 20 और अब, हे हमारे परमेश्वर याहवे, हम लोगों को उसके हाथ से बचाएँ, ताकि दुनिया के सभी देश जान जाएँ, कि आप ही परमेश्वर हैं।" 21 तब आमोस के बेटे यशायाह ने हिजकिय्याह को समाचार भेजा:"इस्राएल के परमेश्वर याहवे कहते हैं, इसलिए कि तुमने असीरिया के राजा सन्हेरीब के बारे में मुझ से बिनती की है, 22 उनके खिलाफ़ याहवे ने यह कहा है: सिय्योन की कुँवारी बाला ने तुमको नीचा जाना है और तुम्हारी हँसी उड़ाई है, यरूशलेम की बेटी ने तुम पर सिर हिलाया है। 23 तुमने किस की बेइज़्ज़ती की और किसका मज़ाक उड़ाया है? तुमने किस के विरुद्ध बड़े बोल बोले हैं और घमण्ड से भरी आँखें उठाई हैं? इस्राएल के पवित्र के खिलाफ़! 24 तुमने अपने कर्मचारियों के ज़रिये प्रभु की बेइज़्ज़ती कराई और कहा,' मैं अपने अनगिनित रथों के साथ पहाड़ों की ऊँचाईयों पर लेबनोन के दूर के हिस्सों में चढ़ आया हूँ। मैं उसके ऊँचे-ऊँचे देवदारों तथा बढ़िया से बढ़िया सनौवरों को काट चुका हूँ। मैं उसकी ऊँची से ऊँची चोटी तथा उसके घने जंगलों तक पहुँच गया हूँ। 25 मैंने कुएँ खुदवाकर पानी पिया और मिस्र की सभी नदियों को अपने पैर के तलुवे से ही सुखा दिया है।' 26 क्या तुम सुन नहीं चुके

हो? पुराने समय से मैंने ऐसा करने का इरादा
कर लिया था और प्राचीनकाल से इसकी
तैयारी की थी। अब मैंने तुमसे गढ़वाले
नगरों को खण्डहर करवाकर इसे पूरा किया।
27 इसीलिए वहाँ के रहनेवाले कमज़ोर हो
गए। वे घबरा गए और शर्मिन्दा हुए। वे
मैदान में उगनेवाली वनस्पति और छत पर
उगनेवाली घास की तरह हो गए हैं,जो बढ़ने
से पहले ही मुर्झा जाती है। 28 "लेकिन मैं
तुम्हारा उठना बैठना, आना-जाना और मेरे
खिलाफ़ तुम्हारे गुस्से को भी जानता हूँ।
29 इसलिए कि तुम्हारा गुस्सा मेरी ओर
भड़का है और तुम्हारे घमण्ड की बातों को
मैंने सुन लिया है,मैं तुम्हारी नाक में नकेल
तथा तुम्हारे ओठों में लगाम डालकर जिस
रास्ते से तुम आए हो, उसी रास्ते से वापस
कर दूँगा। 30 " उस समय तुम्हारे लिए यह
निशान होगा: इस साल तो तुम वह खाओगे,
जो खुद ब खुद उगता है, दूसरे साल वह
जो इस से पैदा होगा, तीसरे साल बोओगे
और काटोगे। अंगूर के बगीचे लगाओगे और
अंगूर खाओगे। 31 और यहूदा के घराने के
बचे हुए लोग फिर से नीचे तो जड़ पकड़ेंगे
तथा ऊपर फले- फूलेंगे। 32 क्योंकि यरुशलेम
में से बाकी हिस्सा अर्थात सिय्योन पहाड़ पर
से बचे हुए लोग निकल आएँगे।ऐसा सेनाओं
के याहवे की धुन से होगा। 33 इसलिए याहवे
असीरिया के राजा के बारे में यह कहते हैं,
कि न तो वह इस नगर में आ पाएगा, न
ही वहाँ एक तीर भी चला पाएगा। न तो
वह ढाल लेकर इसके सामने आएगा, न
ही इसके विरुद्ध दमदमा बान्ध पाएगा।
34 वह जिस रास्ते से आया है, उससे वापस
लौट जाएगा, और वह इस नगर में नहीं आ
सकेगा। 35 क्योंकि मैं इस नगर को अपने
लिए और अपने दास दाऊद के कारण रक्षा
करके बचाऊँगा। 36 तब याहवे के दूत ने
बाहर आकर असीरियों की छावनी में एक
लाख पचासी हज़ार को जान से मार दिया।
सुबह जब लोग सोकर उठे, तो देखा कि लोग
मरे पड़े हुए हैं। 37 इस तरह असीरिया का
राजा सन्हेरीब चला गया और जाकर नीनवे
में रहने लगा। 38 जब अपने देवता निस्रोक के
मन्दिर में वह पूजा कर रहा था, तो उसके
बेटों, अद्रम्मेलेक और शरेसेर ने उसे तलवार
से मार डाला और वे अरारात देश भाग खड़े
हुए। और उसका पुत्र एसर्हद्दोन उसकी जगह
राजा बन गया।

38 उन दिनों में हिजकिय्याह इतना
बीमार हुआ कि मरने पर था।
आमोस के बेटे यशायाह नबी ने उसके पास
जाकर कहा," याहवे कहते हैं कि अपने
खानदान का सारा इन्तज़ाम कर लो, क्योंकि
तुम जल्दी मर जाओगे। 2 तब हिजकिय्याह
ने दीवार की ओर अपना मुँह मोड़कर याहवे
से बिनती की, 3 और कहा, "हे प्रभु, मैं
आपसे बिनती करता हूँ, याद कीजिए कि
मैं आपके सामने ईमानदारी और सच्चाई
से जीवन जीता रहा हूँ और वही करता
रहा हूँ, जो आपकी निगाह में सही है" यह
कहने के बाद हिजकिय्याह फूट-फूट कर रोने
लगा। 4 तब याहवे का यह संदेश यशायाह
को मिला: 5 " हिजकिय्याह से जाकर कहो,
कि तुम्हारे पूर्वज दाऊद के परमेश्वर ऐसा
कह रहे हैं कि मैंने तुम्हारी दुआ सुन ली
है। मैंने तुम्हारे आँसुओं को भी देखा है,
मैं तुम्हारी उम्र पन्द्रह साल बढ़ाए देता हूँ।
6 मैं अश्शूर के राजा के हाथ से तुम्हें और
इस नगर को बचाऊँगा। 7 इस कही बात को
परमेश्वर पूरा करेंगे और इसका निशान यह
होगा : 8 " देखो, धूप की छाया जो आहाज
की धूपघड़ी में सूरज के साथ ढल गई है,

उसे मैं दश अंश लौटा दूँगा।" इस तरह सूरज
की जो छाया धूपघड़ी में ढल चुकी थी, वह
दस अंश पीछे लौट गई। 9 यहूदा के राजा
हिजकिय्याह का वह लेख जो उसने बीमार
होने और ठीक हो जाने के बाद लिखा; 10 मैंने
कहा," अपनी ज़िन्दगी के बीच ही में इस
दुनिया से चला जाऊँगा। 11 मैंने कहा," मैं
याहवे को, हाँ जीवितों के देश में याहवे को न
देख सकूँगा; मैं इस संसार के लोगों को फिर
कभी न देख सकूँगा। 12 चरवाहे के तम्बू की
तरह मेरा घर, मेरे घर से दूर किया जाता है;
जुलाहे की तरह मैंने ज़िन्दगी को लपेट लिया
है। मुझे ताँत से काट डाला जाता है।दिन
से रात तक आप मेरा अन्त कर डालते हैं।
13 मैं सुबह तक अपने मन को शान्त करता
रहा। शेर की तरह वह मेरी सारी हड्डियों को
तोड़ डालते हैं।दिन से रात तक वह आप
मेरा अन्त कर डालते हैं। 14 अबाबील तथा
सारस की तरह मैं च्यूं- च्यूं करता तथा फाख्ते
की तरह कराहा करता हूँ। ऊपर देखते-देखते
मेरी आँखें पत्थर के समान हो गई हैं। हे
प्रभु, मेरी पीड़ा बहुत बढ़ चुकी है, मेरे सहारा
बन जाईये। 15 "मैं कहूँ त क्या कहूँ, उन्हीं ने
मुझ से कहा और उन्हीं ने पूरा किया। अपने
मन की कड़वाहट की वजह से मैं जीवन भर
मारा-मारा फिरूँगा। 16 हे प्रभु, इन्हीं बातों से
लोग ज़िन्दा रहते हैं, और इन्हीं से हर बात
में मेरी आत्मा का जीवन है। हे प्रभु, मुझे
स्वस्थ कीजिए, ताकि जीता रहूँ। 17 देखिए,
मेरे फायदे के लिए, मैंने इतनी कड़वाहट
पाई है, लेकिन आप ही ने मेरी जान को
बर्बादी के गड्ढे से निकाला, क्योंकि आपने
मेरे सारे अपराधों को अपनी पीठ के पीछे
फेंक दिया है। 18 क्योंकि अधोलोक आपकी
बड़ाई नहीं कर सकता, न ही मौत धन्यवाद
कर सकती है।जो लोग उस गड्ढे में उतर
जाते हैं,आपकी सच्चाई की उम्मीद नहीं कर
सकते। 19 केवल ज़िन्दा लोग आपकी बढ़ाई
कर सकते हैं जैसे मैं आज कर रहा हूँ। पिता
अपने बेटों को आपकी सच्चाईयाँ बताता
है। 20 मुझे याहवे ज़रूर बचाएँगे; इसलिए मेरे
स्वास्थ्य पाने के कारण हम अपने जीवन
भर तार वाले बाजे बजाकर याहवे के घर
में भजन कीर्तन करते रहेंगे।" 21 यशायाह
ने हिजकिय्याह से कहा था कि वह अंजीर
की टिकिया बनाकर अपने फोड़े पर लगाए।
22 इसलिए हिजकिय्याह ने सवाल किया था
कि इस बात का निशान क्या होगा कि वह
प्रभु के घर मे जा सकेगा।

39 उस समय बेबिलोन के राजा
बलदान के बेटे मरोदक बलदान को
मालूम पड़ा कि हिजिकिय्याह की बीमारी
ठीक हो चुकी है,तब उसने उसके पास ईनाम
और खत भेजा 2 इस बात से हिजकिय्याह
खुश हुआ, और उन लोगों को अपना सारा
चाँदी- सोना,खुशबूदार पदार्थ और हथियार
आदि दिखाए। 3 तब यशायाह नबी ने राजा
हिजकिय्याह के पास जाकर पूछा," ये लोग
कहाँ से आए थे?" हिजकिय्याह बोला,"
वे बेबिलोन से आए थे।" 4 तब यशायाह
ने सवाल किया कि उन लोगों ने क्या-क्या
देखा? हिजकिय्याह का उत्तर था, "सब
कुछ।" 5 तब यशायाह ने हिजकिय्याह से
कहा," सेनाओं के याहवे की सुनो: 6 ऐसे
दिन आएँगे, जब जो कुछ पूर्वजों के समय से
भण्डार में है, वह सब बेबिलोन को ले जाया
जाएगा", यह प्रभु का वचन है। 7 "तुम्हारे
बेटों में से जो तुम से पैदा होंगे, और जिनके
पिता तुम होगे, तमाम बन्दी बनाकर ले जाए
जाएँगे। वे बेबिलोन के राजा के महल में खोजे
बनेंगे।" 8 तब हिजकिय्याह ने यशायाह से
कहा," तुमने जो प्रभु की बात कही है, वह

सही है।" क्योंकि उसने सोचा, कि उसके
राज्य के समय तो शान्ति और सच्चाई बनी
रहेगी।

40 तुम्हारे परमेश्वर का यह कहना
है, कि मेरे लोगों को शान्ति दो।
2 यरुशलेम से शान्ति की बातें कहो, कि
तुम्हारी मुश्किल सेवा पूरी हो चुकी है।
तुम्हारी बुराईयों को तुमसे दूर किया जा
चुका है: याहवे के हाथ से तुम्हें अपने गुनाहों
का दो गुना बदला मिल चुका है। 3 किसी
की आवाज़ सुनाई दे रही है, जंगल में याहवे
के रास्ते को सुधारा जाए। हमारे परमेश्वर
के लिए जंगल में एक राजमार्ग को चौरस
किया जाए। 4 हर एक घाटी भर दी जाए और
हर एक पहाड़ी और पहाड़ को गिराया जाए;
जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊँचा-नीचा है,
उसे चौरस किया जाए। 5 तब याहवे का तेज
दिखाई देगा। सभी प्राणी उसे देखेंगे, क्योंकि
याहवे ही ने ऐसा कहा है। 6 बोलने वाले की
बात यह सुनाई दी, " एलान करो" । मैंने
पूछा," मैं क्या एलान करूँ? सारे जीव घास
हैं, उनकी खूबसूरती मैदान के फूल की तरह
है। 7 जब याहवे की सांस उस पर चलती है,
घास सूख जाती है और फूल मुर्झा जाता है,
इसमें कोई सन्देह नहीं कि लोग घास ही
हैं। 8 घास सूख जाती है, फूल मुर्झा जाता
है,लेकिन हमारे परमेश्वर की कही बात सदा
बनी रहती है। 9 हे सिय्योन को अच्छा संदेश
सुनाने वाली , ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जाओ। हे
यरुशलेम को अच्छा समाचार सुनाने वाली,
ऊँची आवाज़ से कहो,‘ मत डरो, यहूदा के
नगरों से कहो कि वे अपने परमेश्वर को
देखें"। 10 देखो, प्रभु याहवे अपनी ताकत
दिखाते रहें हैं, वह अपनी भुजाओं की शक्ति
से राज्य करेंगे।देखो, जो मजदूरी देने की
है, वह उनके पास है। वह बदला देंगे।
11 एक चरवाहे के समान वह अपने झुन्ड को
चराएँगे। वह भेड़ों के बच्चों को अपनी बाँहों
में लेकर चलेंगे और दूध पिलानेवालियों के
साथ धीरे-धीरे चलेंगे। 12 कौन महासागर को
चुल्लू से नाप सका है? पृथ्वी की धूल
को कौन नपुवे से नाप पाया है? पहाड़ों
को तराजू और पहाड़ियों को काँटे से कौन
तौल पाया है? 13 किसने याहवे के आत्मा
को रास्ता बताया है या उनका सलाहकार
बनकर उनको सिखाया है? 14 उन्होंने किस
से सलाह ली और किसने उनको समझ
दी है? किसने उन्हें समझाकर इन्साफ का
रास्ता बता दिया है और ज्ञान सिखाकर बुद्धि
का रास्ता दिखा दिया है? 15 देखो, देश तो
बाल्टी में एक बूंद तथा पलड़ों पर की धूल
के कण के समान ठहरे हैं।देखो, वह द्वीपों को
मिट्टी के कणों की तरह उठाते हैं। 16 लेबनोन
भी ईधन के लिए काफी न होगा और उसके
जानवर कुर्बानी के लिए पूरे न होंगे। 17 सारे
देश उनके सामने कुछ भी नहीं, वे उनके लिए
शून्य से भी कम और बेकार समझे जाते हैं।
18 इसलिए तुम परमेश्वर की तुलना किस से
करोगे? 19 मूर्ति को कारीगर ढालकर बनाता
है। सुनार मूर्ति को सोने से मढ़ता तथा चाँदी
जंजीर से सजाता है। 20 जो इन्सान गरीब
होने के कारण इतना नहीं चढ़ा सकता, वह
ऐसी लकड़ी का चुनाव करता है, जो कभी
नहीं सड़ेगी। तब वह अपने लिए एक योग्य
कारीगर हासिल करता है, ताकि एक मज़बूत
मूर्ति बना ले। 21 क्या तुमको यह ज्ञान नहीं
है? क्या तुमने कभी सुना नहीं? क्या बहुत
पहले से तुम्हें यह बताया नहीं गया था ?
क्या इस दुनिया के बनाये जाते समय तुम
समझ नहीं पाए? 22 वहीं हैं जो भूमण्डल पर
बैठे हुए हैं, जिनके सामने पृथ्वी के निवासी
टिड्डी की तरह हैं, जो आकाश को पर्दों की

तरह फैलाते हैं और रहने के तम्बू के समान
तान देते हैं। 23 वही हैं जो राजाओं को गरीब
बना देते हैं और पृथ्वी के जजों को बेकार
ठहरा देते हैं 24 वे रोपे ही जाते, वे बोए ही
जाते, उनके ठूँठ ज़मीन में जड़ ही पकड़ पाते,
कि वह उन पर फूँक देते हैं और वे सूख जाते
हैं। आँधी उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती
है। 25 पवित्र याहवे का कहना है, कि तुम
मेरी तुलना किस से करोगे? 26 अपनी नज़र
उठा कर देखो, कि तारों को किसने बनाया है
और कौन उन्हें रास्ता दिखाता है और उन्हें
नाम लेकर बुलाता है? उनकी बड़ी शक्ति
की वजह से उनमें से एक भी न छूटेगा। 27 हे
याकूब (इस्राएल) तुम ज़ोर डालकर क्यों यह
कहने पाओ कि मेरी राह याहवे से छिपी
है और मेरे परमेश्वर को मेरे इन्साफ़ की
फिक्र नहीं है? 28 क्या तुम्हें नहीं मालूम, क्या
तुमने सुना नहीं?याहवे सदा के परमेश्वर
और सारी सृष्टि के रचयिता हैं. वह कभी
थकते नहीं हैं, उनकी बुद्धि की कोई सीमा
नहीं है। 29 वह थके हुए को तरावट और
कमजोर को ताकत से भर देते हैं। 30 जवान
लोग थक कर चूर हो जाते हैं और जवान
ठोकर खाकर गिरते हैं, 31 लेकिन जो लोग
याहवे पर भरोसा रख कर उन से आशा रखते
हैं,वे नई ताकत पा सकेंगे। वे उकाब पक्षी
की तरह पंख फैलाकर ऊँचाई तक उड़ेंगे।
वे दौड़ेंगे, चलेंगे,लेकिन थकान महसूस न
होगी।

41 हे द्वीपो, मेरे सामने खामोश रहो;
देश-देश के लोग नई शक्ति पाएँ।
वे पास आकर कहें,“इन्साफ के लिए हम
एक दूसरे के पास आएँ।” 2 पूर्व दिशा से
किसने किसी को जोश दिया है; जिसे सच्चाई
के साथ अपने पाँव के पास बुलाया है ?
वह देशों को उसके अधिकार मे ले आते
हैं। और उसे राजाओं पर शासक ठहराते हैं।
वह अपनी तलवार से उन्हें मिट्टी की तरह
और अपने धनुष से उड़ाए भूसे की तरह कर
देते हैं। 3 वह उन्हें खदेड़ते और ऐसे रास्ते से
जिस पर वह कभी चला न था, बिना रोक
-टोक आगे बढ़ता है। 4 यह काम किसने
किया है और प्राचीन काल से पीढ़ियों को
बुलाता आया है ? मैं प्रभु हूँ, जो शुरूआत
से आखिर तक रहूँगा। 5 द्वीप देखकर डर
जाते हैं। दुनिया में दूर-दूर पाए जाने वाले देश
काँपते हुए पास आ गए हैं। 6 वे एक दूसरे
की मदद करते हैं और उनमें से एक अपने
भाई से कहता है, “हिम्मत रखो”। 7 बढ़ई ,
सुनार को और हथौड़े से बराबर करने वाला
निहाई पर मारने वाले को यह कहकर हिम्मत
बन्धाता है, “जोड़ तो ठीक है।” इसलिए
वह कील ठोंक कर उसको ऐसा मजबूत
बनाता है, कि वह कभी हिलता नहीं। 8 हे
मेरे दास इस्राएल, हे मेरे चुने हुए याकूब मेरे
दोस्त अब्राहम के वंश, 9 मैंने तुम्हें दूर-दूर
देशों से बुलाकर यह कहा,“तुम मेरे दास हो,
मैंने तुम्हे चुना है और छोड़ा नहीं। 10 डरो
मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ,इधर-उधर मत
देखो क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें
मजबूत करूँगा। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।
अपने हाथों से तुम्हें संभाले रहूँगा। ” 11 देखो,
जो तुम से गुस्सा हैं उन्हें शर्म खानी पड़ेगी।
जो तुम से झगड़ते हैं,उनके चेहरे काले होंगे।
वे बर्बाद हो जाएँगे। 12 तुम से जो लड़ते
हैं, तुम उन्हें ढूँढोगे, लेकिन पाओगे नहीं।
वे नष्ट हो जाएँगे। 13 क्योंकि मैं तुम्हारा
परमेश्वर हूँ। तुम्हारा दाहिना हाथ पकड़कर
कहूँगा, “मत डरो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।”
14 कीड़े के समान याकूब, हे इस्राएल के
लोगो, डरो नहीं मैं प्रभु, तुम्हें आज़ाद करने
वाला हूँ। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। 15 देखो,

मैंने तुम्हें छूरीवाले दांवने का एक नया और
चोखा यन्त्र ठहराया है। तुम पहाड़ों को
दांय- दांय कर बारीक धूल कर दोगे और
पहाड़ियों को भूसे की तरह कर डालोगे।
16 तुम उन्हें फटकोगे और हवा उन्हें उड़ा
ले जाएगी। आँधी उन्हें तितर-बितर कर
डालेगी। लेकिन तुम प्रभु के कारण खुश होगे
और इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई करोगे।
17 जब गरीब लोग प्यास के कारण परेशान
हों, तब मैं उनकी दोहाई सुनूँगा। मैं उन्हें
त्यागूँगा नहीं। 18 मैं मुण्डे टीलों से भी नदियाँ
और मैदानों के बीच में सोते बहाऊँगा। मैं
जंगल को तालाब और सूखे देश को सोता
बना डालूँगा। 19 मैं जंगल में देवदार, बबूल,
मेंहदी और जैतून लगाऊँगा। मैं मरभूमि में
सनौवर, चिनार और चीढ़ लगाऊँगा। 20 इस
तरह लोग जान पाएँगे, कि इस्राएली परमेश्वर
के लोग हैं। 21 प्रभु का कहना है, "अपना
मुकदमा लड़ो।" याकूब के राजा का कहना
है,"अपना सबूत दो।" 22 उन्हें देख कर वे
हमको बतलाएँ कि आने वाले समयों में क्या
होगा। पुराने समय की बातें बताओ, कि क्या
क्या घटनाएँ घटीं। तब हम सोचकर बता
सकेंगे कि भविष्य में उसका असर क्या होगा
या क्या होने वाला है। 23 भविष्य में जो कुछ
होगा, हमें बतला दो, तब हम मान लेंगे कि
तुम ईश्वर हो। भला या बुरा कुछ भी करो,
ताकि हम आश्चर्य से भर जाएँ। 24 देखो, तुम
कुछ भी नहीं हो और कुछ करने के लायक
भी नहीं हो। तुम्हें चाहने वाला भी घृणित
है। 25 मैंने एक जन को उत्तर दिशा से प्रेरित
किया है। वह आ भी चुका है। वह पूरब
दिशा से मेरा नाम पुकारेगा। जिस तरह से
कुम्हार गीली मिट्टी को रौंदता है, उसी तरह
वह गर्वनरों को पीस डालेगा। 26 यह बात
किसने बतलाई थी, ताकि हम जान सकते।
पुराने समयों से किसने यह बताया, जिससे
हम यह कहें कि वह सच्चा है। बताने वाला
और सुनने वाला कोई नहीं है। तुम्हारे शब्दों
को सुनने वाला भी कोई नहीं। 27 सिय्योन से
मैंने ही पहले कहा था,"देखो, उन्हें देखो"
और मैंने सिय्योन को एक अच्छा संदेश देने
वाला भेजा। 28 जब मैंने देखा, तो किसी को न
पाया। उन में से कोई नहीं जो सही जवाब दे।
29 सुनो, उन सभी के काम बेकार हैं। उनकी
बनायी गई मूर्तियाँ झूठ हैं।

42 मेरे चुने दास पर नज़र डालो, जिसे
मैंने अब तक सम्भाला है। उस से
मैं खुश हूँ। उस पर मैंने अपना आत्मा रखा
है। वह देश- देश के लोगों के लिए इन्साफ
के काम करेगा। 2 वह ऊँची आवाज में न
बोलेगा। सड़क पर उसकी आवाज न सुनाई
देगी। 3 कुचले गए नरकट को वह न तोड़ेगा
और न ही टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा।
वह ईमानदारी से इन्साफ़ करेगा। वह थकेगा
नहीं और न ही हिम्मत छोड़ेगा, 4 जब तक
वह इस दुनिया में इन्साफ स्थापित न कर
ले द्वीपों के लोग उनकी शिक्षा का इन्तज़ार
करेंगे। 5 परमेश्वर आकाश को बनाने वाले
और तानने वाले हैं। जमीन से उपज वही
देते हैं। लोगों को सांस और आत्मा देने वाले
भी वही हैं। 6 वह कहते हैं, मैंने तुम्हें सच्चाई
से बुलाया है। तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हें
संभालूँगा। प्रजा के लिए मैं तुम्हें वाचा और
देशों के लिए रोशनी ठहराऊँगा। 7 ताकि तुम
अन्धों की आँखें खोल सको, जो जेल में हैं,
उन्हें आज़ाद करो और जो काल कोठरी में
हैं उन्हें निकालो। 8 मैं प्रभु हूँ और मेरा नाम
यही है। मैं अपनी महिमा किसी और को नहीं
दूँगा। जो बड़ाई मेरी की जानी चाहिए, वह
मैं मूरतों को नहीं दे सकता। 9 पुरानी बातें
खत्म हो गई हैं। अब मैं नई बातें बताऊँगा।

उनके होने से पहले मैं सुनाता हूँ।" 10 हे
समुद्र पर चलने वालो, हे समुद्र के रहने
वालो, हे द्वीपो, तुम सभी वहाँ के रहवासियों
के साथ परमेश्वर के लिए गीत गाओ और
दुनिया के आखिर तक उनकी बड़ाई करो।
11 जंगल और उनकी बस्तियाँ और केदार
के बसे हुए गाँव जयजयकार करें। सेला के
लोग भी जयजयकार करें। वे पहाड़ों की
चोटियों पर से ऊँचे शब्द से चिल्लाएँ। 12 वे
प्रभु की शान को दिखाएँ और सभी द्वीपों में
उनकी बड़ाई करें। 13 एक बहादुर की तरह
प्रभु निकलेंगे और फ़ौजी की तरह जलन
भड़काएँगे। वह ऊँची आवाज से पुकारेंगे
और अपने दुश्मनों पर जीत पाएँगे। 14 बहुत
समय से मैं खामोश रहा था और रूका रहा
था। अब मैं जच्चा की तरह चिल्लाऊँगा और
लम्बी लम्बी सांसे भरूँगा। 15 मैं पहाड़ों और
पहाड़ियों का सुखा डालूँगा। उनकी सारी
हरियाली झुलस जाएगी। मैं नदियों को द्वीप
कर दूँगा और तालाबों को सुखा डालूँगा।
16 अन्धों को मैं एक रास्ते से ले चलूँगा,
जिस का उन्हें ज्ञान नहीं है। ऐसे रास्तों से
उन्हें ले चलूँगा, जिसे वे नहीं जानते। 17 जो
लोग खुदी हुई और ढाली मूरतों पर भरोसा
रखते हैं और उनसे कहते हैं, "तुम हमारे ईश्वर
हो।" ऐसे लोग शर्मिन्दा हो जाएँगे। 18 बहरो,
सुनो और अन्धो आँखें खोलो। 19 मेरे दास
को छोड़ और कौन अन्धा है ? या मेरे भेजे
हुए संदेशवाहक की तरह कौन बहरा है ?
मेरे दोस्त की तरह अर्थात मेरे दास की तरह
कौन अन्धा है? 20 बहुत कुछ तुम देखते तो
हो, लेकिन उन पर ध्यान नहीं देते। कान खुले
हैं, लेकिन कोई सुनता नहीं। 21 अपनी सच्चाई
के कारण प्रभु ने अपने आदेशों की बड़ाई
की है 22 लेकिन ये लुटे पिटे लोग हैं। ये सभी
गड्ढों में फँस चुके है या काल कोठरी में
बन्द हैं। वे ऐसे शिकार हो गए हैं, कि उन्हें
कोई आज़ाद करने वाला नहीं । और ऐसी
लूट जिसे कोई नहीं कहता, कि उन्हें लौटा
दो।" 23 कौन है इसे सुनेगा, कौन ध्यान से
सुनेगा। 24 किसने याकूब को लुटने के लिए
दे दिया और इस्राएल को लुटेरों के अधिकार
में कर दिया ? क्या वह प्रभु ही नहीं थे, जिनके
खिलाफ़ हमने बलवा किया और जिनके
रास्तों पर हमने चलना न चाहा और इनकी
बातों को न माना। 25 इसलिए उनका गुस्सा
हमारे ऊपर उतरा और ख़तरनाक युद्ध भड़का
दिया। हालांकि लपटें उसके आस-पास पहुँच
गयी, लेकिन वह पहुँचा न सका और इसने
उसे भस्म भी कर दिया, फिर भीआँखें न
खुली।

43 लेकिन अब हे याकूब तुम्हारे बनाने
वाले कहते हैं, "मत डरो, मैंने तुम्हें
आज़ाद किया है। मैंने तुम्हें नाम लेकर
बुलाया है। तुम मेरे ही हो। 2 जब तुम पानी
में से होकर गुज़रो, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।
तुम नदी में डूबोगे नहीं। जब तुम आग में
से गुज़रोगे, तुम्हें कुछ नुक्सान न होगा। मैं
तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ। 3 मैं इस्राएल का
पवित्र और मुक्तिदाता हूँ। तुम्हें छुड़ाने के
लिए मैंने मिस्र को तथा तुम्हारे बदले कूश
और सबा को दिया । 4 मेरी निगाह में तुम
कीमती और इज्ज़त के लायक हो। मुझे तुम
से प्यार है, इसलिए मैं तुम्हारे बदले इन्सान
और जीवन के बदले राज्य -राज्य के लोग
दूँगा। 5 डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ
हूँ। पूर्व से मैं तुम्हारे वंश को लाऊँगा और
पश्चिम से भी इकट्ठा करूँगा। 6 उत्तर को
मैं हुक्म दूँगा, कि उन्हें जाने दे तथा दक्षिण
से कि उनको रोके नहीं। मेरे बेटों को दूर
से तथा मेरी बेटियों को दुनिया के कोने से
ले आओ। 7 अर्थात हर एक को जो मेरे नाम

का कहलाता है, जिसको मैंने अपनी बड़ाई
के लिए बनाया है।" 8 उन लोगों को लाओ,
जिनके पास आँखें हैं, लेकिन देखते नहीं,
कान हैं लेकिन सुनते नहीं। 9 देश-देश के
लोगों को इकट्ठा किया जाए। इनमें से कौन
हैं जो पुरानी घटनाओं को बता सकेंगे और
एलान कर सकेंगे? क्या कोई एक दिन पहले
घटने वाली बातों के बारे में बता सकता
है ? ऐसी भविष्यवाणियों का गवाह कौन
है? कौन यह साबित कर सकता है, कि
उन्होंने सच कहा ? 10 "लेकिन हे इस्राएल
तुम मेरे गवाह हो," यह प्रभु कहते हैं। और
तुम मेरे दास हो। 11 तुम इसलिए मुझ पर
विश्वास करो और जानो, कि मात्र मैं ही
परमेश्वर हूँ। मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं,
और न होगा। 12 मैंने पहले ही से तुम्हारी
आज़ादी के बारे में बता दिया था। जैसे
मैंने कहा था, कर दिखाया। मैंने तुम्हें बचा
लिया। किसी विदेशी ईश्वर ने ऐसा कभी नहीं
किया था। तुम इस सच्चाई के साक्षी भी हो।
13 हमेशा से हमेशा तक मैं ही परमेश्वर हूँ जो
मैं करता हूँ उसकी खिलाफ़त कोई नहीं कर
सकता। 14 इस्राएल का परमेश्वर और तुम्हारा
छुड़ाने वाला कहता है, मैं एक हमला करने
वाली फौज को तुम्हारी खातिर बेबिलोन
के विरोध में भेजूँगा। बेबिलोन वासियों को
उन्ही जहाजों से लौटना पड़ेगा, जिन पर उन्हें
घमण्ड है। 15 मैं इस्राएल का पवित्र, इस्राएल
का रचने वाला और उसका राजा हूँ। 16 मैं
ही हूँ जिसने समुद्र को दो भागों में बाँट कर
सूखा रास्ता बना दिया था। 17 मैंने ही मिस्र
की शक्तिशाली फ़ौज को रथों और घोड़ों
के साथ बुला लिया था। मैंने उन्हें पानी की
लहरों में डुबा दिया था। वे एक मोमबत्ती की
टिमटिमाती बत्ती के समान हो गए। 18 लेकिन
वह सब भूल जाओ, जो कुछ मैं करने जा
रहा हूँ, उसकी तुलना में वह सब कुछ भी
नहीं था। 19 एक नया काम मैं करने वाला हूँ।
देखो, मैंने उसकी शुरूआत भी कर दी है।
क्या तुम्हें दिख नहीं रहा है ? घर वापस आने
के लिए मैं अपने लोगों के लिए एक रास्ता
बनाऊँगा। मैं सूखी ज़मीन पर उनके लिए नदी
बनाऊँगा। 20 जंगल के जानवर मेरा धन्यवाद
करेंगे। सियार और शुतुरमुर्ग भी पानी के लिए
मेरी तारीफ करेंगे। हाँ, मैं मरुस्थल में सोते
निकाल डालूँगा। ताकि मेरे चुने हुए लोग
तरावट पा सकें। 21 इस्राएल को मैंने अपने
लिए बनाया है। एक दिन आएगा, जब वे
सारी दुनिया के सामने मेरा अनादर करेंगे।
22 लेकिन मेरे लोगो तुम मुझ से मदद नहीं
माँगते हो। तुम मुझ से थक चुके हो। 23 तुम
कुर्बानी के लिए मेमना मेरे लिए नहीं लाए।
कुर्बानियों से तुमने मुझे इज्ज़त नहीं दी है,
हाँलाकि 24 तुम मेरे लिए खुशबूदार धूप नहीं
लाए हो और न ही चर्बी से मुझे खुश किया
है। उल्टा तुमने अपने अपने अपराधों और
बुराईयों का बोझ मुझ पर बढ़ा दिया है। 25 मैं,
हाँ केवल मैं ही हूँ, जिसने अपने लिए तुम्हारे
सारे अपराधों को मिटा दिया है और उनके
बारे में कभी सोचूँगा तक नहीं। 26 आओ, हम
बातचीत करें। यदि तुम्हारे पास कोई दलील
है, तो पेश करो। 27 शुरूआत ही से तुम्हारे
पूर्वजों ने मेरी न सुनी और ज़िद्दी ठहरे-तुम्हारे
सभी अगुवों ने मेरे बताए रास्ते को तुच्छ
जाना। 28 इसलिए मैंने तुम्हारे पुरोहितों को
इज़्ज़त न दी और इस्राएल को भविष्य में
बर्बादी और शर्मिन्दगी के लिए ठहरा दिया।

44 परन्तु अब हे मेरे दास याकूब," हे
मेरे चुने हुए इस्राएल, सुनो, 2 तुम्हारे
बनाने वाले याहवे, जो तुम्हें तुम्हारे जन्म ही
से जानते हैं और मदद करने वाले हैं, कहते हैं,
'हे मेरे दास याकूब, हे मेरे चुने हुए यशूरून,

न डरो। 3 क्योंकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी
और सूखी ज़मीन पर धाराएँ बहाऊँगा: मैं
तुम्हारे वंश पर अपनी आत्मा और तुम्हारी
सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा। 4 वे
उन मजनुओं की तरह बढ़ेंगे, जो धाराओं के
पास घास के बीच में होते हैं। 5 कोई कह
सकता है,मैं याहवे का हूँ, कुछ अपना नाम
याकूब रख सकते हैं, कोई अपने हाथ पर
लिख सकता है, मैं याहवे का हूँ और मेरा
कुल नाम इस्राएली है। 6 याहवे जो इस्राएल
के राजा हैं, अर्थात सेनाओं के याहवे जो
उसको छुड़ानेवाले हैं, उनका कहना यह है,
“मैं शुरुआत से हूँ और आखिर तक रहूँगा।
मेरे अलावा और कोई परमेश्वर है ही नहीं।
7 मेरी तरह कौन है, वह अपना दावा सामने
रखे? वह एलान करे और मुझे समझाए।
वह ऐसा करे, जैसा मैंने पुराने समय में जब
उन्हें स्थापित किया और उनके भविष्य
के बारे में बता दिया था। 8 तुम्हें डरने की
आवश्यकता नहीं, क्या मैंने पुराने समयों
से यह बात नहीं सुनाई? तुम मेरे गवाह
हो। क्या मुझे छोड़कर और कोई परमेश्वर
है? नहीं, मुझे छोड़कर और कोई चट्टान
नहीं है; मैं और किसी को जानता ही नहीं।
9 जो लोग खोदकर मूरत बनाते हैं, वे सभी
बेकार हैं और जिन वस्तुओं मे वे आनन्द
की खोज करते हैं, उन से कुछ फायदा न
होगा। उनके गवाह खुद न तो कुछ देखते
हैं और न ही जानते हैं। 10 किसने देवता
को बनाकर या मूर्ति को ढालकर, बेकार
काम किया। 11 देखो, उसके सभी साथियों
को लज्जित होना पड़ेगा, क्योंकि बनानेवाले
इन्सान ही तो हैं। वे सभी खड़े हो जाएँ,
इकट्ठे हो जाएँ, वे थरथराएँ और शर्मिन्दा हों।
12 एक मनुष्य जलते अँगारों पर काटने वाला
हथियार बनाता और हथौड़ों से बनाता है।
वह अपनी ताकतवर बाजुओं से काम करता
है, उसे भूख भी लगती है, उसकी ताकत कम
हो जाती है, वह पानी नहीं पीता है, और थक
जाता है। 13 दूसरा इन्सान लकड़ी की मूर्ति
बनाता है. वह धागे से उस पर लाल निशान
लगाता है।वह रन्दा इस्तेमाल करता हैऔर
परकार से रेखा खींचकर उसे सुन्दर मनुष्य
का आकार देता है। इसके बाद ही उसे किसी
घर में स्थापित किया जा सकता है। 14 वह
देवदार को काटता और जंगल के पेड़ों में से
अपने लिए सनौवर या बांज पेड़ का एक पेड़
छाँटकर उस पर निगरानी रखता है। वह चीड़
का पौधा लगाता है, जो बरसात का पानी
पाकर बढ़ता जाता है। 15 इसी का इस्तेमाल
बाद में मनुष्य जलाने के लिए करता है। कुछ
का इस्तेमाल वह हाथ तापने केलिए करता
है। खाना बनाने के लिए भी उसका उपयोग
करता है। कुछ लकड़ी से वह मूर्ति बनाकर
उसे पूजता है या उसके सामने सिज़दा करता
है। 16 उसका आधा हिस्सा वह आग में
जलाता है और उस पर मांस भूंजकर खाता
और तृप्त हो जाता है।फिर आग तापकर
कहता है, अहा!मुझे गर्माहट मिल रही है, मैं
आग देख सकता हूँ। 17 बाकी हिस्से से वह
एक देवता अर्थात एक खुदी हुई मूर्ति बनाता
है। वह उसके सामने झुकता है, उसकी पूजा
करता है। उससे वह प्रार्थना करके कहता है,
‘ मुझे बचाईये, क्योंकि आप ही मेरे ईश्वर
हैं।’ 18 वे यह सच्चाई नहीं जानते हैं, न ही
समझते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उनकी आँखें
बन्द कर दी हैं, ताकि देख न पाएँ। उनके
मन ऐसे कर दिये कि समझ न सकें। 19 लोग
इस पर ध्यान नहीं देते हैं, न ही उनके पास
इतनी समझ है कि कह सकें, ‘ उसका एक
हिस्सा मैंने जला दिया और उसके अंगारों
पर रोटी पकाई है। मैंने गोश्त भूनकर खाया

है, तब मैं क्या उसके आधे हिस्से से घिनौनी
वस्तु बनाऊँ?" क्या मैं लकड़ी के टुकड़े की
पूजा-पाट करूँ?" 20 वह राख से पेट भरता
है। छली मन ने उसे भटका दिया है। वह न
अपने आप को बचा सकता है और न ही
यह कह सकता है, 'जो मेरे दाहिने हाथ में है
वह सब क्या झूठ नहीं? 21 'हे याकूब, इन
बातों को याद रखो। हे इस्राएल, मैं तुम्हें
भूलूँगा नहीं। 22 मैंने काली घटा की तरह
तुम्हारे अपराधों और घने कोहरे की तरह
तुम्हारे अपराधों को मिटा दिया है। मेरी ओर
लौट आओ, क्योंकि मैंने तुम्हें छुड़ा लिया
है। 23 हे स्वर्गो, ऊँची आवाज़ से आनन्द
मनाओ, क्योंकि याहवे ने यह किया है! हे
पृथ्वी के निचले स्थानों, जयजयकार करो।
हे पहाड़ो, जंगल और उसके सारे पेड़ो, तुम
सभी गला खोलकर खुशी मनाओ, क्योंकि
याहवे ने याकूब को छुड़ा लिया है, वह
इस्राएल में अपनी महिमा प्रकट करते हैं।
24 तुम्हारे छुड़ानेवाले याहवे, जिन्होंने तुम्हें
गर्भ से बनाया, उनका कहना है: ' मैं याहवे
ही सब को बनानेवाला हूँ। मैंने ही आकाश
को ताना है और अकेले ही सारी पृथ्वी
को फैलाया है। 25 मैं झूठों के चिन्हों को
बेकार कर देता हूँ और भविष्य बतानेवालों
को मूर्ख ठहराता हूँ। मैं बुद्धिमानों को पीछे
हटा देता हूँ और उनके ज्ञान को बेवकूफी
में बदल देता हूँ। 26 मैं अपने दास के वचन
को पूरा करता हूँ और अपने संदेशवाहकों
के काम को कामयाब करता हूँ। मैं ही हूँ जो
यरुशलेम के बारे में कहता हूँ, ' वह फिर से
बसाई जाएगी!' और यहूदा के नगरों के बारे
,' उनका पुनर्निमाण होगा।' और मैं उसके
खण्डहरों को फिर से खड़ा करूँगा। 27 मैं
ही हूँ जो गहरे समुद्र से कहता हूँ , 'सूख
जाओ' और मैं तुम्हारी नदियों को सुखा
दूँगा। 28 मैं ही हूँ, जिसने कुस्रू राजा के बारे
में कहा है, 'वह मेरा चरवाहा है, वह मेरी
इच्छा पूरी करेगा,' और यरुशलेम के विषय
एलान करता हूँ, ' वह फिर से बसाई जाएगी,'
और मन्दिर के विषय, ' तुम्हारी नेव डाली
जाएगी।"

45 मुझ प्रभु के शब्द हैं,"अपने अलग
किए कुस्रू के सामने तमाम देशों को
हरा दूँगा। दूसरे राजाओं की कमर ढीली हो
जाएगी। उनके आगे नगर के दरवाजों को
ऐसे खोल दूँगा, कि वे बन्द न हो पाएँगे।
2 तुम्हारे आगे-आगे मैं चलूँगा और ऊबड़-
खाबड़ जगहों को समतल करूँगा। मैं काँसे
के फाटकों के टुकड़े कर डालूँगा। लोहे की
बेड़ियों को तोड़ डालूँगा। 3 मैं तुम्हें अन्धेरे
में छिपा खज़ाना और गुप्त में गढ़ी सम्पत्ति
दूँगा, जिससे तुम जान लो, कि मैं इस्राएल का
परमेश्वर प्रभु हूँ जो तुम्हें नाम लेकर बुलाता
है। 4 अपने दास याकूब और अपने चुने
हुए इस्राएल के कारण मैंने तुम्हे बुलाया है।
हालाँकि तुम मेरी सुना नहीं करते थे, फिर भी
मैंने तुम्हें आदर दिया है। 5 मैं परमेश्वर हूँ, मेरे
मुकाबले में और कोई नहीं। मैं, परमेश्वर युद्ध
के लिए तुम्हारी बाँह को मजबूत करता हूँ,
हालाँकि तुमने मुझे महत्व नहीं दिया है। 6 मैं,
इसलिए ऐसा करता हूँ ताकि पूर्व से पश्चिम
तक सभी लोग जान जाएँ, कि मुझे छोड़ और
कोई परमेश्वर नहीं है। 7 उजियाले और रोशनी
को मैंने बनाया है। मैं अच्छा समय (फारसी
और मादी लोगों के लिए), और बेबिलोन
के लिए बुरा समय लाऊँगा। 8 हे आकाश
खुल जाओ और अपनी भलाईयों को ऊपर से
बरसा दो, पृथ्वी के खुलने से बचाव(उद्धार)
उत्पन्न हो और धार्मिकता भी उसके साथ
उग आए। मुझ याहवे ही ने इसे बनाया है।
9 अफसोस उस इन्सान पर जो अपने जन्म

के बारे मे पिता - माता से सवाल जवाब करे। 10 यह कितनी भयानक बात होगी यदि एक नवजात शिशु अपने माता-पिता से कहे, 'मुझे क्यों जन्म दिया, आपने, मुझे ऐसा क्यों बनाया ?" 11 सबको बनाने वाले इस्राएल के परमेश्वर का कहना है, "क्या तुम मेरी कही हुई बातों के बारे में सवाल करोगे? मैंने जो कुछ भी बनाया, उसके बारे में प्रश्न उठाओगे ? 12 मैं वह हूँ जिसने इस दुनिया को इसमें रहने वालों को बनाया है। आकाश भी मेरे हाथों की कारीगरी है। तारों को मैंने बनाया है। 13 अपने सही मकसद को पूरा करने के लिए मैंने कुस्त्रू को उठा कर खड़ा किया है। मैं उसका मार्गदर्शन करूँगा। वह मेरे शहर को बसाएगा और मेरे लोगों को गुलामी से निकालेगा। किसी फायदे के लिए वह ऐसा न करेगा।" 14 प्रभु यह कहते हैं," मिस्र की पैदावार और इथियोपिया का माल और सबाई जो बड़े डील डौल के हैं, सभी तुम्हारे पास चले आएँगेऔर तुम्हारे ही हो जाएँगे। कैदियों की तरह उन्हें तुम्हारे पीछे जंजीरों में बन्धे आना पड़ेगा। तुम्हारे साम्हने वे गिर पड़ेंगे और कहेंगे, जो मात्र एक परमेश्वर हैं, वह तुम्हारे साथ हैं। 15 सचमुच, इस्राएल के परमेश्वर, हमें बचानेवाले, आप अजीब तरह से काम करते हैं। 16 जो लोग मूर्तियाँ बनाते हैं, वे शर्मिन्दा होंगे। 17 लेकिन प्रभु इस्राएलियों को हमेशा का उद्धार देंगे। इसके बाद उन्हें शर्मिन्दा न होना पड़ेगा। 18 प्रभु परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया है और हर चीज को एक निश्चित स्थान पर रखा है। लोगों के रहने के लिए इसे बनाया है, इसलिये नहीं कि यह उल्टी सीधी और खाली पड़ी रहे।" वह कहते हैं,"मैं ही सृष्टिकर्ता हूँ और कोई नहीं।" 19 मैंने ऊँचे शब्दों में अपने वायदों का एलान किया है। मैंने वीरान जगहों में इन वायदों को फुसफुसाया नहीं है, कि मेरे शब्दों के मतलब को कोई समझा न पाए। 20 आस-पास के देशों से शरणार्थी लोग इकट्ठे होकर यहाँ आएँ। लकड़ी के बनाए देवी-देवता किसी को बचा नहीं सकते, उन्हें यहाँ वहाँ ले जाना बेवकूफी है। 21 सलाह मशविरा और वाद-विवाद करो और सबूत दो कि मूर्ति-पूजा फायदेमन्द है। बहुत समय पहले किसने यह सब बताया था ? किस मूर्ति ने भविष्य के बारे में कुछ बताया? क्या मैंने ऐसा नहीं किया ? मुझे छोड़ ओर कोई नहीं जो ईमानदार हो या बचाने वाला हो। 22 मैं ही परमेश्वर हूँ, मेरे अलावा और कोई नहीं है, सारी दुनिया अपने बचाव के लिए मुझ से आशा रखे। 23 अपने नाम से मैंने शपथ खाई है और मैं अपनी कही बात से मुकरता नहीं हूँ। सभी लोग घुटने टेकेंगे और मेरे नाम को मान लेंगे। 24 लोग एलान करेंगे, "प्रभु मेरी चाल चलन और बल के ज़रिया हैं।" जो लोग उन से गुस्सा करेंगे, वे पास आकर शर्मिन्दगी महसूस करेंगे। 25 इस्राएल के सभी वंश निरपराध (धर्मी) ठहराए जाएँगे और उन्हीं पर वे घमण्ड करेंगे।

46 बेबिलोन के देवता बाल और नबो गाड़ी पर ले जाए गए। लेकिन देखो, गाड़ी खींचने वाले जानवर भारी बोझ की वजह से लड़खड़ा रहे हैं। 2 मूर्तियाँ और उन्हें ढोने वाले झुक चुके हैं। देवता लोगों को नहीं बचा सकते। इन्सान भी इन देवताओं को बचा नहीं सकते। एक साथ दोनों ही गुलामी में चले जाते हैं। 3 "जो लोग इस्राएल में छूट गए हैं, मेरी सुनो, मैंने तुम्हें बनाया है और जन्म ही से संभाला है। 4 तुम्हारे जीवन भर यहाँ तक कि बाल पकने तक मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा। तुमको मैंने बनाया है और तुम्हें संभालूँगा भी। 5 "मेरी तुलना तुम किस

से करोगे ? मेरी बराबरी कौन कर सकता
है? 6 कुछ लोग अपने सोने-चाँदी को देकर
सुनार से मूरत बनवा लेते हैं। इसके बाद वे
उसके सामने झुकते और पूजा करते हैं। 7 वे
इसे अपने कन्धे पर उठा कर घूमते है। वे
जहाँ कहीं इसे रखते हैं, वह वही रहती है।
वह चल-फिर नहीं सकती। किसी के प्रार्थना
करने पर उससे जवाब नहीं मिलता है। यह
किसी को परेशानी में से निकाल भी नहीं
सकती है। 8 तुम अपराध करने वालो, यह
मत भूलो इस पर ध्यान दो। 9 इतिहास में जो
कुछ मैंने किया है, वह सब भुलाना नहीं। मैं
ही परमेश्वर हूँ, मुझे छोड़ और कोई नहीं है।
10 जो कुछ होने वाला है, मैं ही उसे पहले से
बता सकता हूँ। जो मेरी योजना होती है, वह
पूरी होती है। मैं जो चाहता हूँ करता हूँ। 11 पूर्व
से मैं एक भक्षक चिड़िया को बुलाऊँगा-एक
ऐसा अगुवा जो मेरी बात मानेगा और वह
दूर दराज से आएगा। मैंने जो करने को कहा
है, वह होगा।" 12 ज़िद्दी और दुष्ट लोग,"
मेरी सुनो! 13 मैं सब कुछ ठीक करने वाला
हूँ, बहुत देर बाद नहीं, लेकिन जल्दी ही।
मैं यरूशलेम को बचाने पर हूँ और अपनी
महिमा भी इस्राएल को दूँगा।"

47 "हे बेबिलोन जिस पर कोई जीत
हासिल न कर पाया, आकर धूल में
बैठो। तुम्हारी शान शौकत का वक्त खतम
हो चुका है। बेबिलोन की बेटियो (लोग),
भविष्य में तुम कभी भी खूबसूरत, और
कोमल राजकुमारियाँ न होगी। 2 भारी चक्की
के पाट को लेकर अनाज को रौंदो। अपने
घूँघट को हटाओ और घाघरा समेट कर
नदियों को पार करो। लोग तुम्हारा यह
हाल देखने पाएँ। 3 तुम नंगे हो जाओगे और
शर्मिन्दगी का सामना करोगे। तुम्हारे साथ
मैं कोई समझौता न करूँगा लेकिन बदला
लूँगा। 4 हमारा छुड़ाने वाला, जिसका नाम
है, प्रभु शक्तिमान, वही इस्राएल का पवित्र
है। 5 बेबिलोन की बेटियों अन्धेरे में अकेली
बैठी रहो। आज के बाद तुम कभी भी राज्यों
की रानी न कहलाओगी। 6 मैं अपने लोगों से
नाराज़ था, और तुम्हारे हाथों के द्वारा उन्हें
सज़ा दी। लेकिन बेबिलोन तुमने उन पर दया
नहीं दिखाई। तुमने ज़बरदस्ती बुज़ुर्ग लोगों
से बोझ उठवाया। 7 तुमने सोचा था कि तुम
दुनिया पर हमेशा शासन करोगे। तुमने मेरे
लोगो का ध्यान न रखा। न ही यह सोचा
कि उसका परिणाम क्या होगा। 8 तुम लोग
सुख-विलास की चाहत रखते हो। आराम
की ज़िन्दगी तुम्हें पसन्द है। तुम समझते हो
कि दुनिया में सबसे बड़े हो। तुम समझते
हो कि तुम्हें किसी की जरूरत नहीं, न ही
किसी को अपना हिसाब देना है। तुम सोचते
हो कि तुम्हारा विधवापन कभी नहीं आएगा
न ही बच्चे नाश होंगे। 9 एक पल में दोनों
बातें घटेंगी: विधवापन और सन्तान खोना।
हाँ यह विपत्ति तुम पर आएगी चाहे तुम
जितना जादू टोना करो। 10 अपनी दुष्टता
में तुम बहुत सन्तुष्ट हो और कहते हो, "
कौन मुझे देखता है ? "तुम्हारे ज्ञान और
बुद्धि के कारण तुम मुझ से दूर हो चुके हो।
11 अचानक मुसीबत तुम पर आ पड़ेगी और
तुम इससे बच न सकोगे। अचानक ही वह
तुम पर आएगी और तुम संभल न सकोगे।
12 उन दुष्टात्माओं को बुलाओ, जिनकी तुम
पूजा करते रहे हो। उनसे कहा कि वे एक
बार फिर लोगों के मन में डर पैदा करने
में तुम्हारी मदद करे। 13 ज़रूरत से ज़्यादा
तुम्हारे पास सलाहकार, ज्योतिष और टोन्हे
हैं। वे सामने आएँ और आने वाली मुसीबतों
से बचाएँ। 14 लेकिन वे सभी आग मे जलने
वाली घास की तरह हैं। वे खुद को आग

से नहीं बचा सकते। वे तुम्हारी मदद नहीं
कर पाएँगे। 15 बचपन से जिन दोस्तों के साथ
तुमने व्यापार किया है, गायब हो जाएँगे। तुम
को बचाने के लिए कोई आगे न आएगा।”

48 हे याकूब के परिवार, जो यहूदा के
मूल से उत्पन्न हुए, मेरी सुनो, “तुम
जो इस्राएल के परमेश्वर के नाम से शपथ
लेते हो, तुम उनकी कोई बात नहीं मानते
हो। 2 हालाँकि तुम अपने आप को पवित्र
शहर कहते हो और परमेश्वर पर आसरा
रखने का दावा करते हो। 3 मैंने बार-बार तुम्हें
चिताया था कि भविष्य में क्या होगाऔर
अचानक ऐसा हुआ भी। 4 मुझे मालूम है कि
तुम कितने ज़िद्दी हो। तुम्हारी गर्दनें न मुड़ने
वाले लोहे की तरह हैं। काँसे की तरह तुम
सख्त हो। 5 इसलिए मैंने तुम्हें पहले से बताया
था। इसलिए तुम नहीं कह सकते कि मेरी
मूर्तियों ने किया। मेरी लकड़ी और धातु की
मूर्तियों की आज्ञा से सब कुछ हुआ। 6 मेरी
भविष्यवाणियों को तुमने सुना था उन्हें पूरा
होते भी तुमने देखा लेकिन मानने से इन्कार
किया। अब मैं तुम्हें नई बातें बताऊँगा, जो
इससे पहले नहीं बताई थीं। गुप्त बातें जो
तुमने नहीं सुनी थीं। 7 ये बातें बिल्कुल नई
हैं। ये पुरानी नहीं हैं। इसलिए तुम नहीं कह
सकते, कि हमें यह मालूम था। 8 हाँ मैं तुम्हें वे
बातें बताऊँगा जो बिल्कुल नई हैं ।मैं जानता
हूँ कि तुम कैसे द्रोही हो। तुम्हारे बचपन से
तुम बलवा करने वाले रहे हो। पूरे तरह से
सड़े हुए हो। 9 मैं अपने लिए और अपने नाम
की इज़्ज़त की खातिर, अपने गुस्से को रोके
रखूँगा और तुम्हें मिटा नहीं डालूँगा। 10 मैंने
तुम्हें ताया है, लेकिन चाँदी की तरह नहीं।
लेकिन मैंने तुम्हें दुखों की भट्टी में ताया है।
11 मेरे खुद के लिए मैं तुम्हें छुड़ाऊँगा। तब
मुझे न जानने वाले इस बात का दावा नहीं
कर पाएँगे, कि उनके ईश्वरों ने मुझ पर जीत
पा ली है। मैं नहीं चाहूँगा, कि जो शान मेरी
है, वह उन्हें मिले। 12 मेरे चुने हुए इस्राएल
(याकूब), मैं वही परमेश्वर हूँ जो शुरूआत
और अंत भी है। 13 मैंने ही पृथ्वी की नींव
डाली थी। जब मैंने अपनी हथेली आकाश
की ओर फैलाकर कहा,तब सब कुछ की
रचना हुई। 14 क्या यह बात कभी किसी मूरत
ने तुम को बताई ? तुम सभी आकर सुनो,
परमेश्वर ने कुस्रू को अपने साथ कर लिया
है। बेबिलोन देश को बर्बाद करने के लिए
उन्होंने उसे चुन लिया है। 15 मैं कह चुका
हूँ, मैं उस को बुला रहा हूँ। मैं उसे भेजूँगा
और जिताऊँगा। 16 पास में आओ और सुनो।
मैंने तुम्हें साफ-साफ हमेशा बताया है कि
क्या -क्या होने वाला है, ताकि तुम समझने
में गलती न करो। 17 “तुम्हारे छुड़ानेवाले
प्रभु जो इस्राएल के पवित्र हैं, कहते हैं कि
मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो सिखाता हूँ कि
सही क्या है, और तुम्हें कौन सा रास्ता
अपनाना चाहिए। 18 काश, तुमने मेरी आज्ञा
मानी होती। तब तुम्हें ऐसी शान्ति मिलती
जैसी नदी शान्त होती है और तुम्हारी खराई
लहरों की तरह, 19 तब तुम्हारी गिनती तट
की बालू की तरह होती । जिसकी गिनती
करना मुश्किल है। तब तुम्हारे नाश होने का
सवाल ही नहीं उठता। 20 तुम अभी गुलामी
में से निकल आओ। गाते हुए बेबिलोन और
वहाँ के लोगों को छोड़ दो। पृथ्वी के छोर
तक नारे लगा कर कहो, “प्रभु ने अपने
दासों (इस्राएलियों) को बचाया है। 21 जब
वे मरूस्थल से गुज़रे थे, उन्होंने चट्टान में से

पानी निकाल कर पिलाया। 22 लेकिन दुष्ट
को शान्ति हो ही नहीं सकती, यह प्रभु कहते
हैं।"

49 हे द्वीपो, मेरी सुनो, और दूर-दूर देश
के लोगो,ध्यान दो। याहवे ने मुझे
गर्भ ही से बुलाया, जब मैं माँ के पेट ही में
था,तभी उन्होंने मेरा नाम बताया। 2 उन्होंने
मेरे मुँह को तेज तलवार की तरह बनाया है।
अपने हाथ की आड़ में छिपा रखा है और मुझे
खास तीर बनाकर तरकश में छिपा रखा है।
3 वह मुझ से बोले,"तुम मेरे दास इस्राएल हो,
मैं तुम में अपनी महिमा दिखाऊँगा।" 4 लेकिन
मैंने कहा," मैंने बेकार ही में मेहनत की,
बेकार ही में अपनी ताकत खो दी, फिर भी
मेरा न्याय तो परमेश्वर ही करेंगे और वही
मेहनत का फल देंगे। 5 मुझे गर्भ से इसीलिए
रचा गया कि मैं उनका दास बनकर याकूब
को उनकी ओर मोड़ दूँ,जिससे इस्राएल
उनके पास इकट्ठा हो सके- क्योंकि याहवे की
दृष्टि में मैंने इज़्ज़त पाई है और मेरे परमेश्वर
मेरे बल हैं। 6 उनका कहना है: " यह मामूली
बात है कि तुम याकूब के गोत्रों का उद्धार
करने और इस्राएल के बचाए हुए लोगों को
लौटा लाने के लिए मेरा दास ठहरे।मैं देश
देश के लोगोंके लिए तुम्हें रोशनी ठहराऊँगा
जिससे कि मेरा उद्धार दुनिया के एक कोने से
दूसरे कोने तक फैल जाए। 7 जिससे इन्सान
नफरत करते और देश नीच समझते हैं और
जो अपराधियों का दास है, इस्राएल के
छुड़ानेवाले और उसके पवित्र अर्थात याहवे
कहते हैं, कि राजा उसे देखकर खड़े हो
जाएँगे, शासक सिज़दा करेंगे, ऐसा प्रभु के
लिए होगा, जो सच्चे और इस्राएल के पवित्र
हैं और जिन्होंने तुम्हें चुना है। 8 याहवे कहते
हैं, "अपनी खुशी के समय मैंने तुम्हारी सुन
ली, उद्धार करने के दिन मैंने तुम्हारी मदद की
है: मैं तुम्हारी रक्षा करके तुम्हें लोगों के लिए
वाचा ठहराऊँगा, ताकि देश को मजबूत कर
दोऔर उजड़ी जगहों को उनके अधिकारियों
के वश में कर दो और बन्दियों से कहो,
जेल में से निकलो। 9 और जो अन्धेरे में हैं,
उन से कहो, अपने आप को दिखाओ। वे
रास्ते के किनारे किनारे पेट भर सकेंगे। सब
मुण्डे टीलों पर भी उन्हें चरागाह मिलेगा।
10 वे भूखे और प्यासे न होंगे, न उन्हें लू
और धूप लगेगी, क्योंकि जो उन पर दया
दिखाते हैं, वही उनके मार्ग दर्शक होंगे और
पानी के सोतों के पास उन्हें ले जाएँगे।
11 और मैं अपने सब पहाड़ों को रास्ता बना
डालूँगा और मेरे राजमार्ग ऊँचे किए जाएँगे।
12 देखो ये दूर से आएँगे, ये उत्तर ,पश्चिम
और सिनीम देश से आएँगे। 13 हे आकाश
जयजयकार करो, हे पृथ्वी मगन हो, हे
पहाड़ो गला खोल कर जयजयकार करो,
क्योंकि याहवे ने अपनी प्रजा को शान्ति
दी है और अपने दीन लोगों पर दया की
है। 14 लेकिन सिय्योन ने कहा," याहवे ने
मुझे छोड़ दिया है और मुझे भुला दिया
है। 15 यह कैसे हो सकता है कि कोई माँ
अपने दूध पीते हुए बच्चे को भूल जाए और
अपने पैदा किए बच्चे पर दया न खाए?
हाँ वह भूल सकती है, लेकिन मैं कभी नहीं
भूल सकता। 16 देखो, मैंने तुम्हारी तस्वीर
अपनी हथेलियों पर खोद कर बनाई हुई
है। तुम्हारी शहरपनाह मेरी आँखों के सामने
रहती है। 17 तुम्हारे बच्चे फुर्ती से आ रहे
हैं और खण्डहर बनानेवाले और उजाड़ने
वाले तुम्हारे बीच से निकले जा रहे हैं।
18 अपनी आँखें उठाओ और तब देखो, वे
सभी इकट्ठे होकर तुम्हारे पास आ रहे हैं।
19 तुम्हारी जो जगहें सुनसान और उजड़ी
पड़ी हैं और तेरे जो देश खण्डहर पड़े हैं उन

में निवासी समा नहीं सकेंगे। तुम्हें बर्बाद
करने वाले दूर हो जाएँगे। 20 तुम्हारे बेटे जो
तुम से ले लिए गए, फिर वे तुम्हारे कान में
कहेंगे, कि यह जगह हमारे लिए कम पड़
रही है, हमें रहने के लिए और जगह चाहिये।
21 तब तुम मन में कहोगी, किस ने मेरे लिए
जन्माया, मैं तो पुत्रहीन और बाँझ हो गई
थी, गुलामी में यहाँ- वहाँ घूमती रही,तो फिर
इनको किसने पाला? देखो, मैं अकेली रह
गई थी, फिर ये कहाँ थे? 22 प्रभु याहवे कहते
हैं, देखो, मैं अपना हाथउठाकर देश देश के
लोगों को इशारा करूँगाऔर उनके सामने
अपना झन्डा खड़ा करूँगा, तब वे तुम्हारे
बेटों को अपनी गोद में लिए आएँगे और
तुम्हारी बेटियों को अपने कन्धे पर चढ़ाकर
तुम्हारे पास पहुँचाएँगे। 23 राजा तुम्हारे निज
सेवक और उनकी रानियाँ दूध पिलाने के
लिए तुम्हारी धाईयाँ होंगी। वे अपनी नाक
ज़मीन पर रगड़कर तुम्हें दण्डवत करेंगे और
तुम्हारे पैरों की धूल चाटेंगे। तब तुम यह
जान लोगी, कि मैं याहवे हूँ। मेरी प्रतीक्षा
करने वाले कभी भी लज्जित न होंगे। 24 क्या
बहादुर के हाथ से शिकार छीना जा सकता
है? क्या दुष्ट के हाथ से बँधे लोगों को मुक्ति
मिल सकती है? 25 फिर भी याहवे का कहना
है , वीर के बँधुवे उस से छीन लिए जाएँगे
और बलात्कारी का शिकार उसके हाथ
से छुड़ा लिया जाएगा, क्योंकि जो तुम से
लड़ते हैं, उन से मैं खुद लड़ूँगा और तुम्हारे
बाल बच्चों का उद्धार करूँगा। 26 जो तुम
पर अन्धेर करते हैं, उनको मैं उन्हीं का
मांस खिलाऊँगा,और वे अपना खून पीकर
ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु से होते
हैं। तब सब प्राणी जान सकेंगे, कि तुम्हारा
उद्धारकर्ता याहवे और तुम्हारा छुड़ानेवाला,
याकूब का शक्तिमान मैं ही हूँ।

50 तुम्हारी माता का तलाकनामा कहाँ
है, जिसे मैंने त्यागते ही दिया था?
या मैंने किस व्यापारी के हाथ तुम्हें बेचा?
याहवे कहना है,सुनो, तुम अपने ही गलतियों
के कारण बिक गए और अपराधों के कारण
बिक गए।और तुम्हारे ही अपराधों के कारण
तुम्हारी माँ को छोड़ दिया 2 इसका कारण
यह है, कि जब मैं आया, तब कोई मिला
ही नही, और जब मैने पुकारा, तब किसी ने
जवाब न दिया ।क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो
गया है, कि छुड़ा न सके? क्या मुझ में मुक्ति
करने की ताकत नहीं है? देखो, मेरी एक
धमकी से समुद्र सूख जाता है। मैं महानदों
को रेगिस्तान बना देता हूँ। वहाँ पानी की
कमी से मछलियों की जान चली जाती है
और बदबू आने लगती है। 3 मैं आकाश को
मानो शोक का काला पहरावा पहनाता और
टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूँ। 4 प्रभु
याहवे ने मुझे सीखने वालों को जीभ दी है
कि मैं थके हुओं को अपने वचन के द्वारा
सम्भालना जानूँ। वह मुझे हर दिन सुबह
जगाते और मेरा कान खोलते हैं, कि मैं शिष्य
की तरह सुनूँ। 5 प्रभु याहवे ने मेरा कान
खोला है और मैंने विरोध न किया, न पीछे
हटा। 6 मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और
गलमोछ नोचने वालों की ओर अपने गाल
किए, अपमानित होने और थूकने से मैंने मुँह
न छिपाया। 7 क्योंकि प्रभु याहवे मेरी मदद
करते हैं, इस कारण मैं शर्मिन्दा नहीं हुआ
इसीलिए मैंने अपना माथा चकमक की तरह
कड़ा किया,क्योंकि मुझे निश्चय था, कि
मुझे शर्मिन्दा होना न पड़ेगा। 8 जो मुझे निर्दोष
ठहराते हैं, वह मेरे पास हैं, मुझ से मुकद्मा
कौन लड़ेगा?हम आमने सामने खड़े हों।मेरा
विरोधी कौन है? वह मेरे पास आए। 9 सुनो,
प्रभु मेरी सहायता करते हैं, कौन मुझ पर

आरोप लगा सकेगा? देखो, वे सभी कपड़े
की तरह पुराने हो जाएँगे, उनको कीड़े खा
जाएँगे। 10 तुम में से कौन है जो याहवे से
डरता हो और उनकी बात मानता हो, जो
अन्धेरे में चलता हो और उसके पास रोशनी
न हो? वह याहवे के नाम का भरोसा रखे और
अपने परमेश्वर पर आशा रखे। 11 देखो, तुम
सभी जो आग जलाते थे जो खुद को जलती
लकड़ियों से घेर लेते हो, अपनी आग की
रोशनी में चलो और जिन लकड़ियों को तुमने
धधकाया है,उन्हीं के बीच चलो। मेरे हाथ से
तो तुम्हें यही हासिल होगा: तुम परेशानी में
पड़े रहोगे।

51 हे, नियम -आज्ञाओं पर चलने
वालो, हे याहवे के ढूँढने वालो,
कान लगकर मेरी सुनो, जिस चट्टान में से तुम
निकाले गए, और जिस खान में से तुम्हें बाहर
लाया गया, उस पर ध्यान लगाओ। 2 अपने
मूल पुरुष इब्राहीम और अपनी माता सारा के
बारे में सोचो, जब वह अकेला था, तब ही से
मैंने उसे बुलाया और आशीष दी और उसको
बढ़ाया। 3 याहवे ने सिय्योन को शान्ति दी
है, उन्होंने उसके खण्डहरों को शान्ति दी
है। वह उसके जंगल को अदन की तरह और
उसके निर्जल देश को याहवे के बगीचे के
समान बनाएँगे। उस में खुशी और धन्यवाद
और भजन गाने की आवाज़ सुनाई पड़ेगी।
4 हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर नज़र करो,
हे मेरे लोगो कान लगाकर मेरी सुनो, क्योंकि
मैं नियम -आज्ञाएँ दूँगा और मैं अपना नियम
देश के लोगों की ज्योति होने के लिए दूँगा।
5 मेरा छुटकारा पास आ चुका है. मेरा उद्धार
प्रगट हुआ है। मैं अपनी ताकत से देश-देश
का न्याय करूँगा।द्वीप मेरा इन्तज़ार करेंगे
और मेरी शक्ति पर भरोसा रखेंगे। 6 आकाश
की ओर देखो,फिर नीचे पृथ्वी की ओर,
क्योंकि आकाश धुएँ की तरह गायब हो
जाएगा और पृथ्वी कपड़ों की तरह पुरानी
हो जाएगी, लेकिन मेरी मुक्ति सदा की होगी
और मेरी ईमानदारी- सच्चाई कभी समाप्त
न होगी। 7 हे सच्चे रास्ते को जानने वालो,
मेरे लोगो, जिनके मन में मेरे नियम -आज्ञाएँ
हैं, तुम लोगों द्वारा की जाने वाली बदनामी
से न डरना, न ही उनके हँसी उड़ाए जाने
की परवाह करना। 8 जैसे कीड़ा कपड़े और
ऊन को चट कर देता है, वैसा ही उनका
हाल होगा, लेकिन मेरा न्याय, मेरी सच्चाई
और ईमानदारी हमेशा तक बने रहेंगे। मुझ से
मिलने वाली मुक्ति आने वाली पीढ़ियों तक
बनी रहेगी। 9 हे याहवे की बाँह,जागो, जागो
और ताकत पा जाओ जैसे पुराने समय में,
वैसे ही अब भी जाग जाओ। क्या आप ही
वह नहीं, जिन्होंने राहाब के टुकड़े- टुकड़े
कर दिए थे और अजगर(मिस्र) को बेधा
था? 10 क्या आप वही नहीं जिसने समुद्र
के पानी को सुखा दिया था और उसकी
गहराई को ही अपने छुड़ाए हुओं के लिए
एक रास्ता बना दिया? 11 इसलिए याहवे ने
जिन्हें मुक्त किया है, वे लोग लौटकर खुशी
के नारे मारते हुए सिय्योन में आएँगे, वे बहुत
खुश होंगे तथा शोक और विलाप समाप्त हो
जाएगा। 12 तुम्हें शान्ति देनेवाला मैं ही हूँ,
तुम कौन हो जो मरणशील इन्सान और घास
की तरह मुर्झा जाने वाले इन्सान से डरते
हो? 13 आकाश के ताननेवाले और पृथ्वी
की नींव डालनेवाले अपने कर्ता याहवे को
भूल गए हो, और जब द्रोही बर्बाद करने
को तैयार होता है, तब उसकी जलजलाहट
से दिन भर लगातार थरथराते हो? लेकिन
द्रोही की जलजलाहट कहाँ गई? 14 गुलाम
जल्दी ही आज़ाद किया जाएगा। वह गड्ढे
में नहीं मरेगा, उसे खाने की भी कमी नहीं

होगी। 15 जो समुद्र को उथल -पुथल करता
जिस से समुन्दर में गर्जना हो जाती है,वह
मैं ही हूँ,अर्थात तुम्हारा परमेश्वर जिसका
नाम है सेनाओं का याहवे। 16 मैंने तुम्हारे मुँह
में अपने संदेश को डाल दिया है और तुम्हें
अपने हाथ की आड़ में छिपा लिया है, ताकि
आकाश को स्थिर रखूँ, पृथ्वी की नेंव डालूँ
वीर सिय्योन से कहूँ,' तुम मेरी प्रजा हो। 17 हे
यरुशलेम जागो, तुम जिसने याहवे के हाथ से
गुस्से के प्याले को पिया है। यहाँ तक कि
नशा पैदा करने वाली शराब को पूरा पी लिया
है। 18 उन सब लड़कों में जो उससे पैदा हुए,
ऐसा कोई है ही नहीं जो उसे ले चले और
उन सभी बेटों में से किसी ने उस का हाथ
न संभाला। 19 तुम्हारे ऊपर ये दो मुसीबतें
आ पड़ी हैं- तुम्हारे साथ रोने वाला कौन
होगा? बर्बादी, आकाल और तलवार आ
चुकी है, तुम्हें मैं शान्ति कैसे दूँ? 20 तुम्हारे
बेटे बेहोश हो चुके हैं। वे याहवे के प्रकोप
और तुम्हारे परमेश्वर की डाँट से छक कर
हर एक सड़क के सिरे पर जाल में फँसे
हुए हिरन की तरह बिना मदद के पड़े हैं।
21 इसलिए हे दुखियारी तुम बिना शराब पिए
नशे में हो, 22 सुनो, तुम्हारे प्रभु अपनी प्रजा
का मुकदमा लड़ने वाले हैं, उनका कहना
है कि वह लड़खड़ा देने वाली शराब के
कटोरे(गुस्से के कटोरे) को तुम्हारे हाथ से ले
रहे हैं, आगे से तुम्हें उसमें से फिर कभी पीना
न पड़ेगा। 23 मैं उसे तुम्हारे दुख देनेवालों के
सुपुर्द करूँगा, जिन्होंने तुमसे लेट जाने को
कहा, ताकि वे तुम पर पांव रखकर आगे
चलें। तुमने औंधे मुँह गिरकर अपनी पीठ को
ज़मीन और आगे चलने वालों के लिए सड़क
बना दिया।

52 सिय्योन, तुम जाग जाओ और
अपना मनोबल पक्का करो। हे
पवित्र नगर यरुशलेम अपने खूबसूरत
कपड़ों को पहन लो, क्योंकि तुम्हारे यहाँ
खतनारहित और अशुद्ध लोग फिर कभी
दाखिल न हो सकेंगे। 2 तुम्हारे ऊपर जो मिट्टी
लगी हुई है, उसे झाड़ डालो। हे यरुशलेम,
उठ जाओ, हे सिय्योन की गुलाम बेटी अपने
गले के बन्धन को खोल डालो। 3 क्योंकि
याहवे के अनुसार तुम जो मुफ्त में बिक चुके
थे, अब मुफ्त ही में छुड़ाए भी जाओगे। 4 प्रभु
कहते हैं, पहले मेरी प्रजा, मिस्र में गुलाम
होकर रही थी, असीरियों ने भी उन पर क्रूरता
दिखाई थी। 5 इसलिए प्रभु का कहना है,
कि अब मैं यहाँ क्या करूँ जबकि मेरी प्रजा
सेंतमेंत ली जा चुकी है? प्रभु यह भी कहते हैं
कि जो उन पर शासन करते हैं, वे हल्ला कर
रहे हैं। मेरे नाम की बदनामी दिन भर होती
रहती है। 6 इसलिए मेरी प्रजा मेरा नाम जान
सकेगी और यह भी कि जो उनसे बातें करता
है, वह याहवे ही हैं। 7 उसके पैर सुन्दर हैं,
जो खुशखबरी लाता है, जो शान्ति की चर्चा
करता है और जो कल्याण और मुक्ति का
संदेश लाता है। जो कहता है कि तुम्हारे
परमेश्वर शासन कर रहे हैं। 8 सुनो, तुम्हारे
चौकीदार बुला रहे हैं। वे एक साथ स्तुति
और बड़ाई कर रहे हैं, क्योंकि वे अपनी
आँखों से देख रहे हैं कि याहवे सिय्योन को
आ रहे हैं। 9 हे यरुशलेम के खण्डहरों, एक
साथ खुश होकर स्तुति- भजन करो, क्योंकि
उन्होंने यरुशलेम को मुक्ति दी है। 10 याहवे
ने सभी देशों के सामने अपनी पवित्र बाँह की
ताकत दिखाई है।दुनिया के दूर-दूर के लोग
हमारे प्रभु से मिलने वाली मुक्ति का अनुभव
करेंगे। 11 दूर हो जाओ और वहाँ से निकलो,
किसी भी तरह की अशुद्ध चीज़ को न छुओ।
हे प्रभु के बर्तनों को ढोने वालो अपने आप
को शुद्ध करो। 12 तुम को अचानक ही वहाँ

से निकलना पड़ेगा, क्योंकि याहवे तुम्हारे
आगे-आगे रास्ता दिखाते हुए चलेंगे, और
इस्राएल के परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा
करते हुए चलेंगे। 13 देखो, मेरा सेवक अक्ल
से काम करेगा, वह ऊँचा, महान और बहुत
महान हो जाएगा। 14 जिस तरह से बहुत
से लोग उसे देखकर आश्चर्य करने लगे,
क्योंकि उसकी शक्ल यहाँ तक खराब हो
चुकी थी, कि इन्सान की सी नही लगती थी।
उसकी खूबसूरती इन्सानी नहीं दिखती थी।
15 वैसे ही बहुत से देशों को पवित्र करेंगे और
उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे,क्योंकि वे
ऐसा देखेंगे, जिसका वर्णन उनके सुनने में भी
नहीं आया था। ऐसी बातें जो उन्होंने अभी
तक सुनी भी न थी, वह उन्हें समझ में आ
जाएगी।

53 जो खबर हमें दी गई, उस पर किस
ने भरोसा किया? और याहवे की
ताकत किस को दिखाई दी? 2 क्योंकि वह
उनके साम्हने अँकुर की तरह, और ऐसी जड़
की तरह उगा, जो बिना पानी वाली ज़मीन में
से निकल पड़े। उसमें ऐसी खूबसूरती नहीं
थी कि हमारी नज़रें उस पर टिकतीं। उसका
चेहरा ऐसा नहीं था कि हम उन्हें चाहते।
3 उसे नीच समझा गया और लोगों ने उसे
त्याग दिया था।वह दु:खी था। बीमारियों का
उसे अच्छा ज्ञान था। लोग उस से अपना
चेहरा हटा लेते थे। उसे नीच समझा गया
और हमने उसकी कीमत न समझी। 4 इसमें
कोई सन्देह नही कि उसने हमारीबीमारियों
को सहा और हमारे दुखों को उठाया।
इसके बावजूद हमने उसे परमेश्वर द्वारा
दण्डित और बुरी हालत में पड़ा हुआ समझा।
5 लेकिन वह हमारे ही अपराधों के कारण
घायल किया गया, वह हमारे नाजायज़ कामों
के कारण कुचला गया।हमारी ही शान्ति के
लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके ऊपर कोड़े
लगाए जाने के कारण हम स्वास्थ्य(पूर्णता)
हासिल कर चुके हैं। 6 हम सभी भेड़ों के
समान भटक चुके थे। हममें से हर एक ने
अपने मन से एक रास्ता अपना लिया था।
प्रभु ने सारी दुनिया के लोगों के अनुचित और
नाजायज़ कामों का भार उस पर रख दिया।
7 सताए जाने पर वह सहता गया और शान्त
रहा। जिस तरह भेड़ काटे जाने के वक्त
या भेड़ी ऊन कतरे जाने के समय चुपचाप
रहती है, वैसे ही उसने अपना मुँह बन्द
रखा। 8 झूठे आरोप लगाकर और अत्याचार
करके वे उसे ले गए। उस समय के लोगों
में से किस ने इस बात पर ध्यान दिया
कि वह जीवित लोगों के बीच में से उठा
लिया गया। मेरे लोगों के अपराधों के कारण
ही उसे मारा गया। 9 उसको दुष्टों के बीच
ही दफ़नाया गया।मौत के समय वह अमीर
आदमी का साथी बना।हालाँकि उसने मुँह
से कुछ बुरा नहीं कहा था और कोई गलत
काम नहीं किया था, 10 फिर भी परमेश्वर
ने चाहा कि उसे कुचले और उसे बीमार भी
बना दिया। जब तुम उसे दोषबलि करके
चढ़ाओ, तब वह अपने वंश को देख सकेगा
। वह बहुत समय तक ज़िन्दा रहेगा। उसके
हाथ से याहवे की इच्छा पूरी हो सकेगी।
11 अपने मन की बेचैनी की वजह से वह उसे
देखेगाऔर सन्तुष्ट हो जाएगा। अपने ज्ञान
के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतों को निर्दोष
ठहराएगा, क्योंकि वह उनके अधर्म का भार
उठा लेगा। 12 इसलिए मैं उसे महान लोगों के
संग हिस्सा दूँगा और वह ताकतवरों के साथ
लूट को बाँट लेगा, क्योंकि उसने अपनी जान
मौत के लिए उण्डेल दी, वह अपराधियों के

साथ गिना गया; फिर भी उसने सारी दुनिया
के अपराधियों का भार खुद उठा लिया और
उनके लिए प्रार्थना की।

54 हे बांझ, जिसके सन्तान नहीं
हुई, जयजयकार करो। तुम जिसे
सन्तान उत्पत्ति की पीड़ा का अनुभव नहीं
हुआ, गला खोलकर जयजयकार करो और
पुकारो, क्योंकि त्यागी हुई के बच्चे सुहागिन
के बच्चों से अधिक होंगे, यह प्रभु का
कहना है। 2 अपने तम्बू की जगह को चौड़ा
करो और तुम्हारे डेरे के पट लम्बे किए
जाएँ। हाथ मत रोको, रस्सियों को लम्बा
और खूंटों को मजबूत करो। 3 क्योंकि तुम
दाहिने-बाएँ फैलोगी और तुम्हारा वंश देश
-देश का अधिकारी होगा और उजड़े हुए
नगरों को फिर से बसाएगा। 4 डरो मत,
क्योंकि तुम्हारी उम्मीद फिर कभी न टूटेगी।
घबराना नहीं, क्योंकि तुम फिर शर्मिन्दा
न होगी और तुम पर सियाही न छाएगी,
क्योंकि तुम अपनी जवानी की शर्म भूल
जाओगी।और अपने विधवापन की बदनामी
को फिर याद न करोगी। 5 क्योंकि तुम्हारे
बनाने वाले ही तुम्हारे पति हैं। उनका नाम
सेनाओं का याहवे है। इस्राएल के पवित्र ,
जो तुम्हें मुक्त करने वाले हैं पूरी पृथ्वी
के परमेश्वर कहलाएँगे, 6 क्योंकि याहवे ने
तुम्हें इस तरह बुलाया है जैसे कि तुम छोड़ी
हुई, मन की दुखिया और जवानी की त्यागी
हुई पत्नी हो। यह परमेश्वर की कही हुई
बात है। 7 मैंने तुम्हें एक सेकेण्ड के लिए
त्यागा था, लेकिन तरस खाकर फिर से रख
लूँगा। 8 गुस्से में आकर मैंने एक सेकेण्ड
के लिए तुम से अपना मुँह छिपाया था,
लेकिन अब अनन्त करुणा से तुम पर दया
करूँगा। यह तुम्हारे छुड़ाने वाले याहवे का
मत है। 9 मेरी निगाह के अनुसार यह नूह
के समय के जल-प्रलय की तरह है। जैसे
मैंने वायदा किया था, तुम पर फिर कभी
गुस्सा न करूँगा और न ही धमकी दूँगा।
10 चाहे पहाड़ और पहाड़ियाँ अपनी जगह
से हट जाएँ, मेरी करुणा तुम पर से कभी न
हटेगी। दया करने वाले याहवे की ओर से
यह संदेश है। 11 हे दुखियारी, तुम जो आन्धी
से पीड़ित हो और जिसे शान्ति नहीं मिली,
सुनो, मैं तुम्हारे पत्थरों की पच्चीकारी
करके बैठाऊँगा और तुम्हारी नेंव नीलमणि
से डालूँगा। 12 तुम्हारे कलश मैं माणिकों
से, तुम्हारे फाटक लालड़ियों से और सभी
सीमाओं को लुभानेवाले रत्नों से बनाऊँगा।
13 तुम्हारी सन्तान याहवे के सिखाए हुए
होंगे और वे बड़ी शान्ति का अनुभव कर
सकेंगे। 14 तुम उचित जीवन जीने से स्थिर
हो जाओगी, अन्धेर से बचोगी, क्योंकि
डर का कारण तुम्हारे पास न आ सकेगा।
15 सुनो, लोग भीड़ लगाएँगे, लेकिन मेरी
ओर से नहीं; जितने तुम्हारे विरोध में भीड़
लगाएँगे, वे तुम्हारे कारण गिरेंगे 16 सुनो,
एक लोहार कोएले की आग धौंक कर इसके
लिए हथियार बनाता है, उसे मैंने ही बनाया
है। बर्बाद करने के लिए भी मेरी ओर से
एक नाश करनेवाले को बनाया गया है।
17 जितने हथियार तुम्हें नुकसान पहुँचाने के
लिए बनाए जाएँगे, उनमें से एक भी कामयाब
न हो सकेगा।जितने लोग मुद्दई होकर तुम पर
नालिश करना चाहें, उन सभी से तुम जीत
जाओगे। याहवे के लोगों का हिस्सा यही
होगा। वे लोग मेरे कारण धर्मी ठहरेंगे, यह
याहवे कह रहे हैं।

55 हे सब प्यासे लोगो, पानी के पास
आओ, जिनके पास पैसा नहीं है,
तुम भी आकर खरीदो और खाओ.दाखमधु
और दूध बिना पैसे ही आकर ले लो। 2 जो

भोजन वस्तु नहीं है, उसके लिए तुम पैसा
क्यों खर्च करते हो,जिस से पेट भी नहीं
भरता? उसके लिए मेहनत क्यों करते हो?
मेरी ओर ध्यान लगाओ, तब तुम उत्तम
वस्तुएँ खा सकोगे। और चिकनी-चिकनी
चीज़ें खकर सन्तुष्ट हो जाओगे। 3 कान
लगाओ और मेरे पास आओ, सुनो, तब
तुम ज़िन्दा रहोगे और मैं तुम्हारे संग सदा
की वाचा बान्धूँगा अर्थात दाऊद के साथ
बनाई गई अटल वाचा। 4 सुनो, मैंने उसे
राज्य-राज्य के लोगों के लिए गवाह और
प्रधान और आज्ञा देने वाला ठहराया है।
5 सुनो, तुम ऐसे लोगों को जिन्हें तुम जानते
नही, बुलाओगे। ऐसे लोग जो तुमको नही
जानते, तुम्हारे पास दौड़े चले आएँगे। वे
तुम्हारे परमेश्वर याहवे परमेश्वर इस्राएल
के नाम के लिए यह करेंगे, क्यों कि उन्हींने
तुम्हें इतना ऊँचा उठाया है। 6 जब तक
याहवे मिल सकते हैं, तब तक उनकी चाहत
रखो। जब तक वह पास में हैं, तब तक
उन्हें पुकारो, 7 दुष्ट अपनी चालचलन और
अनर्थकारी अपने सोच-विचार को छोड़कर
याहवे की ओर मुड़े, वह उस पर दया करेंगे.
वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह
उसे पूरी तरह से माफ करेंगे। 8 याहवे कहते
हैं, “मेरे ख्याल और तुम्हारे ख्याल एक से
नहीं हैं। न ही मेरे तौर तरीके तुम्हारे तौर-
तरीकों से मिलते जुलते हैं। 9 क्योंकि मेरी
गति और तुम्हारी गति में और मेरे और
तुम्हारे सोच-विचारों में आकाश और पृथ्वी
का अन्तर है। 10 जिस तरह से बरसात और
बर्फ आकाश से गिरते हैं और वापिस लौट
नहीं जाते, लेकिन ज़मीन पर पड़कर उपज
उपजाते हैं। तभी बोनेवाले को बीज खाने
वाले को रोटी मिलती है। 11 इसी प्रकार से
मेरा वचन भी है, जो मेरे मुँह से निकलता
है, वह बेकार ठहरकर मेरे पास वापिस नहीं
आता है, परन्तु जो मेरी इच्छा है, उसे पूरी
करता है और जिस काम के लिए मैंने उसे
भेजा है, उसे वह कामयाब करेगा। 12 क्योंकि
तुम खुशी से निकलोगे और शान्ति के साथ
पहुँचाए जाओगे। तुम्हारे आगे- आगे पहाड़
और पहाड़ियाँ गला खोलकर जयजयकार
करेंगी। मैदान के सभी पेड़ आनन्दित होंगे।
13 तब भटकटैया की जगह सनौवर उगेंगे।
बिच्छू पेड़ों के स्थान पर मेंहदी उगेगी। इस
से याहवे का नाम होगा , जो सदा क निशान
होगा और कभी भी न मिटेगा।”

56 याहवे कह चुके हैं, इन्साफ़
की ज़िन्दगी जियो और
ईमानदारी-सच्चाई से हर काम करो,क्योंकि
मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारा उद्धार करूँगा।
तब यह दिख जाएगा कि मैं कितना खरा
हूँ। 2 जो इन्सान ऐसा करता है, वह बहुत
अच्छा करता है। जो निरन्तर ऐसा करता
रहता है, जो विश्रामदिन को आदर देता है
और अपने हाथों को हर तरह की बुराई
करने से रोकता है। 3 जो परदेशी याहवे से
मिल गए हैं, वे न कहें कि याहवे हमें अपनी
प्रजा से ज़रूर अलग करेंगे। खोजे भी यह
न कहें, वे सूखे पेड़ हैं। 4 क्योंकि जो खोजे
मेरे विश्रामदिन को मानते हैं और वही करते
हैं जिस से मुझे खुशी मिलती है, उसी को
अपनाते और मेरी वाचा का सम्मान करते
हैं, उनके बारे याहवे कहते हैं, 5 कि मैं अपने
भवन और अपनी शहरपनाह के अन्दर
उनको ऐसा नाम दूँगा जो बेटे- बेटियों से
कहीं ज़्यादा उत्तम होगा। मैं उनका नाम
हमेशा के लिए बनाए रखूँगा, उसे कभी भी
मिटाया न जा सकेगा। 6 वे परदेशी जो प्रभु
याहवे की सेवा करने में दिलचस्पी रखते
हैं, विश्राम दिन की इज़्ज़त करते और मेरी

वाचा को माना करते हैं, 7 उनको मैं अपने
पवित्र पहाड़ पर ले आकर अपने प्रार्थना
के भवन में खुश करूँगा। उनके होमबलि
और मेलबलि मेरी वेदी पर स्वीकार किए
जाएँगे, क्योंकि मेरा भवन सभी देशों के लिए
प्रार्थना का घर कहलाएगा। 8 प्रभु याहवे जो
निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठा करने
वाले हैं, वह कह चुके हैं,कि जो इकट्ठे
किए जा चुके हैं, उनके साथ मैं औरों को
भी लाकर मिला दूँगा। 9 हे मैदान के सब
जन्तुओं,जंगल के जानवरो, खाना खाने
आओ। 10 उसके चौकीदार अन्धे हैं, सभी
बेसमझ हैं, वे गूँगे कुत्ते हैं, जो भौंकते नहीं।
वे स्वप्न देखना चाहते हैं और लेटे- लेट
रहकर सो जाना चाहते हैं। 11 वे ऐसे भूखे
कुत्ते हैं जो कभी सन्तुष्ट होते ही नहीं। वे ऐसे
चरवाहे हैं, जिनको समझ ही नहीं। उन सभी
ने अपने अपने फायदे के लिए अपना-अपना
रास्ता ले लिया है। 12 उनका कहना है,
चलो खूब दारू पी जाए। जैसा आज का
दिन है, वैसा ही बढ़िया कल भी होगा।

57 अच्छा जीवन जीने वाला बर्बाद
हो जाता है, लेकिन इस बात की
किसी को फिक्र ही नहीं होती है। भक्त
लोग उठा लिए जाते हैं, लेकिन इसके
बारे में कोई सोचता ही नहीं।भला इन्सान
इसलिए उठा लिए जाता है ताकि आने वाली
मुसीबत से वह बच जाए। 2 वह शान्ति की
जगह पहुँचता है; जो सीधी चाल चलता
है, वह अपनी चारपाई पर आराम करता
है। 3 लेकिन, तुम जादूगरनी के बेटो, हे
व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की सन्तान,
यहाँ पास में आओ। 4 तुम किस की हँसी
उड़ाते हो? तुम किस पर मुँह खोलकर जीभ
निकालते हो? क्या तुम पाखण्डी और झूठे
के वंश नहीं हो, 5 तुम जो हरे पेड़ों के नीचे
देवताओं के कारण कामातुर होते और नालों
में और चट्टानों की दरारों के बीच बाल
-बच्चों को मारते हो? 6 नालों के चिकने
पत्थर ही तुम्हारा हिस्सा और अंश ठहरें।
उनके लिए तुमने तपावन दिया और अन्नबलि
चढ़ाया है, क्या मैं इन बातों से शान्त हो
जाऊँ? 7 एक बड़े ऊँचे पहाड़ पर तुमने अपन
बिस्तर बिछाया है, वहीं तुम कुर्बानी चढ़ाने
को चढ़ गई 8 तुमनेअपना भक्ति निशान
दरवाज़े और चौखट की आड़ ही में रखा।
मुझे छोड़कर तुम औरों को दिखाने के लिए
चढ़ी, तुमने अपनी चारपाई चौड़ी की और
उन से वाचा बान्ध ली, तुमने उनकी चारपाई
को जहाँ देखा,पसन्द किया। 9 तुम तेल लिए
हुए राजा के पास गई बहुत खुशबूदार तेल
का इस्तेमाल किया। तुमने अपने दूतों को
दूर-दूर तक भेजा और अधोलोक तक अपने
को नीचा किया। 10 अपने सफर की लम्बाई
के कारण तुम थक गई , फिर भी तुमने कहा,
कि यह बेकार है; तुम्हारी ताकत कुछ ज़्यादा
हो चुकी थी, इसलिए तुम्हें थकान महसूस
नहीं हुई। 11 किस के डर से तुमने झूठ बोला,
और किसका डर तुम्हें सता रहा था? तुमने
मुझे याद न किया ? क्या मैं बहुत समय
से चुप नहीं रहा? इसलिए तुम मुझसे नहीं
डरती। 12 मैं खुद तुम्हारी सच्चाई ईमानदारी
का बखान करूँगा, लेकिन उससे तुम्हें कुछ
फायदा न होगा। 13 जब तुम पुकारो, तब
जिन मूर्तियों को तुमने जमा किया है, वे ही
तुम्हें मुक्त करें। वे सभी हवा या एक फूँक
ही से उड़ जाएँगी, लेकिन जो मेरी शरण
में आएगा, वही देश क अधिकारी होगा
और मेरे पहाड़ का भी अधिकारी होगा।
14 और ऐसा कहा जाएगा, बनाओ, बनाओ,
मेरे लिए राज मार्ग बनाओ! मेरी प्रजा के
रास्ते की हर एक रुकावट को दूर करो।

15 क्योंकि जो बहुत महान और महिमामय
हैं, जो हमेशा तक कायम हैं और जिनका
नाम पवित्र है, वह इस तरह कहते हैं:"मैं
ऊँचे पर और पवित्र जगह में रहता हूँ। मैं
उसके साथ भी रहता हूँ जो अपने मन में दीन
है, ताकि उसकी आत्मा और सीधे-सादे मन
को फिर से जीवित कर दूँ। 16 मैं सदा तर्क
नहीं करता रहूँगा, न ही सदा गुस्सा करूँगा।
कहीं ऐसा न हो कि जिन्हें मैंने बनाया है, वे
मेरे सामने बहोश हो जाएँ। 17 उनके लालच
की बुराई के कारण गुस्से में मैंने मारा था
और अपना चेहरा छिपा लिया था, लेकिन
अपनी मनमानी करके भटकता चला गया।
18 मैंने उसकी चालचलन को देखा है, लेकिन
उसे मैं अच्छा कर दूँगा। मैं उसकी अगुवाई
करूँगा और उसको तथा उसके लिए दुख
मनाने वालों को शान्ति दूँगा। 19 उनके ओठों
से स्तुति पैदा करूँगा।" याहवे ने कहा है "
जो दूर है उसे शान्ति मिले और जो पास है उसे
भी,और मैं उसको स्वास्थ्य दूँगा।" 20 लेकिन
दुष्ट तो अशान्त समुन्दर की तरह है , क्योंकि
वह शान्त रह ही नहीं सकता और उसकी
लहरें कूड़ा-करकट और कीचड़ उछालती
हैं। 21 "दुष्टों के लिए कोई शान्ति नहीं है।"
यह मेरे परमेश्वर का कहना है।

58 गला खोलकर पुकारो, कुछ रख
न छोड़ो, नरसिंगे की तरह ऊँची
आवाज़ करो। मेरी प्रजा को उसका अपराध
अर्थात याकूब के घराने को उसका अपराध
बता दो। 2 हर दिन वे मेरे पास आते और
मेरी इच्छा जानने की चाहत रखते हैं। वे इस
तरह से पेश आते हैं, जैसे कि बहुत अच्छे
लोग हैं और प्रभु की सभी बातों को माना
करते हैं। वे मुझ से पूछते हैं कि उन्हें क्या
करना चाहिए और क्या नहीं। 3 वे कहते हैं
कि उन्होंने उपवास भी रखा,लेकिन प्रभु ने
उन पर ध्यान न दिया। हमारे दुख के समय
में भी ऐसा ही हुआ। प्रभु बोले," उपवास
के समय तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते
हो और अपने सेवकों से मेहनत का काम
करवाते हो। 4 सुनो, तुम्हारे उपवास का फल
यह होता है,कि तुम आपस में लड़ते-झगड़ते
हो और घूँसे मारते हो। जैसा उपवास तुम
आजकल रखते हो,उससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ
ऊपर नहीं जातीं । 5 जिस उपवास से मैं खुश
होता हूँ, वह यह है कि मनुष्य अपने आप
को दीन करे, क्या तुम ऐसा करते हो? क्या
सिर को झाऊ की तरह झुकाना,अपने नीचे
टाट बिछाना और राख फलाने ही को तुम
उपवास और याहवे को खुश करने का दिन
कहते हो? 6 जिस उपवास को मैं पसन्द
करता हूँ, वह क्या यह नही, कि अन्याय से
बनाए हुए गुलामों और अन्धेर सहन करने
वालों को आज़ाद करना? 7 क्या यह नहीं कि
अपना खाना भूखे लोगों के साथ बाँट कर
खाना। अनाथ और बेघर वालों को अपने
यहाँ ले आना और जिसके पास पहनने के
लिए कपड़े नहीं हैं, उन्हें कपड़े पहनाना और
अपने जान-पहचान वालों से अपने आप को
न छिपाना। 8 तब तुम्हारी रोशनी सुबह के
प्रकाश की तरह चमकेगी और तुम जल्दी ही
ठीक हो जाओगे।तुम्हारी ईमानदारी सच्चाई
तुम्हारे आगे- आगे चलेगी। याहवे का तेज
तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे पीछे चलेगा।
9 तब तुम आवाज़ लगाओगे,और याहवे
तुम्हें जवाब देंगे और कहेंगे, " मैं यहाँ हूँ।"
यदि तुम अन्धेर करना और उँगली मटकाना
और दुष्ट बातें बोलना छोड़ दो, 10 उदारता
से भूखे की मदद करो और दीन दुखियों को
सन्तुष्ट करो, तब अन्धेरे में तुम्हारी रोशनी
चमकेगीऔर तुम्हारा अन्धकार दोपहर के
समय की तरह होगा 11 याहवे तुम्हें लगातार

लेकर चलेंगे और कल के समय तुम्हें तृप्त
और तुम्हारी हड्डियों को हरी-भरी करेंगे और
तुम सींचे हुए बगीचे और ऐसे सोते की
तरह होगे, जिसका पानी कभी सूखता नहीं।
12 और तुम्हारे वंश के लोग बहुत समय के
उजड़े स्थानों को फिर बसाएँगे। तुम पीढ़ी-
पीढ़ी की पड़ी हुई नींव पर घर बनाओगे।
तुम्हारा नाम टूटे हुए बाड़े का का सुधारक
और रास्तों का बनाने वाला होगा। 13 यदि
तुम विश्राम दिन को खुशी का दिन और
याहवे का पवित्र किया हुआ दिन समझकर
मानो: यदि तुम उसको इज़्ज़त देकर अपनी
मनमानी न करो और अपनी इच्छा पूरी न
करो, और अपनी ही बात न बोलो, 14 तो तुम
याहवे के कारण सुखी होगे और मैं तुम्हें देश
के ऊँचे स्थानों पर चलने दूँगा; मैं तुम्हारे
मूलपुरुष याकूब के हिस्से की उपज में से
तुम्हें खिलाऊँगा, यह सब याहवे परमेश्वर
के मुख से निकली बात है।

59 देखो, याहवे का हाथ ऐसा छोटा
नहीं है कि मुक्ति न दे सके, न ही
वह बहरे हैं, कि उन्हें सुनाई न दे। 2 लेकिन
तुम्हारे परमेश्वर की इच्छा के विपरीत
किए गए कामों के कारण तुम परमेश्वर
से अलग हो चुके हो और तुम्हारे गुनाहों
के कारण उनका चेहरा तुमसे छिप गया
है। इसीलिए वह सुन नहीं रहे हैं। 3 क्योंकि
तुम्हारे हाथ खून से और उंगलियाँ गलत
कामों से गंदे हो गए हैं। तुम्हारे ओठों से
झूठी बातें निकली हैं और जीभ बुरी बातें
निकालती है। 4 ऐसा कोई नहीं, जो इन्साफ
से नालिश करे और सच्चाई से वकालत।
लोगों का विश्वास खोखलेपन पर है और
वे झूठ बोलते हैं। वे झगड़े फसाद का गर्भ
धारण करते हैं और बुराई को पैदा करते हैं।
5 वे करैत के अण्डे सेते हैं और मकड़ी का
जाल बुनते हैं। उनके अण्डे खाने वालों की
जान चली जाती है और कुचले जाने पर उन
अण्डों से साँप निकलता है। 6 उनके जाले
कपड़ों का काम न देंगे, न ही वे अपने हाथ
के कामों से अपने आप को ढाँप सकेंगे।
उनके काम प्रभु के बताए रास्ते से अलग
हैं, वे मारपीट में हिस्सा लेते हैं। 7 बुराई
करने के लिए वे उत्सुक रहते हैं, जो लोग
किसी भी तरह के आरोप से मुक्त हैं, उनकी
जान लेने के लिए वे तैयार रहते हैं। उनकी
योजनाएँ बेकार हैं। उजाड़ और विनाश ही
उनके रास्तों में हैं। 8 उन्हें मेल मिलाप के
रास्ते का ज्ञान है ही नहीं, न ही उनके बर्ताव
में इन्साफ है। उनके रास्ते टेढ़े हैं, जो उन्हें
अपनाएगा, उसे शान्ति न मिलेगी। 9 इसी
कारण इन्साफ हमसे बहुत दूर है। ईमानदारी
और सच्चाई हमारे पास ही नहीं आते। हम
प्रकाश का इन्तज़ार तो करते हैं, लेकिन
अन्धेरे में ही जीते हैं। 10 अन्धों की तरह हम
दीवार टटोलते फिरते हैं, हाँ हम इधर-उधर
भटकते हैं। दिन दोपहर में हम रात की तरह
ठोकर खा जाते हैं। तन्दरुस्त लोगों के बीच
हम लाशों के समान हैं। 11 भालुओं की तरह
हम सभी चिल्लाते हैं और पण्डुकों के समान
च्यूँ- च्यूँ करते हैं। हम न्याय और उद्धार की
चाहत तो रखते हैं, लेकिन वह हम से दूर
हैं। 12 आपकी आँखों के सामने मेरे अपराध
ढेर सारे हैं, वे हमारे खिलाफ़ गवाही दे रहे
हैं। हमें अपने गलत कामों की पूरी जानकारी
है, वे तो हमारे संग ही हैं। 13 हमने प्रभु के
खिलाफ़ ही बलवा किया है। हमने उनसे
अपना चेहरा मोड़ लिया है। हमने उनकी
इच्छा के मुताबिक जीने से इन्कार किया
है। हम अन्धेर करने लगे, उलट फेर की
बातें की और झूठी बातों को बनाया और
मुँह से कहीं। 14 न्याय को पीछे कर दिया

गया है, ईमानदारी सच्चाई दूर खड़ी रह
गई और बाज़ार में गिर पड़ी और सिधाई
दाखिल ही नहीं हो पाती। 15 हाँ, सच्चाई खो
चुकी है वह जो बुराई से दूर जाना चाहता है,
वह उसका शिकार बन जाता है। 16 उन्होंने
देखा कि कोई ईमानदार मनुष्य नहीं और न
ही कोई प्रार्थना करने वाला है, तब उन्होंने
अपनी ताकत से उनको मुक्ति दी और अपने
धर्मी होने के कारण वह सभंल गया। 17 उसने
धार्मिकता(सही जीवन) को झिलम की तरह
पहन लिया और उसके सिर पर मुक्ति की
टोपी रखी गई। उसने बदला लेने के कपड़े
पहन लिये और जलजलाहट को बागे के
समान पहना है। 18 वह उनको उनके कामों
के मुताबिक फल देंगे, वह अपने दुश्मनों पर
अपना गुस्सा भड़काएँगेऔर उनको उनकी
मजदूरी देंगे; वह द्वीपवासियों को भी उनकी
कमाई भर देंगे। 19 तब पश्चिम कीओर लोग
याहवे के नाम का और पूर्व की ओर उनकी
महिमा का भय मानेंगे, क्योंकि जब दुश्मन
महानद की तरह चढ़ाई करेंगे,तब याहवे का
आत्मा उसके विरुद्ध झन्डा खड़ा करेगा।
20 याकूब में जो अपना अपराध छोड़ देते
हैं, उनके लिए सिय्योन में एक छुड़ानेवाला
आएगा, यह प्रभु का कथन है। 21 प्रभु का यह
भी कहना है, जो वाचा मैंने उन से बान्धी
है,वह यह है, कि मेरा आत्मा तुम पर ठहरा
है और जो वचन मैंने तुम्हारे मुँह में डाले हैं,
अब से लेकर सदा तक वे तुम्हारे मुँह से और
तुम्हारे बेटों और पोतों के मुँह से भी कभी न
हटेंगे।

60 उठो और रोशनीमय हो जाओ,
क्योंकि तुम्हारी रोशनी आ चुकी है
और याहवे का तेज तुम पर आ गया है।
2 देखो, पृथ्वी पर अन्धेरा और देश-देश के
लोगों पर घोर अन्धेरा छा जाएगा, लेकिन
तुम पर याहवे उदय होंगे और उनका तेज
तुम पर दिखाई देगा। 3 देश- देश के लोग
तुम्हारी रोशनी की ओर तथा राजा तुम्हारे
आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे। 4 चारों
ओर अपनी नज़र उठाओ और देखो, वे सभी
इकट्ठे होकर तुम्हारे पास आ रहे हैं तुम्हारे
बेटे दूर देश से आएँगे और तुम्हारे बेटे-
बेटियाँ हाथों हाथ पहुँचाई जाएँगी। 5 तब तुम
यह देखकर प्रकाशमान हो जाओगी, तुम्हारा
मन थरथराएगा और खुशी से भर जाएगा,
क्योंकि समुद्र की सारी दौलत और दूसरे देशों
का धन दौलत तुम को मिलेगा। 6 तुम्हारे
देश में ऊँटों के झुन्ड और मिद्यान और
एपादेशों की साड़नियाँ इकट्ठी होंगी।शिबा
के सभी लोग आकर सोना और लोबान
चढ़ाएँगे और याहवे की बड़ाई खुशी से करेंगे
7 केदार की सब भेड़ बकरियाँ तुम्हारे पास
ही इकट्ठी होंगी।नबायोत के मेढ़े तुम्हारे काम
आएँगे।वे मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएँगे
और मैं अपने महिमामय भवन को और भी
प्रतापी बनाऊँगा। 8 ये कौन हैं जो बादल
की तरह हाँ, अपने दरबे की ओर कबूतर
की तरह उड़े चले आते हैं? 9 निश्चय ही
द्वीप मेरा इन्तज़ार करेंगे।पहले तो तर्शीश के
जहाज तेरे बेटों को, उनकी चाँदी और सोने
सहित तेरे परमेश्वर याहवे के नाम के कारण
अर्थात इस्राएल के पवित्र के नाम के लिए,
दूर देश से पहुँचाने आएँगे, क्योंकि उसने तुझे
महिमान्वित किया है। 10 परदेशी तुम्हारी
शहरपनाह बनाएँगे और उनके राजा तुम्हारी
सेवा करेंगे, क्योंकि मैंने तुम्हें गुस्से में
आकर मारा था, लेकिन अब खुश होकर दया
की है। 11 तुम्हारे फाटक हमेशा खुले रहेंगे।
उन्हें रात दिन बन्द नहीं किया जाएगा, जिस
से देश-देश की दौलत और पंक्ति बान्ध कर
उनके राजा तुम्हरे पास लाए जाएँ। 12 क्योंकि

जिस देश और राज्य के लोग तुम्हारी सेवा
न करें, वे बर्बाद हो जाएँगे, हाँ ऐसे लोगों
को नाश किया जाएगा 13 लेबनोन का विभव
अर्थात सनौवर, देवदार और चीड़, सभी
तुम्हारे पास आएँगे, कि मेरे पवित्र स्थान
को सुशोभित करें और मैं अपने चरणों के
स्थान को महिमा दूँगा 14 तुम्हें दुख देने वालों
के वंशज तुम्हारे ही सामने सिर झुकाकर
आएँगे और जिन्होंने तुम्हारी कीमत न जानी,
वे सभी तुम्हारे पैरों पर गिर कर सिज़दा
करेंगे, और वे तुम्हारा नाम याहवे का नगर,
इस्राएल के पवित्र का सिय्योन रखेंगे। 15 तुम
जो त्यागी गई और ऐसी घिनौनी ठहरी,
कि तुम में से होकर कोई नही जाता था,
अब मैं तुम्हें सदा के गर्व का और पीढ़ी
पीढ़ी की खुशी का कारण ठहराऊँगा। 16 तुम
देश- देश का दूध पी लोगी और राजाओं
से पोषण पाओगी और जान लोगी कि मैं
याहवे तुम्हारा मुक्तिदाता और छुड़ानेवाला,
याकूब का शक्तिशाली प्रभु हूँ। 17 मैं काँसे
की जगह सोना लाऊँगा, लोहे के बदले चाँदी,
लकड़ी के बदले काँसा और पत्थर के बदले
लोहा ले आऊँगा। मैं शान्ति को तुम्हारा
राजा और धार्मिकता को तुम्हारा प्रशासक
बनाऊँगा। 18 तुम्हारे देश में फिर कभी बलवा
और तुम्हारी सरहद में झगड़े- फसाद और
बर्बादी के बारे में सुनने को भी न मिलेगा।
19 फिर न तो दिन को सूरज और न चाँदनी
के लिए चान्द तुम्हारी रोशनी होगी, लेकिन
याहवे तुम्हारे लिए सदा की रोशनी होंगे।
20 तुम्हारा सूर्य फिर कभी डूबेगा नहीं, न
ही तुम्हारा चाँद मलिन होगा, क्योंकि याहवे
तुम्हारी अनन्त समय के लिए ज्योति होंगे।
तुम्हारे दुख मनाने का समय जाता रहेगा।
21 तुम्हारे सभी लोग धर्मी होंगे; वे मेरे लगाए
हुए पौधे और मेरे हाथ का काम होंगे, जिससे
कि महिमा दिखाई दे। 22 छोटे से छोटा एक
गोत्र और सबसे तुच्छ एक महान देश बन
जाएगा। मैं याहवे यह सब सही समय पर
करूँगा।

61 प्रभु परमेश्वर का आत्मा मुझ पर
है, क्योंकि जो अपने आत्मिक
खालीपन और दिवालिएपन को महसूस
करते हैं, उन्हें खुशी की खबर देने के लिए
मुझे भेजा गया है ताकि मैं मन बदलाव के
लिए तैयार (खेदित) लोगों को शान्ति दूँ,
2 कि प्रभु की दया करने का समय और
परमेश्वर के बदला लेने के दिन के बारे में
बताऊँ और दुख मनाने वालों को शान्ति दे
सकूँ। 3 और सिय्योन में शोक करने वालों
को राख के बदले पगड़ी, शोक की जगह
खुशी का तेल और निराशा के बदले प्रशंसा
का ओढ़ना दे सकूँ जिससे कि वे खरे
जीवन के बांजवृक्ष और प्रभु के लगाए हुए
कहलाएँ और उनकी महिमा दिखे। 4 तब
वे पुराने समय के खण्डहरों को फिर से
सुधारेंगे और उजड़ी जगहों में घर बनाएँगे।
वे बर्बाद किए गए नगरों की मरम्मत करेंगे,
जो आने वाले समयों से खण्डहर से पड़े थे।
5 परदेशी तुम्हारी भेड़ बकरियों के साथ खड़े
रहकर उन्हें चराएँगे। परदेश के लोग तुम्हारे
अंगूर के बगीचों और खेतों की देखरेख
करेंगे। 6 तुम प्रभु के पुरोहित कहलाओगे
और परमेश्वर की सेवा करने वाले भी। तुम
दूसरे देशों की दौलत खाओगे और उनके
धन पर घमण्ड करोगे। 7 मेरे लोगों को शर्म
के बदले दुगना हिस्सा मिलेगा। बदनामी के
बदले अपने हिस्से के कारण वे जय के
नारे मारेंगे। इसलिए अपने देश में वे दोगुना
हिस्सा हासिल करेंगे और हमेशा की खुशी
पाएँगे। 8 क्योंकि मैं प्रभु इन्साफ से खुश
होता हूँ। होमबलि की कमी से मुझे नफ़रत

है। ईमानदारी से मैं उन्हें बदला दूँगा। उनके साथ मैं हमेशा का सम्बन्ध (वाचा) कायम करूँगा। 9 तब उनका वंश देशों में और वशंज तमाम जगह के लोगों में मशहूर हो जाएगा। उनको देखने वाले पहचान लेंगे कि ये वही लोग हैं, जिन्हें प्रभु ने आशीष दी है। 10 मैं प्रभु के कारण बहुत खुश होऊँगा। परमेश्वर में मेरा मन खुश इसलिए है क्योंकि उन्होंने मुझे मुक्ति के कपड़े पहनाए हैं। धार्मिकता (ईमानदारी और सच्चाई) के पहनावे से मुझे ऐसा सँवारा है जैसे दूल्हा और दुल्हिन गहनों से अपना सिंगार करती है। 11 क्योंकि जैसे ज़मीन से पैदावार होती है और बगीचे में बोई चीजों में अंकुर निकलता है, वैसा ही प्रभु सभी देशों के सामने धार्मिकता और स्तुति उपजाएँगे।

62 मैं सिय्योन के लिए खामोश न रहूँगा, जब तक कि वहाँ के लोगों की धार्मिकता (न्याय,ईमानदारी और सच्चाई) रोशनी की तरह और उनका उद्धार जलती मशाल की तरह न दिख जाए। 2 तब राष्ट्र-राष्ट्र के लोग तुम्हारी सच्चाई (धार्मिकता) और सब राजा तुम्हारी महिमा (शान) को देख सकेंगे और तुम्हारा एक नया नाम रखा जाएगा, जो प्रभु के मुँह से निकलेगा। 3 तुम प्रभु के हाथ में एक खूबसूरत ताज, हाँ, अपने परमेश्वर के हाथ में शाही पगड़ी ठहरोगी। 4 आने वाले समय में तुम त्यागी हुई न कहलाओगी। न ही तुम्हारी ज़मीन उजड़ी हुई कहलाएगी, लेकिन तुम हेप्सीबा और तुम्हारी ज़मीन ब्यूला कहलाएगी। इसलिए कि प्रभु तुम से खुश हैं।उनके लिए तुम्हारी ज़मीन सुहागिन होगी। 5 क्योंकि जिस तरह एक जवान किसी कुँवारी से विवाह करता है, उसी तरह तुम्हारे बेटे तुमसे विवाह कर लेंगे। जिस तरह दूल्हा अपनी दुल्हिन के कारण खुश होता है, वैसे ही तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे कारण खुश होंगे। 6 हे यरूशलेम, मैंने तुम्हारी शहरपनाह पर पहरेदार लगा रखे हैं; वे लोग रात-दिन खामोश न रहें। हे प्रभु को याद दिलाने वालो, तुम शान्त मत रहना। 7 जब तक वह यरूशलेम को मजबूत न करके पृथ्वी पर उसकी बड़ाई न फैलाए तब तक उसे शान्त मत रहने देना। 8 प्रभु ने अपने दाहिने हाथ और अपनी ताकत की शपथ खाई है: सचमुच अब मैं फिर तुम्हारा अनाज तुम्हारे दुश्मनों को खाने के लिए न दूँगा। न ही परदेशी तुम्हारा नया दाखमधु पी सकेंगे, जिसके लिए तुमने मेहनत की है। 9 लेकिन जो अनाज को इकट्ठा करेंगे वे ही उसे खा सकेंगे और प्रभु की बड़ाई करेंगे। अंगूर के रस को इकट्ठा करने वाले ही मेरे पवित्रस्थान के आँगनों में पी सकेंगे। 10 जाओ, फाटकों में से निकल जाओ, प्रजा के लिए रास्ता ठीक करो। राजमार्ग को सुधारकर उसकी ऊँचाई बढ़ाओ। वहाँ के पत्थरों को निकाल फेंको। देश-देश के लोगों के लिए झन्डा फहराओ 11 देखो, प्रभु ने पृथ्वी की छोर तक यह आदेश भेजा है: यरुशलेम के लोगों को यह समाचार दो, कि उसके अपराधों से माफी देने वाला आ रहा है। वाजिब मजदूरी उनके पास है और तुम लोगों का काम उनके सामने है। 12 लोग तुम्हें पवित्र प्रजा और प्रभु के छुड़ाए हुए कहेंगे।और तुम्हारा नाम स्वीकार की हुई अर्थात न त्यागी हुई नगरी हो जाएगा।

63 यह कौन है जो एदोम से, हाँ बोस्त्रा से बैजनी रंग के कपड़े पहने चला आ रहा है? इसके कपड़े राजसी हैं और अपनी बड़ी शान से यह चला आ रहा है? यह मैं ही हूँ जो ईमानदारी और सच्चाई से बोलता हूँ और किसी को भी मुक्त करने योग्य हूँ। 2 तुम्हारा पहनावा लाल रंग का क्यों है। ?

तुम्हारे कपड़े उसकी तरह क्यों है; जो हौद में
अंगूर कुचलता है? 3 मैंने अकेले ही हौद में
अंगूर कुचले हैं और देश देश के लोगों में से
मेरे साथ खड़ा होने वाला कोई न था। गुस्से में
आकर मैंने उन्हें कुचला था। उनके लहू के
छीटें मेरे कपड़ों पर पड़े हैं और धब्बे भी।
4 क्योंकि मैं बदला लेने वाले दिन के बारे में
सोच रहा था। मेरे लिए वह वक्त आ चुका
है, जब मैं आज़ादी दूँगा। 5 मैंने अपनी निगाह
दौड़ाई, लेकिन कोई मददगार न मिला।तब
मैंने अपनी ताकत से उन्हें आज़ाद किया और
मेरे गुस्से ही ने मुझे सम्भाला। 6 हाँ मैंने अपने
गुस्से में देश-देश के लोगों को लताड़ डाला
और अपने प्रकोप में उन्हें मतवाला किया।
मैंने उनका खून पृथ्वी पर बहा दिया। 7 प्रभु
ने हम (इस्राएलियों) पर तमाम भलाईयाँ की
हैं। इस बड़ी कृपा के कारण उन्होंने जो हमारे
लिए अच्छे काम किए उनके लिए मैं उनकी
बड़ाई करूँगा। 8 उन्होंने कहा,"ये मेरे लोग
हैं, ये लोग धोखा न देंगे। इसलिए वह उनको
मुक्त करने वाले बन गए। 9 उनके सभी दुखों
में वे भी दुख उठाते रहे। उनके दूत ने उनका
उद्धार किया। अपने प्रेम और दया के कारण
प्रभु ने उन्हें आज़ाद किया। पुराने समय से वह
उनके साथ रहे। 10 लेकिन लोगों ने बगावत
करके, उनके पवित्र आत्मा को दुख दिया।
इसलिए प्रभु उन लोगों के दुश्मन बन गए
और उनके खिलाफ़ लड़े। 11 तब उन्हें पुराना
समय याद आया, जब मूसा ज़िन्दा था। वह
कहाँ है जो अपने भेड़ों के चरवाहों के द्वारा
समुन्दर में से निकाल लाए, उन्होंने अपने
पवित्र आत्मा को उनमें डाला था। 12 जिन्होंने
अपनी शक्तिशाली भुजा को मूसा के सुपुर्द
कर दिया, पानी उन्होंने दो हिस्सों में बाँटा,
यह बात हमेशा के लिए यादगार बन गई।
13 जिन्होंने समुद्र की गहराई में से उनकी
अगुवाई की, वह अब कहाँ हैं ? जिस तरह
जंगल में घोड़े को ठोकर नहीं लगती है,
उन्हें भी नहीं लगी। 14 जिस तरह से तराई
में उतरने वाले जानवर को सुकून मिलता है,
वैसे ही प्रभु के आत्मा ने उन्हें भी आराम
दिया। आपने अपने लोगो का मार्गदर्शन इस
तरह किया, कि आपका नाम महान हो गया।
15 स्वर्ग से और अपने शानदार निवासस्थान
से जो पवित्र हैं, निगाह डालें। आपके जोश
और शक्ति के काम कहाँ रहे? मेरे लिए
आपके भीतर की करूणा को रोका गया है।
16 आप हमारे पिता हैं। युगों-युगों से आप
आज़ाद करने वाले प्रभु रहे हैं। 17 हे प्रभु,
अपने रास्ते से आप मुझे क्यों भटका देते
हैं? आप हमारे मन को ऐसा सख्त क्यों कर
देते हैं कि हम आपसे डरना छोड़ देते हैं?
अपने दासों और अपने गोत्रों की वजह से
लौट आईए। 18 आपकी प्रजा थोड़े समय के
लिए आपके पवित्रस्थान की अधिकारी रही
है, लेकिन हमारा विरोध करने वालों ने उसे
कुचला है। 19 हम उन लोगों की तरह हो गए
हैं, जिन पर आपने कभी भी राज्य नहीं किया
था। उनकी तरह भी जो आपके नाम के नहीं
कहलाए गए।

64 अच्छा होता यदि आप आकाश
को फाड़कर उतर आते और पहाड़
आपके सामने काँप जाएँ। 2 जैसे -जैसे आग,
झाड़-झंखाड़ को जला देती है और पानी को
उबाल देती है, काश आप अपने दुश्मनों पर
अपना नाम ऐसा प्रगट करें कि देश-देश के
लोग आपके प्रताप से काँप उठें 3 जब हम
आशा भी नहीं कर रहे थे, आपने अजीब
काम किए, आप पहाड़ पर उतरे और पहाड़
काँप गए। 4 पुराने समयों से न किसी ने
सुना था और न ही देखा था,ऐसे परमेश्वर
को जो अपना इन्तज़ार करने वालों के लिए

काम करता हो। 5 आप उससे मिलते हैं जो
सही रास्ते पर चलने से खुश होता है। और
आपको याद रखता है। 6 हम सभी अशुद्ध
मनुष्य की तरह हैं। हमारे अच्छे काम मैले
चिथड़ों की तरह हैं। हम सभी पत्तों की तरह
मुरझा जाते हैं। हमारे अनुचित काम हमें हवा
की तरह उड़ा ले जाते हैं। 7 आपका नाम
लेकर कोई भी प्रार्थना नहीं करता है। न ही
कोई आप से गहरी संगति रखना चाहता है।
आपने हमसे अपना चेहरा छिपा लिया है
और हमें हमारे गलत कामों में छोड़ दिया है।
8 लेकिन हे प्रभु आप हमारे पिता हैं। हम मिट्टी
हैं। आप हमारे कुम्हार हैं। हम सभी आपके
हाथों की कारीगरी हैं। 9 प्रभु, बहुत गुस्सा
मत कीजिए। न ही हमेशा तक, हमारे अधर्म
के कामों को याद रखिए । 10 हमारे पवित्र
नगर खण्डहर बन चुके हैं। 11 हमारे पवित्र
और खूबसूरत प्रार्थना भवन को जिसमें हमारे
पुरखे आराधना करते थे, आग से जलाया जा
चुका है। हमारी कीमती चीजें बर्बाद हो चुकी
हैं। 12 हे प्रभु, क्या इन सब बातों के बावजूद
आप रूके रहेंगे। क्या आप खामोश रहकर
हमें दुख में देखते रहेंगे?

65 जो लोग कभी मुझे पूछते नहीं
थे, उनको मैंने अपना खोजी बनने
दिया। उनसे मैं मिला। जिन लोगों ने मेरे नाम
से मुझे पुकारा नहीं, उनसे मैंने कहा,"मैं यहाँ
हूँ"। 2 मैं एक बलवा करने वाले लोगों के
सामने हाथ फैलाए रहा। ऐसे लोग जो अपनी
मनमानी करके ऐसे रास्ते पर चलते हैं, जो
गलत है। 3 ऐसा वंश जो मेरे देखते बगीचे में
बलि चढ़ाकर और धूप जलाकर मुझे गुस्सा
दिलाता है। 4 जो कब्रों और छिपी जगहों पर
रात में बैठते हैं। वे सुअर खाते हैं। और अशुद्ध
मांस का शोरवा अपने बर्तनों में रखते हैं।
5 ये कहते हैं, "दूर हटो, मेरे पास मत आओ,
क्योंकि मैं तुमसे ज़्यादा पवित्र हूँ। ये मेरी नाक
में धुएँ और ऐसी आग की तरह हैं, जो हर
समय जलती रहती है। 6 देखो यह मेरे सामने
लिखा गया, अब मैं खामोश न रहूँगा, लेकिन
बदला लूँगा - तुम्हारे और तुम्हारे पूर्वजों के
अधर्म के कामों का बदला मैं लूँगा। 7 क्योंकि
उन्होंने पहाड़ों पर अगरबत्ती जलाई और
पहाड़ियों पर मेरी बेईज़्ज़ती की। इसलिए मैं
उनके पुराने कामों को तौलूँगा और उनकी
गोद में डालूँगा। 8 प्रभु कहते हैं,"जब अंगूर
के गुच्छे में रस मिलता है, तो लोग उसे
बर्बाद नहीं करना चाहते, क्योंकि वह फायदे
का है। इसी तरह मेरा व्यवहार मेरे दासों
के साथ भी होगा और उन सभी को नाश न
करूँगा। 9 याकूब में से एक वंश और यहूदा
में से अपने पहाड़ों के लिए एक वारिस पैदा
करूँगा मेरे चुने हुए उसके उत्तराधिकारी होंगे
और मेरे दास वही रहेंगे। 10 मेरी प्रजा जो
मुझे चाहती है, उसकी भेड़-बकरियों के लिए
शारोन चरागाह होगा और गाय-बैलों के लिए
आकोर की तराई आराम की जगह होगी।
11 लेकिन तुम जो प्रभु को छोड़ देते हो और
मेरे पवित्र पहाड़ को भूल जाते हो, जो भाग्य
देवता के लिए मेज लगाते हो तुम भावी देवी
के लिए मसाला मिली शराब अर्पण करते
हो। 12 तुम तलवार से मारे जाओगे क्योंकि
मैंने जब तुम्हें बुलाया था, तुमने जवाब न
दिया था। मेरी आँखों को जो न भाता था,
वही तुमने किया। जिस से मुझे खुशी नहीं
मिलती थी, उसी का चुनाव तुमने किया।
13 इसलिए प्रभु परमेश्वर कहते हैं, देखो मेरे
दासों की भूख मिटेगी, लेकिन तुम्हारी नहीं।
देखो, मेरे दासों की प्यास बुझेगी, लेकिन
तुम्हारी नहीं। मेरे दास खुशी मनाएँगे। लेकिन
तुम्हें शर्मिन्दा होना पड़ेगा। 14 मेरे दास खुशी
से जयजयकार करेंगे, लेकिन तुम दुखी मन

से चिल्लाओगे और हाय- हाय करोगे। 15 तुम
अपना नाम मेरे चुने हुओं के लिए शाप की
तरह छोड़ जाओगे। प्रभु तुम्हें नाश करेंगे।
लेकिन वह अपने दासों का दूसरा नाम रखेंगे।
16 जो कोई इस दुनिया में आशीष चाहेगा
और जो प्रण करेगा, वह सच्चे परमेश्वर के
नाम ही से ऐसा करेगा। पुराने समय के
क्लेशों को भुलाया जा चुका है। वे अब
मेरी आँखों के सामने नहीं हैं। 17 क्योंकि
देखो मैं एक नया आकाश और नई पृथ्वी
बनाऊँगा। पुरानी बातों को याद नहीं किया
जाएगा। 18 जो मैं बनाऊँगा उसमें हमेशा की
खुशी होगी। मैं यरूशलेम को आनन्द का
और वहाँ रहने वाले लोगों को खुश होने
का कारण बनाऊँगा। 19 मैं यरूशलेम के
कारण आनन्दित और अपनी प्रजा के लिए
खुश होऊँगा। भविष्य में वहाँ रोने-धोने की
आवाज न आएगी। 20 ऐसा कोई शिशु वहाँ
न होगा, जिसकी उम्र कुछ दिन की हो। जो
अपने उम्र पूरी न कर सके। जो सौ साल का
होकर मरेगा, उसे लोग जवान समझेंगे। जो
सौ साल की आयु पूरी न करेगा उसे लोग
सज़ा पाया व्यक्ति समझेंगे। 21 घर बनाकर वे
उसमें रहेंगे। अँगूर का बगीचा लगाकर, अंगूर
खाएँगे। 22 ऐसा न होगा, कि वे लगाएँ और
दूसरा आकर उसे खाए। मेरी प्रजा के लोगों
की उम्र पेड़ों की तरह बड़ी होगी। मेरे चुने हुए
लोग मेरे हाथों के कामों का पूरा-पूरा फायदा
उठाएँगे। 23 उनकी मेहनत बेकार न जाएगी।
मुसीबत उठाने के लिए उनके बच्चे पैदा न
होंगे, क्योंकि वे प्रभु के धन्य लोग ठहरेंगे।
24 उनके पुकारने से पहले ही मैं उनकी सुन
लूँगा। 25 भेड़िया और मेम्ना उस वक्त साथ
चरेंगे। उस समय शेर बैल की तरह भूसा
खाएगा। साँप का खाना, मिट्टी में ही रहेगा।
मेरे पूरे पवित्र पहाड़ पर कोई किसी को दुख
न देगा न ही कुछ नुकसान पहुँचाएगा, यह
प्रभु परमेश्वर का कहना है।

66 याहवे का कहना है, “स्वर्ग मेरा
राजासन है और पृथ्वी पैरों की
चौकी। इसलिए मेरे लिए कैसा घर बनाओगे
या मेरे आराम की जगह कौन सी होगी? 2 प्रभु
कहते हैं, “इन सभी वस्तुओं की रचना मैंने
की है और मेरे कारण बनी हुई है, लेकिन
मेरी आँखें ऐसे इन्सान पर टिकेंगी। जिस
का मन नम्र है और मेरी बातों को गम्भीरता
से लेता है। 3 बैल की कुर्बानी करने वाला
इन्सान का हत्यारा है। मेम्ने की कुर्बानी
करना, कुत्ते की गर्दन तोड़ने की तरह है।
अन्नबलि चढ़ाना, सुअर का खून चढ़ाने की
तरह है। जो खुशबूदार चीज़ चढ़ाता है वह
मानो मूरत की बड़ाई करता है। जिस तरह
हर व्यक्ति ने अपने मन से अपना रास्ता चुन
लिया है और घिनौनी वस्तुओं में खुश होता
है। 4 उसी तरह उसके लिए मैं सज़ा ठहराऊँगा
और जिन बातों से उन्हें डर लगता है। मैं उन्हीं
को उन पर ले जाऊँगा। क्योंकि मैंने आवाज़
दी, लेकिन किसी ने जवाब न दिया। उन्होंने
अनसुनी की। मेरे सामने जो कुछ गलत था,
उन्होंने वही किया। मैं जिस से खुश नहीं था,
उसी को उन लोगों ने अपनाया। 5 तुम जो
प्रभु की बातों से काँपते हो, उनकी सुनो,
तुम्हारे भाई जो तुमसे नफ़रत करते हैं। जो मेरी
खातिर तुम्हें निकाल देते हैं, उन्होंने कहा, प्रभु
की बड़ाई करो ताकि हम तुम्हारी खुशी देख
सकें। लेकिन उन्हें ही शर्मिन्दा होना पड़ेगा।
6 नगर से शोर-शराबा और मन्दिर से एक
आवाज़ सुनाई देती है। प्रभु अपने दुश्मनों
को सज़ा दे रहे हैं। यह उनकी आवाज़ है।
7 प्रसव के दर्द से पहले ही उसने जन्म दिया।
दर्द से पहले ही उसने एक बालक को उत्पन्न
किया। 8 उसने एक बालक को उत्पन्न किया।

क्या कभी ऐसी बात किसी ने सुनी थी या
देखी थी? एक ही दिन में क्या किसी देश का
जन्म हो सकता है। क्या एक देश एक पल
में पैदा हो सकता है? सिय्योन को जैसे ही
प्रसव पीड़ा हुई उसने अपने बेटों को जन्म
दिया। 9 प्रभु कहते हैं,“क्या मैं पैदाईश होने
के समय तक पहुँचाकर जन्म न होने दूँ?
तुम्हारे परमेश्वर कहते हैं, मैं जो गर्भ देता हूँ,
क्या मैं कोख बन्द करूँ? 10 यरुशलेम से
प्रेम रखने वालो, उसके साथ खुशी मनाओ
और उसके कारण मगन हो, उसके साथ
दुख मनाने वाले सभी लोगो खुश हो जाओ,
11 ताकि तुम उसके शान्ति देने वाले स्तनों
से दूध पीकर आनन्दित हो सको और
उसकी उदार छाती से दूध पीकर खुश हो
सको, 12 क्योंकि याहवे का कहना है"देखो,
मैं उसकी ओर शान्ति की नदी की तरह, और
देश, देश की दौलत को नदी की उमड़ती
धारा के समान बहाऊँगा। तुम्हारा पालन
पोषण होगा, तुम गोद लिए जाओगे और
घुटनों पर खेलोगे। 13 जिस तरह से माँ शान्ति
देती है, वैसे ही मुझ से तुम्हें शान्ति मिलेगी
और ऐसा यरुशलेम में ही होगा। 14 तब तुम
यह देखोगे और मन खुशी से भर जाएगा।
तुम्हारी हड्डियाँ नई घास की तरह हरी-भरी
होंगी और याहवे का हाथ उसके दासों पर
प्रकट हो जाएगा, लेकिन उसके दुश्मनों पर
उसका गुस्सा। 15 देखो, याहवे आग के साथ
आएँगे,उनके रथ बवण्डर की तरह, जिससे
वह अपना कोप जलजलाहट के साथ और
अपनी फटकार को आग की लपटों के समान
दिखाएँगे, 16 याहवे सब प्राणियों का इन्साफ
आग से और अपनी तलवार से करेंगे और
उनके द्वारा मारे जाने वाले लोगों की गिनती
बड़ी होगी 17 जो लोगअपने आप को इसलिए
पवित्र और शुद्ध करते हैं,कि बगीचों में किसी
के पीछे खड़े होकर सुअर और चूहे का मांस
तथा घिनौनी वस्तुओं को खाएँ, वे सभी
बर्बाद हो जाएँगे 18 क्योंकि मैं उनके कामों
को जानता हूँ। समय आने वाला है, कि मैं
सभी देशों और अलग-अलग भाषाएँ बोलने
वालों को इकट्ठा करूँगा ताकि वे मेरी महिमा
को देख सकें। 19 मैं उनमें निशान ठहराऊँगा
और उनके ज़िन्दा बचे हुए लोगों के पास
भेजूँगा। जिन्होंने मेरे नाम के बारे में न सुना
और न मेरी महिमा देखी है; अर्थात तर्शीश,
पुत, लूद, मेशेक, रोश, तूबल, यावान तथा
दूर-दूर के द्वीपवासियों के पास भेजूँगा। वे
मेरी बड़ाई करेंगे। 20 तब जैसे इस्राएली साफ
बर्तन में अन्नबलि को प्रभु के भवन में ले
आते हैं।, वैसे ही वे सभी देशों में से तुम्हारे
सभी भाईयों को प्रभु के लिए अन्नबलि के
रूप में घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों तथा
ऊँटों पर चढ़ाकर यरूशलेम में मेरे पहाड़
पर ले जाएँगे। 21 प्रभु बोले, “उनमें से मैं भी
कुछ को पुरोहित और लेवियों के पद के
लिए अलग करूँगा। 22 जिस तरह से मैं नया
आकाश और नई पृथ्वी बनाऊँगा जो हमेशा
बने रहेंगे, उसी तरह तुम्हारा वंश और नाम
बना रहेगा। 23 नए चाँद के त्यौहार और हर
एक सब्त के दिन सभी जीव मेरे सामने सिर
झुकाएँगे। 24 तब वे बाहर जाकर लाशों को
देखेंगे, जिन्होंने मेरे खिलाफ़ बगावत की थी।
उनके कीड़े कभी मेरेंगे नहीं। वहाँ की आग
बुझेगी नहीं। वे पूरी दुनिया के लोगों के लिए
नफ़रत का कारण होंगे।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com